
ईश्वरीय
खजानों की
खजांची
दादी ईशु जी


ईश्वरीय
खजानों की
खजांची
दादी ईशु जी

प्रकाशकः प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307501

प्रतियाँः 2000
प्रथम संस्करणः 2022

मुद्रणः ओम् शान्ति प्रिंटिंग प्रेस,
ओम् शान्ति नगर, भारजा,
पिण्डवाड़ा सिरोही
राजस्थान

पुस्तक मिलने का पताः साहित्य विभाग
पाण्डव भवन, माउंट आबू- 307501
ज्ञानसरोवर, माउंट आबू - 307501
शान्तिवन, आबू रोड - 307510
राजस्थान, भारत

कॉपी राइटः © प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, माउंट आबू- 307501 राजस्थान, भारत।



श्रद्धेय दादी ईशु जी

अनुक्रमणिका

क्रम	अनुभव	पृष्ठ
01)	आशीर्वचन	6
02)	भूमिका	8
03)	जीवन परिचय	10
04)	श्लोक	20
05)	सारे विश्व में ऐसा कोई विश्वासपात्र नहीं देखा	24
06)	साकार बाबा-मम्मा की मनीप्लांट दादी ईशु जी	26
07)	ईशु दादी मौन की शक्ति की प्रतिमूर्ति थी	30
08)	ईशु जिनका नाम	33
09)	अंतर्मुखता और एकाग्रता की शक्ति से भरपूर ईशु दादी	34
10)	दादी का वरदान फलीभूत होते देखा	38
11)	यज्ञ के आदि रत्नों में से विशेष रत्न दादी ईशु जी	50
12)	एकनामी और इकोनॉमी की अवतार थीं	54
13)	ईशु दादी के पास सम्पत्ति और सुमति दोनों खजाने थे	56
14)	दादी जी यज्ञ की शान थीं	60
15)	दादी ईशु जी ने यज्ञ रक्षक बन यज्ञ की संभाल की	64
16)	दादी ईशु जी रियल गोल्ड थीं	70
17)	दादी जी की विशेषताएं बिल्कुल अनोखी थी	74
18)	ईशु दादी बापदादा समान गुणों को धारण करने वाली शिवशक्ति थीं	76
19)	आध्यात्मिकता का जीता जागता स्वरूप थीं दादी ईशु जी	80
20)	यज्ञ की महालक्ष्मी दादी ईशु जी	84
21)	दादी में दिखते थे साकार बाबा	92
22)	दादी जी के रोम-रोम में बेहद का वैरागीपन भरा हुआ था	96
23)	ईशु दादी जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था	100
24)	सरल व्यक्तित्व, जिम्मेवारी के प्रति सतर्क दादी ईशु जी	104
25)	उजाले उनकी यादों के...	108
26)	ईशु दादी ईश्वर के साथ रहीं	110
27)	दादी जी में फुलस्टॉप लगाने की शक्ति बेमिसाल थी	112
28)	ईशु दादी मन से सदा मधुबन में रहती थीं	116
29)	दादी जी का साथ मानों फरिश्ते का साथ	120
30)	धन की सेवा में दादी जी से मिला सुंदर मार्गदर्शन	122
31)	सहनशक्ति की अवतार दादी ईशु जी	126
32)	दादी जी कभी भी बीमारी से प्रभावित नहीं हुई	130
33)	दादी ईशु जी का इंटरव्यू आज भी बहुत प्रेरणा दे रहा है	140

अनुक्रमणिका

क्रम	अनुभव	पृष्ठ
34)	ईशु दादी की याददाश्त बेमिसाल थी	142
35)	सबको अपनेपन की, बहुत प्यार की भासना देती थीं	150
36)	दादी जी ने कर्म द्वारा दी शिक्षा	154
37)	ईशु दादी जी बड़ी ही गम्भीरमूर्त, आज्ञाकारी थीं	156
38)	दादी जी नम्रता की दिव्य मूर्त थीं	158
39)	दादी जी यज्ञ के लिए जी जान से सोचते थे	162
40)	ईमानदार, वफादार, कर्तव्यपरायण दादी ईशु जी	166
41)	कोषाधिकारी दादी ईशु जी	170
42)	दादी का पहला नंबर का गुण असोचता था	174
43)	दादियों का आपसी प्यार बहुत प्रेरणा देता है	179
44)	न्यारी-प्यारी दादी ईशु जी	180
45)	दादी जी वरदानीमूर्त थीं	182
46)	सच्चाई का दर्पण दादी ईशु जी	184
47)	महान व्यक्तित्व अमर बना गया दादी ईशु जी को	188
48)	दादी अष्ट रत्नों में से एक गुप्त रत्न थी	194
49)	दादी जी हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लेती थीं	196
50)	दादी ईशु जी यज्ञ का आधार स्तंभ थी	198
51)	सर्व को बेदाग बनाने वाली दादी ईशु थीं सच्ची कोहिनूर	202
52)	दादी ईशु जी सबको संतुष्ट करतीं थीं	204
53)	निरहंकारी, सदा मुस्कराती, ममता की मूरत दादी ईशु जी	206
54)	आज भी दादी जी अपनी उपस्थिति महसूस कराती हैं	210
55)	दादी ईशु जी छोटे-बड़े सभी पर प्यार लुटाती थीं	212
56)	तपस्या उनकी दृष्टि, वृत्ति, बोल, वाइब्रेशन में समाई हुई थी	216
57)	सागर को हप करने वाली ज्ञान-बुलबुल दादी ईशु जी	218
58)	साकार बाबा सदा ही दादी की नज़रों में समाए रहते थे	222
59)	दादी जी की छवि एक अविस्मरणीय छवि है	224
60)	दादी जी की प्यार भरी दृष्टि और टोली	226
61)	निर्माणचित्त और रमणीक मेरी दादी जी	228
62)	दादी दादी ईशु जी का मनपसंद गीत	233
63)	दादी जी के संग, विभिन्न त्यौहार मनाने का उमंग	234
64)	ईशु दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा के वरदानी महावाक्य	238
65)	न्यूयॉर्क में मोहिनी दीदी जी द्वारा ईशु दादी जी के प्रति लगाया गया भोग का दिव्य संदेश	242
66)	ऐसी थीं अपनी ईशु दादी	250
67)	ईश्वर की समीप साथी!!	252



आशीर्वचन



राजयोगिनी
दादी रतनमोहिनी जी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हम दादी ईशु को शुरू से देखती आई, जब से यज्ञ शुरू हुआ है तब से हम भी हैं और दादी भी हैं। शुरू से ही बाबा के साथ रहने का, बाबा के साथ यज्ञ सेवा करने का पार्ट दादी का रहा है।

सन् 1936 में सिंध-हैदराबाद में जब ओम मंडली की शुरुआत हुई तो लगनशील आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैंपल बन कर रही। वे सरलता और स्नेह की मूर्त थी।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आई पर दादी ईशु को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा, कभी भी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा।

जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म उनको सदा कुशल ही देखा।



भूमिका

यज्ञ की आदि अनमोल रत्नों में से दादी ईशु जी स्वयं रत्नागर परमात्मा के महान कार्य के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाली एक अनमोल विशिष्ट रतन थीं। सदा गुप्त, गम्भीर, शांतचित्त, विश्वसनीयता के साथ - साथ आज्ञाकारी और चेहरे पर दिव्य मुस्कान लिए वे जैसे कि एक दिव्य फरिश्ता थीं, एक ऐसा दिव्य फरिश्ता जिसका संपूर्ण जीवन ही ईश्वरीय सेवाओं को अथक रूप से करने के लिए न्योछावर था। जिनमें धरती सा धीरज था तो विचारों में आसमां सी ऊंचाई भी थी। वे सादगी व नम्रता की दिव्य मूर्त थीं।

जब - जब यज्ञ में इकोनॉमी, सहनशीलता, ईमानदारी, वफादारी की मिसाल दी जाती है तो दादी ईशु जी का नाम बहुत ही आदर भाव से लिया जाता है। ऐसे ''ईश्वरीय खजानों की खजांची'' दादी ईशु जी को सदभावना पूर्ण, प्रेम पूर्ण, स्नेहांजलि है जिनका संपूर्ण जीवन ईश्वर के स्थूल और ज्ञान के खजानों को संभालने के लिए समर्पित रहा। वह इतनी विश्वास की पात्र थीं कि स्वयं खुदा ने उन्हें अपने स्व रचित यज्ञ के ट्रस्ट का 'कोषाध्यक्ष' बनाया ।

यह पुस्तिका दादी जी का, बाबा के साथ सदा अविस्मरणीय अथक हो सेवा करने की यात्रा और दादी जी के साथ वरिष्ठों के प्रेरणादाई अनुभवों को दर्शाती है, जो बाबा और यज्ञ के प्रति प्यार को पाठक के दिलों में जगाने के लिए प्रेरित करता है। क्योंकि दादी जी ने पूरी दुनिया के आगे एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है जिनके त्याग और तपस्या की गाथा पूरा विश्व सदैव गाता रहेगा। जिन्हें सदा निमित्त और निर्मान भाव, ट्रस्टीपन और अथक सेवाधारी के रूप में याद किया जाएगा ।

दादी ईशु जी की यह पहली पुस्तिका इस दृष्टि से लिखी गई है, कि यह पुस्तिका लाखों लोगों के हृदय को बाबा के साथ जोड़ने की एक अहम भूमिका निभाएगी और प्रत्येक पाठक को अपने मूल स्वरूप और दिव्य गुणों का अनुभव कराते हुए उन्हें दादी ईशु जी की तरह यज्ञ में पूरी निष्ठा के साथ सेवा करने के लिए यह पुस्तिका प्रेरणादाई बनेगी ।

- बीके कविता बहन



जीवन परिचय

यज्ञ इतिहास और भगवद चरित्रों को समीपता से देखने वाली आदरणीय दादी ईशु जी का जन्म सिंध, हैदराबाद में 1 मई सन् 1928 को हुआ। पिता 'दयालदास थडानी' एवं माता 'कमला' ने उन्हें नाम दिया 'ईश्वरीय'। सदा शांत-चित्त, धीर-गंभीर स्वभाव के अनुरूप शिव पिता ने अलौकिक नाम दिया 'पूर्णशांतामणि'। ब्रह्मा बाबा लाड से 'ईशु' कहते थे। दादी का घर बाबा के घर के बिल्कुल नज़दीक ही था, एक बार दादी जी जब घर से बाहर गए तो उन्होंने ब्रह्मा बाबा को अपने सामने देखा, उन्हें देखते ही दादी जी को साक्षात्कार हुआ कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है बल्कि एक दैवीय हस्ती, महान विभूति, महापुरुष हैं, जिनमें दिव्य शक्तियां समाई हैं और फिर उसी समय दादी जी ने बाबा का हाथ पकड़ा और उनके साथ सत्संग चली आईं। उसके बाद दादी जी के माता-पिता जब सत्संग पहुंचे तो उनको भी बाबा से दिव्यता का अनुभव हुआ और फिर दादी जी से 1 वर्ष छोटी बहन लच्छू दादी व चार भाईयों सहित पूरा परिवार समर्पित हो गया। बाबा के निःस्वार्थ प्यार, दुलार ने दादी जी को बाबा का स्नेही बना दिया। 7 वर्षीय दादी जी बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग में रूहानी और जिस्मानी पढ़ाई पढ़ने लगीं, जहां उन्हें हिंदी, सिंधी और अंग्रेजी भाषा सिखाई जाती और हिसाब-किताब भी पढ़ाया जाता था। इसके साथ-साथ सभी को ईश्वरीय ज्ञान भी दिया जाता था।

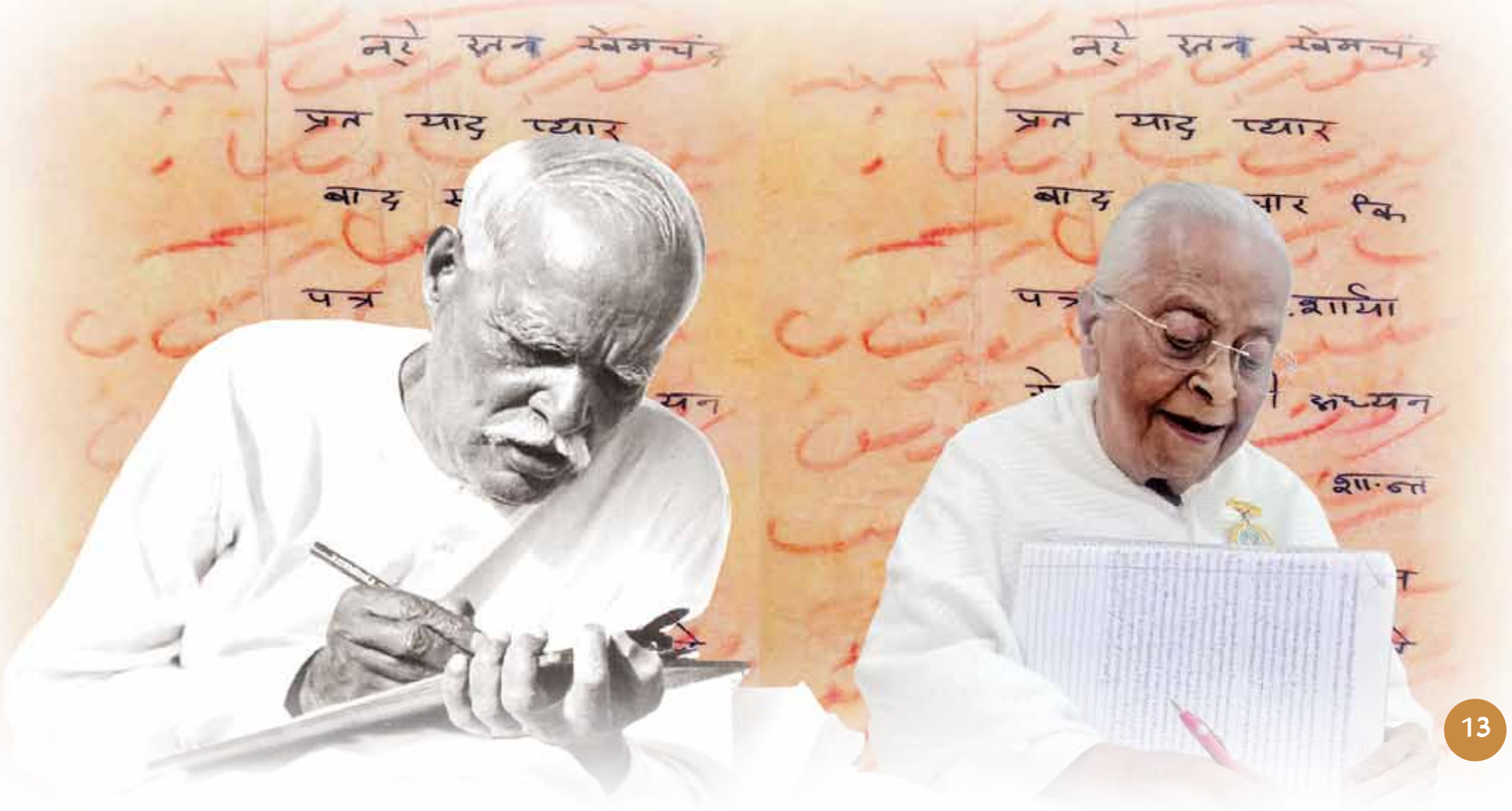
आज्ञाकारी, वफादार और ईमानदारी की मिसाल

शांत स्वभावी ईशु दादी जी की सच्चाई-ईमानदारी-वफादारी के संस्कार देख, दादी जी को बाबा यज्ञ भंडारी की चाबियां सौंपने लगे। यज्ञ के आदि से ही बाबा की राइट हैंड बन वे यज्ञ का स्थूल खज़ाना व आर्थिक कारोबार संभालने के निमित्त बनीं। यज्ञ का हिसाब-किताब वे बहुत ही एक्यूरेट रीति से देखती थीं। बाबा-मम्मा प्यार से उन्हें 'मनी प्लांट' भी कहते थे।



परमात्म टचिंग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की

ब्रह्मा बाबा के संग विशेष पार्ट बजाने वाली दादी जी सदा बाबा के संग यज्ञ के इस विशाल कारोबार को संभालने के निमित्त बनी। उसमें भी विशेष शिव परमात्मा के ब्रह्मा मुख द्वारा उच्चारण किए हुए गीता ज्ञान को शॉर्ट हैंड में बहुत सुंदर रीति से कागज़ पर लिखतीं थीं, क्योंकि बाबा जब मुरली चलाते थे तो स्पीड बहुत फास्ट होती थी, जिससे कोई लिख नहीं पाता था, इसलिए दादी जी ने परमात्मा की टचिंग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की। दादी जी बाबा का हल्का सा भी इशारा कैच कर लेती थीं और उसे पूरी तरह फॉलो करती थीं, इसलिए बाबा सदा दादी जी की महिमा करते थे।



बेगरी पार्ट के अनुभव

14 साल योग तपस्या करने के पश्चात दादी जी बाबा-मम्मा एवं अन्य दादियों के संग आबू पर्वत पहुंचीं और मधुबन की पावन भूमि पर अपनी अथक सेवाएं दी। यहां आने के बाद एक बहुत बड़ा पेपर बेगरी पार्ट का भी आया।

दादी जी ने बताया- "मुझे याद आता है हम जब छोटी थीं, तभी से मैं बाबा के पास ही रही। हम सभी सदा बाबा की याद में खुशी में नाचते रहते थे। इसी बीच में हमारा बेगरी पार्ट आया। बेगरी पार्ट भी इतना कि समझो हमारे विश्व किशोर भाऊ के पास 10 आने भी नहीं होते थे। पहले तो आने ही चलते थे ना, तो हम चार बहनें थीं, जो बीमार थे। (भाऊ ने) उसने हमको एक गोली दी तो हमने उस एक गोली के चार टुकड़े कर बांट लिए और हम सभी ठीक हो गए। विश्व किशोर को बहुत तरस पड़ता था कि हमारी बहनें अच्छे से रहें, फिर हम कहते थे कि हम तो बहुत खुश हैं।

बेगरी पार्ट के समय घर में अनाज आदि नहीं होते थे और वहां 12 बजे पोस्ट आती थी ट्रेन से। फिर भोली दादी और मैं (ईशु दादी) बाबा से कहती थीं, ''बाबा आज हम क्या बनाएं ''तो बाबा कहते थे ''बच्ची पोस्ट आवे फिर हम आपको बताएंगे कि क्या बनाओ।"पोस्ट आती थी, उसे खोलते थे तो कोई न कोई गोपिका का चेक (Cheque) जरूर होता था। फिर उस पैसे से कुछ न कुछ मंगाते थे और खुशी में खाते थे। ऐसा कभी नहीं होता था कि हम ये सोचें कि, यहां कैसे हम रहेंगे, या कैसे क्या होगा। हम बाबा के साथ





थे ना, तो उसकी खुशी हमको बहुत रहती थी। समझो हमारा पांडव भवन और पीस पार्क कितना दूर है। परंतु हम (बच्चे) बाबा के साथ पहाड़ियों से चढ़-चढ़ कर पीस पार्क पहुंच जाते थे, फिर वहां पर चेरी-केरी खाते तो हमारा नाश्ता हो जाता था। हम ये नहीं सोचते थे कि ये कैसे होगा। हम खुशी में नाचते रहते थे। जब भी हम आबू में आए, तो आबू में एक भी गाड़ी नहीं थी और आबू तो जंगल था। इतने मकान, इतनी दुकानें वगैरह नहीं थीं। फिर हम पैदल उतरते थे (माउंट आबू से आबूरोड तक) और फिर रात को आकर एक स्कूल का हॉल था, वहां सो जाते थे। फिर सुबह उठकर के ऊपर (माउंट आबू) चलते थे।

उन दिनों आबू में कोई गाड़ी तो थी नहीं। पेठा वगैरह बड़ा होता है ना, हम माथे पर रख कर चढ़ते थे, परंतु खुशी में नाचते रहते थे। कभी ये नहीं सोचा कि ये तो मज़दूरों का काम है, हम कैसे करेंगे। फिर हम पैदल ही चढ़ते आबू रोड से माउंट आबू, पांडव भवन तक। बाबा कहता, ''जो गिरेगा वो फेल होगा।" फिर एक बार एक बहन गिर गई थी, तो उसको जैसे बच्चे को कपड़े में उठा कर चलते हैं तो ऐसे चले। फिर मम्मा आती थीं, जहां बस स्टैंड है, वहां तक मम्मा आती थी, सबका गुलाबाशी से स्वागत करती थीं। खुशी इतनी कि बात मत पूछो। अभी तो आप लोग हो ही नहीं सकते हैं। अभी तो आप कहेंगे हम को ये नहीं मिलता है, ये नहीं मिलता है। उस समय बाबा साथ था ना, उसी खुशी में सब कुछ भूल जाते थे और उसी खुशी में हमारा सारा लौकिक परिवार यज्ञ में आ गया। खुशी में हम हमेशा रहे, भले कितना भी बेगरी पार्ट था'।

बाबा ने ईशु दादी जी को दिया अनमोल उपहार

बाबा ने दादी जी को मधुबन पाण्डव भवन में बहुत ही सुंदर ईश्वरीय सौगात दी। एक बार बाबा ने कहा ''हमारी योग-तपस्या में ये कीमती वस्तुएं बाधा न बने इसलिए इन कीमती वस्तुओं को यज्ञ में स्वाहा कर दो ''तब सभी दीदीयों ने अपनी कीमती वस्तुएं जैसे अंगूठी, माला, सोने-चांदी के बर्तन आदि यज्ञ में दे दी, तभी बाबा को उनमें एक घड़ी दिखी, फिर बाबा ने सभी को घड़ी दिखाते हुए कहा, "ये घड़ी मैं ईशु बच्ची को देता हूं और मैं ईशु बच्ची से कभी भी टाइम पूछ लूंगा। तब दादी जी ने कहा-" जी बाबा, मैं ये घड़ी हर पल अपने साथ रखूंगी मरते दम तक।"



गुणमूर्त दादी ईशु जी

दादी जी गुणमूर्त और वरदानी थीं, वैसे तो दादी जी का मूल गुण गंभीरता का था परंतु हर्षितमुखता का गुण भी दादी जी में प्रत्यक्ष देखने को मिलता था। दादी जी खुश रहकर औरों को भी खुशी बाँटती थीं। वे रूहानी पढ़ाई में बेस्ट स्टूडेंट, पवित्रता, ज्ञानयुक्त बुद्धि, सर्व की सच्ची हितैषी, ड्रामा के राज को जानने वाली, सदा संतुष्ट, अथक सेवाधारी और महान कर्मयोगी, बीती सो बीती करने वाली, सच्ची दिल वाली और गुणग्राही थीं और ये सभी गुण स्वतः ही दादी जी को खुशी की खुमारी में रखते थे।





दादी जी के स्लोगन

1. सदा खुश रहो। कभी भी रोना नहीं।
2. बाबा ने हमें बोला है, सदा खुश रहो। कभी भी मुरझाना नहीं है।
3. हमारे जैसा खुशनसीब दुनिया में कोई नहीं होगा।

दादी प्रकाशमणि जी के संग ईश्वरीय सेवा में तत्पर

18 जनवरी सन् 1969 को ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने से पूर्व अपनी सारी शक्तियां और यज्ञ का कारोबार दादी प्रकाशमणि जी के हाथ विल कर दिया, परंतु यज्ञ कारोबार को अधिक न जानने के कारण संदेशी बच्चियों को बाबा के पास भेजा गया, उस समय बाबा ने ईशु दादी की तरफ संकेत देते हुए कहा कि 'इस बच्ची को यज्ञ के सारे कारोबार का बाबा ने बताकर रखा है' और उसी समय निर्देश दिया कि प्रकाशमणि दादी, ईशु दादी जी को सदैव अपने साथ सेवा में रखें। उसके बाद से प्रकाशमणि दादी जी ने ईशु दादी को देश-विदेश की हर सेवाओं में सदा अपने अंग-संग रखा।

यज्ञ में जो भी भंडारी आती, प्रकाशमणि दादी जी उसे तुरंत ईशु दादी जी को सौंप देती। सन् 2005 तक मधुबन पांडव भवन में दादी जी ने अपनी अथक सेवाएं दी फिर उसके पश्चात् प्रकाशमणि दादी जी के साथ वे शांतिवन में आए और सेवाओं को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया। एक तरफ जहां दादी जी ने यज्ञ की कोषाध्यक्ष बन कार्यभार संभाला तो वहीं दूसरी ओर क्लास के माध्यम से सभी ब्रह्मावत्सों को उमंग-उत्साह से वे भरपूर कर देती, दादी जी ने अंत तक देश-विदेश के अनेक स्थानों पर जाकर ईश्वरीय सेवाएं की और सभी की वरदानी बोल और खुशियों से झोली भरी।

ऐसी हमारी सभी की प्यारी, बाबा की लाडली दादी ईशु जी अपना पुराना चोला त्याग, फरिश्ता बनकर 6 मई 2021 बाबा के पास वतन में उड़ चलीं' आज भले ही दादी जी साकार में हमारे सम्मुख नहीं हैं परंतु अव्यक्त फरिश्तामूर्त दादी जी सूक्ष्म रूप से आज भी हम पर खुशियों का खज़ाना लुटाती रहती हैं, उनके द्वारा दी हुई शिक्षाएं, परमात्म प्रेम और पालना सदा सूक्ष्म रूप में हमारे साथ है।



श्लोक

नमस्तेस्तु महामाये, श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते, महालक्ष्मी नमोस्तुते।।

अर्थात् – श्री पीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये तुम्हें नमस्कार है।
हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मी तुम्हें प्रणाम है।

ज्ञानयुक्त विश्लेषण – स्वयं भाग्य विधाता द्वारा पालना प्राप्त, ब्राह्मण परिवार और दादियों की अति प्रिय, हाथ में ज्ञान शंख (ज्ञान मुरली) स्वदर्शन चक्रधारी, ऐसी दादी जी को हमारा प्रणाम है।

सर्वज्ञे, सर्ववरदे, सर्वदुष्ट भयंकरी ।
सर्वदुःखहरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।।

अर्थात् – सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भयभीत करने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली, हे देवी महालक्ष्मी तुम्हें नमस्कार है।

ज्ञान युक्त विश्लेषण – यज्ञ के विषय में, यज्ञ वत्सों का एक-एक राज जानने वाली, जानकर समाने वाली चित्र गुप्त दादी जी, सभी को वरदान देने वाली, खुशी के पंख लगाने वाली, यज्ञ की महालक्ष्मी, बाबा की मनी प्लांट दादी जी को शत्-शत् नमन।

आद्यंत रहिते देवी, आद्य शक्ति महेश्वरी।
योगजे योग संभूते, महालक्ष्मी नमोस्तुते।।

अर्थात् – हे देवी, हे आदि अंत रहित आदि शक्ति। हे माहेश्वरी, हे योग से प्रकट हुई भगवती महालक्ष्मी।

ज्ञान युक्त विश्लेषण – ज्ञान-चक्षु से यज्ञ की महालक्ष्मी दादी जी, आदि पिता की आदि रचना जो यज्ञ की शुरुआत से यज्ञ में प्रकट हुई हैं। जो सदा गुप्त रहीं और गुप्त होते हुए भी बाबा की कलम बनकर हमारे समक्ष प्रत्यक्ष हैं और सदा रहेंगी। उनके द्वारा लिखे हुए परमात्म पत्र, ज्ञान मुरलियाँ इस कलयुग की रात्रि में ज्ञान सूर्य को प्रकट करती हैं और वो स्वयं भी आकाश में ध्रुव तारे समान सदैव हमारे दिल के गगन में विराजमान हैं और सदा रहेंगी। इसलिए महालक्ष्मी के गायन में उन्हें आदि-अंतर हित, आदि शक्ति, योग से प्रकट हुई भगवती कहा गया है।

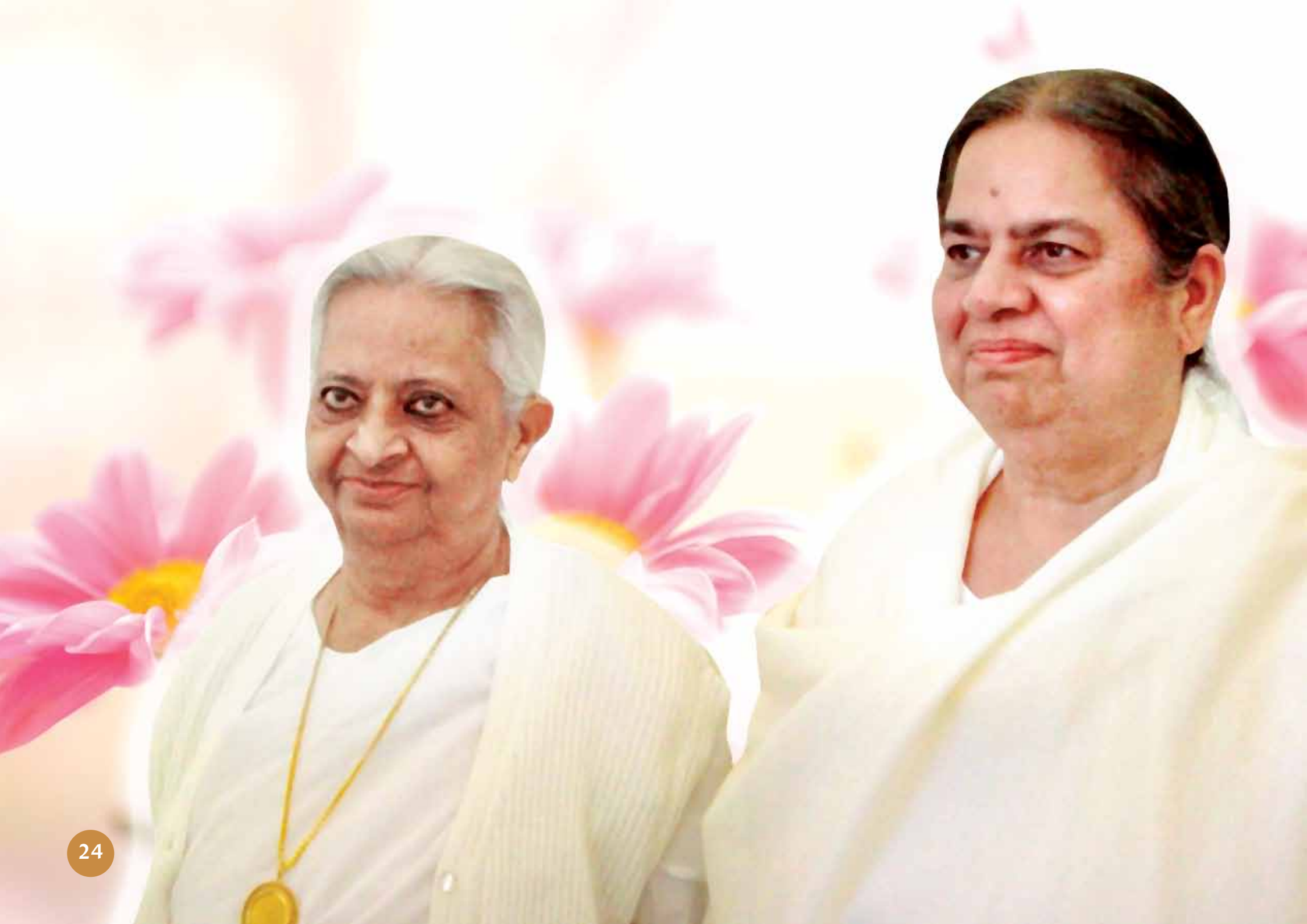












सारे विश्व में ऐसा कोई विश्वासपात्र नहीं देखा



राजयोगिनी
बी.के. मोहिनी दीदी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़

ईश्वरीय परिवार में एक-एक आत्मा विशेष है परंतु कुछ आत्माएँ बहुत विशेष होती हैं, ईशु दादी उसमें से एक थी। भगवान के भंडारे में जो भी धन आया उसको वर्षों तक संभाला एक ट्रस्टी की तरह। कभी भी धन में उनकी वृत्ति नहीं गई और कभी भी उन्होंने भेदभाव नहीं दिखाया कि जो बहुत ज्यादा देते हैं उनसे बहुत प्यार से बात करे और जो कम देते हैं तो कम सम्मान दे। जो जितना भी गुप्त सहयोग बाबा को देते थे, उतनी ही गुप्त रहकर के भंडारे को भरपूर रखती थी।

अंत तक भावना से बाबा का यज्ञ संभालती रही। हमने सारे विश्व में ऐसा कोई भी नहीं देखा जो इतने वर्ष तक ऐसा कार्य करे और इतना विश्वासपात्र भी हो। दादी जी इतने विश्वासपात्र थे जो कहीं भी, कोई भी बात नहीं दोहराते थे। भगवान ने अपने कार्य के लिए, अपनी प्रकार से ही इस तरह की आत्माओं को तैयार किया। दादी बहुत संतुष्ट रहती थी, बहुत शांत और बहुत मीठा स्वभाव था। मेरे को उनके प्रति बहुत सम्मान है। उनका भी बहुत प्यार था मुझसे। मैं हमेशा अपनी ईशु दादी जी को दिल में समाए रहती हूँ और बहुत ही श्रद्धा भावना रखती हूं। हम सभी ईशु दादी जी को बहुत-बहुत नमन करते हैं।

भगवान के भंडारे में जो भी धन आता, उसको वर्षों तक एक ट्रस्टी की तरह संभाला



साकार बाबा-मम्मा की मनीप्लांट दादी ईशु जी



राजयोगी बी.के. निर्वैर
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

जब 62 साल पहले मैं पांडव भवन में आया था तभी से ईशु दादी को जानता हूं। ईशु दादी अपने टेबल पर बैठती, मम्मा पास में बैठतीं, साकार बाबा भी अपनी नेट वाली कुर्सी पर बैठते और ईशु दादी बाबा को चारों तरफ से आए हुए याद-प्यार के पत्र, पुरुषार्थ के पत्र सुनाती फिर बाबा तुरंत जवाब लिखवाते थे। बाबा एक घंटे में कम से कम 16 पत्र सिंधी में लिखते थे और ईशु दादी फिर उसी पत्र पर हिंदी में लिखकर के, उसी दिन पोस्ट कर देते थे। साकार बाबा और मम्मा ईशु दादी को मनीप्लांट भी कहते रहे और हमारी मोहिनी बहन भी मनीप्लांट कहती थी।

सन् 1963, 1964 की बात है, सर्दियों के दिनों में आबू से बाबा बॉम्बे गए और सेक्रेटेरिएट के पास में बाबा के लिए टेंपरेरी तीन महीने के लिए मकान लिया गया था। विश्वकिशोर दादा और शायद चंद्रहास दादा भी बाबा की संभाल के लिए साथ में आ गए लेकिन बाबा को फील हो रहा था कि ईशु दादी वहां मधुबन में अकेली है, तो बाबा ने पत्र लिखा और विश्वरतन दादा को खास कहा कि बच्ची को अपने साथ लेकर के आओ, वो बाबा के बिना बिल्कुल सूख जाएगी। इतना प्यार था दादी का साकार बाबा के साथ।

इसके साथ-साथ, मधुबन यज्ञ के निमित्त भाई-बहनें जो भी सहयोग देते थे या मनीऑर्डर से भेजते थे, उसका एक-एक पाई का हिसाब दादी ईशु रखती थी। माउंट आबू के शुरू के दिनों की बात है कि भंडारी में केवल आठ आने बाकी थे तो ईशु दादी ने बाबा को बताया कि बाबा आज भंडारी में केवल

दादी जी का जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श ब्रह्माकुमारी के रूप में याद किया जायेगा


ISHU DADIJI
Happy
ISHU
Didi

आठ आने बाकी हैं, आटा, चावल, नमक, दाल आदि सब खरीदने हैं। बाबा ने कहा, हां बच्ची, ठीक है, थोड़ा ठहर जाओ। सुबह को 10:30 बजे पोस्ट आती थी और पोस्ट में शील इंदिरा दादी की भाभी कमला बहन ने, जो बॉम्बे में रहती थी, मनीऑर्डर भेजा था। वो बेगरी पार्ट का लास्ट डे था और उसके बाद से बाबा की छत्रछाया में यज्ञ धीरे-धीरे ऊंचाई की तरफ गया। यज्ञ की सारी हिस्ट्री ईशु दादी के पास थी, दादी बड़ी गंभीर और सदा मुस्कुराने वाली थी। अंतिम दिनों में तो उनका स्वरूप बिल्कुल बच्चों जैसा था, इतना मिठास, इतना निस्वार्थ भाव का प्यार, कहीं भी हम मिलेंगे तो फट से हाथ पकड़ लेगी और हाथ पकड़ के जैसे बच्चों को झूला झूलाते हैं ऐसे करती थी। काश कि हम उनके साथ कुछ और दिन बिताते।

आप सब जानते हैं कि 7 वर्ष की आयु से वो यज्ञ में आई थी और अभी 95 वर्ष की उम्र में उन्होंने शरीर छोड़ा। जब उनकी तबीयत ऊपर-नीचे होने लगी तो कविता बहन और खगेंद्र भाई और दूसरे भी नर्सिंग स्टाफ भाई-बहनों ने दादी जी को ऐसे संभाला जैसे कोई फूलों की संभाल करता है। पिछले कुछ वर्षों से दादी को सेवाओं के लिए किसी न किसी जोन की यात्रा भी कराते रहे और उनके जो-जो अनुभव थे, उसके द्वारा भी लोगों को बहुत लाभ पहुंचा।

हम कविता बहन, खगेंद्र भाई को बहुत-बहुत दिल से दुआएं देते हैं कि आपने दादी को बहुत प्यार से संभाला। दादी जी के अव्यक्त आरोहण पर हम यही कहेंगे कि दादी जी का जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श ब्रह्माकुमारी के रूप में याद किया जाएगा। सारे ईश्वरीय परिवार के भाई-बहनों के साथ उनका जिगरी प्यार था। अकाउंट डिपार्टमेंट के गोकुल भाई और गोलक भाई और उनके साथ में मिली बहन और दूसरी बहनें, वो सभी उनको बहुत प्यार से याद करते रहेंगे क्योंकि दादी जी हर रोज अकाउंट डिपार्टमेंट में जाती रहती थीं और जो भी उनके पास कोई यज्ञ के निमित्त कुछ देकर जाते थे तो वो अपने पास नहीं रखती थीं। उनके अंदर जो नम्रता देखी और प्रेम की पुतली जैसे कहें वो भी उनको देखा। पूर्णशांता के नाम से तो शायद ही उनको कोई जानता हो पर ईशु दादी को हम बहुत दिल से दुआएं देते हैं। बापदादा के पास वतन में पहुंच गई तो बापदादा अवश्य उनके द्वारा अनेक प्रकार की और सेवाएं करवाएंगे। दिल से उस आत्मा के प्रति बहुत-बहुत प्यार भरी श्रद्धांजलि।



ईशु दादी मौन की शक्ति की प्रतिमूर्ति थी



राजयोगिनी
बी.के. जयंती दीदी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़

जब मैं ईशु दादी जी को याद करती हूं तो मेरे सामने एक सीन आती है। बाबा, जहां खिड़की है वहां पांडव भवन में अपने ऑफिस में कुर्सी पर बैठे हैं और उनके बाजू में जो डेस्क है, ईशु दादी वहां बैठी है।

अगस्त 1966 में जब मैं पहली बार उनसे आबू में मिली तो मुझे आश्चर्य हुआ कि वह कितनी छोटी आयु की हैं और पारंपरिक साड़ी नहीं बल्कि सलवार-कमीज़ पहने हुए हैं। उनका चेहरा भी बेहद यंग दिख रहा था। ईशु दादी मौन की शक्ति की प्रतिमूर्ति थी, पूरी तरह से आज्ञाकारी और दुनिया के साथ संचार के मामले में बाबा की राइट हैंड थी। वह चुपचाप, लगन से काम करतीं थीं, पूरी तरह भरोसेमंद थीं। ईशु दादी ने कोषाध्यक्ष की भूमिका भी निभाई। उन्होंने छोटे या बड़े किसी भी लेन-देन के बारे में पूरी तरह से चुप्पी बनाए रखी। ईशु दादी की एक और भूमिका थी कि जो बाबा बोलते थे, उस मुरली को दादी लिखते थे। सन् 1964 के बाद से एक टेप में मुरली की रिकॉर्डिंग की जाती थी लेकिन ईशु दादी के नोट्स में इतनी स्पष्टता थी कि दुनिया भर में मुरली भेजने के लिए जिम्मेदार सेवाधारी, रिकॉर्डिंग के बजाय उनके नोट्स का उपयोग करते थे।

दोपहर को हम अक्सर पांडव भवन में, जहां कार्यालय है वहाँ दादी को देखते थे। वे चुपचाप आंगन में वॉक कर रहे होते और पांडव भवन के चारों ओर घूम रहे होते थे। यज्ञ में जो कुछ हो रहा है, बाबा को बताने के लिए वे बाबा की आंख और कान थीं। खूबसूरत बात यह है कि बाबा के अव्यक्त होने

ईशु दादी ने संगम में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते हुए आत्माओं को सुख दिया

के बाद ईशु दादी ने, दीदी मनमोहिनी के मार्गदर्शन में और बाद में दादी प्रकाशमणि के मार्गदर्शन में और फिर दादी जानकी के मार्गदर्शन में इन सभी भूमिकाओं को जारी रखा। दादी की उपस्थिति साकार में बापदादा की उपस्थिति से लेकर वर्तमान क्षण तक की विरासत की एक आश्वस्त उपस्थिति थी।

आखरी कुछ वर्षों के दौरान, दादी जानकी, दादी ईशु को शांतिवन, पांडव भवन और ज्ञान सरोवर के विभिन्न विभागों में अपनी सभी छोटी यात्राओं में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते थे और उन्हें अपना प्यार, खुशी और यज्ञ की पुरानी मीठी यादों को सबके साथ साझा करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते थे। उसके बाद दादी जानकी अव्यक्त हो गए, ईशु दादी ने विभिन्न समूहों का दौरा करने और उनकी आध्यात्मिक रूप से पालना करने की यह भूमिका जारी रखी। ईशु दादी ने संगमयुग में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाये और हर पार्ट में अनेक आत्माओं को सुख दिया है।

ड्रामा में अपने अगले पार्ट में ईशु दादी अपना पुण्य का खाता, हम सबका प्यार और शुभ भावनाएं भी साथ लेकर गई हैं।

ईशु जिनका नाम

बी.के. सत्यनारायण
ज्ञान सरोवर

जिसे नहीं है मैं, मेरापन, मान-शान का ज्ञान
शान्त और गम्भीर आप अंतर्मुखता की खान
व्यर्थ बात में नहीं खोलती अपना मुख, जुबान
बाबा के अंग-संग रही है ईशु जिनका नाम

रहती न्यारी-प्यारी लेकर मधुर-मधुर मुस्कान
एक प्रभु से आप जोड़कर रखती अपनी तान
वित्तमंत्री आप, यज्ञ का रखती सारा ध्यान
बाबा के अंग-संग रही है ईशु जिनका नाम

फॉलो कर मम्मा - बाबा को आप बनी धनवान
सिम्पल, सेम्पल, इच्छाओं का दिखता नहीं रुझान
दादी जी संग विश्व भ्रमण कर दिया प्रभु पैगाम
बाबा के अंग-संग रही है ईशु जिनका नाम

सिंधी से हिन्दी बाबा के पत्र किए आसान
करती थी अनुवाद मुरली,तुम हो प्रत्यक्ष प्रमाण
रही निकटतम आप बाप के आदि रत्न महान
बाबा के अंग-संग रही है ईशु जिनका नाम

दृष्टि,टोली आप बांटती साथ-साथ वरदान
हंसी-खुशी में लाकर सबको, करती दूर थकान
चक्रवर्ती बन चक्र लगाती मधुबन के हर धाम
बाबा के अंग-संग रही है ईशु जिनका नाम




LOVE

अंतर्मुखता और एकाग्रता की शक्ति से भरपूर



राजयोगी बी.के. बृजमोहन
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

अन्य सभी दादियों की भेंट में ईशु दादी जी का पार्ट गुप्त रहा है और उनकी विशेषताएं भी एक प्रकार से गुप्त रही हैं। जैसे बाबा कहते हैं कि भृकुटि की कुटिया में रहो, अंतर्मुखी रहो, इधर-उधर का न सुनो, न देखो, न बोलो, तो यह विशेषता हम ईशु दादी में पाते थे। एकाग्रता की खास विशेषता के कारण वे मधुबन में ऑफिस इंचार्ज और यज्ञ की कैशियर (खजांची) बनी थी। दादी जी को जो सेवा दी जाती थी वे केवल उसी का ही ध्यान रखती थी, और इधर-उधर का उनको कोई सरोकार नहीं था। बाबा के सारे कारोबार का ज्ञान उनमें था लेकिन वे बिल्कुल चुप रहती थी। अगर किसी को उनसे काम होता तो बात करती, नहीं तो अंतर्मुखता की कुटिया में बैठ, एकाग्रता से सेवा में मगन रहती थी। हम समझ सकते हैं कि उनकी एकाग्रता की शक्ति नैचुरली कितनी रही होगी, जो कभी भी उन्होंने कोई संसार का समाचार नहीं पूछा। इस कारण से वे यज्ञ में ही रही और विचित्र सेवा करती रही ।

ईशु दादी बाबा की अति लाडली थी

बाबा ने अन्य सभी दादियों को ईश्वरीय सेवा पर भेजा मगर ईशु दादी जी बाबा के सदा अंग-संग रहीं। मुझे याद है कि एक संदेशी दादी होती थी और वो बाबा के बहुत गीत गाती थी। बाबा उनको दिलरुबा संदेशी कहा करता था। वह बाबा की अति प्रिय थी। हमारे सामने वो दृश्य आता है जब बाबा ने उनको सेवा पर भेजा था, मानो कि मछली को जल से निकाल दिया। लेकिन, बाबा जानते थे कि किसका भाग्य कैसे बनाना है। संदेशी दादी ओड़िशा के एक प्रांत में गई और वहां उन्होंने बहुत सेवाएं

जैसे बाबा कहते हैं कि भृकुटी की कुटिया में रहो, अंतर्मुखी रहो, तो यह विशेषता हम ईशु दादी में पाते थे

की। लेकिन ईशु दादी के लिए बाबा खुद भी कहते थे कि यह बच्ची अगर बाबा से अलग होगी तो सूख जाएगी। एक बार बाबा ने ईशु दादी को लखनऊ भेजा था मगर वहां जाकर दादी ने बाबा के गुण गाने, बाबा के गीत गाने शुरू कर दिए। ऐसा लगे कि जैसे उन्हें बहुत अजीब लग रहा है। दो दिन के बाद ही बाबा ने आनंद किशोर भाई को भेजा कि उसे वापस ले आओ और तब से ही ईशु दादी ने यज्ञ में रह करके ही यज्ञ की सेवा की। जिस कुर्सी पर बाबा बैठते थे, उसके साथ ही उनका टेबल था अर्थात् वो बाबा के इतना अंग-संग स्थूल में भी रही ।

मोतियों जैसी लिखाई

शुरू-शुरू में जब बाबा मुरली चलाते थे, तब टाइपराइटर तो नहीं होते थे, ईशु दादी बाबा की मुरली के नोट्स हाथ से लिखा करती थी। उनकी लिखाई मोतियों जैसी इतनी साफ और स्पष्ट होती थी कि हम पूछते थे, ''ईशु दादी, बाबा इतनी तीव्रगति से बोलते हैं, कोई लफ्ज मिस किए बिना आप कैसे नोट्स लेती हैं? "तो ईशु दादी कहती थी कि मैंने अपना शॉर्टहैंड बनाया हुआ है। जिस समय बाबा मुरली चलाते थे, उस समय तो शॉर्टहैंड में लिखती मगर बाद में विस्तार करके लिखती थी। उन दिनों लिथोग्राफ होता था जैसे कि अब फोटोकॉपी है। मुरलियां लिथो कराकर के भेजी जाती थी।

भगवान के पत्रों में दादी की विशेष भागीदारी

बाबा के पास जो भी बच्चे पत्र लिखते थे या यज्ञ में जो भी पोस्ट या डाक आती, वह सब ईशु बहन के पास ही आती थी। यह एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी थी। आजकल भी आप देखेंगे कि जो प्राइम मिनिस्टर का पर्सनल असिस्टेंट (निजी सहायक) होता है, वो बहुत ही समझदार व्यक्ति होता है। उसके पास बहुत सारी डाक आती है और वह उसमें से प्राथमिकता के आधार पर चयन करता है कि कौन सी बहुत जरूरी है और किसका जल्दी जवाब दिलवाना है। बिल्कुल वैसी ही सेवा ईशु दादी सारे यज्ञ के लिए करती थी। डाक एवं मनीऑर्डर दादी के पास ही आते थे और फिर वह उन्हें खोल करके देखती कि कौन से पत्र का बाबा को बताना है। बाबा उन पत्रों के उत्तर एक बहुत ही सॉफ्ट लाल रंग की पेंसिल से देते थे। छोटे-छोटे राइटिंग पैड पर, पन्ने के आगे एवं पीछे की तरफ अपने प्यार भरे शब्दों से, बाबा बच्चों को पत्र का जवाब लिखते और अगर किसी बच्चे का ज्यादा समाचार होता तो उस प्रकार के दो या अधिक से अधिक तीन पन्नों पर जवाब लिखकर भेजते। बाबा मोटे-मोटे लाल अक्षरों में पत्र लिखते थे और एक पन्ने पर मुश्किल से 10 शब्द आते थे। बाबा सिंधी भाषा में पत्र लिखते और उनको ईशु दादी नीली स्याही से

हिंदी में ट्रांसलेट (अनुवाद) करती। आप सोच सकते हैं कि भगवान को जो लेटर आ रहे हैं, 'शिव बाबा केयर ऑफ़ ब्रह्मा बाबा' और उनके जो उत्तर जा रहे हैं, उनमें ईशु बहन की कितनी ज्यादा भागीदारी थी।

ड्रामा में गुप्त पार्ट

दादी जी यज्ञ के बारे में सब कुछ जानते हुए भी बहुत कॉन्फिडेंशियल (गुप्त) थी जैसे कि कहते हैं, दाएं हाथ से करो तो बाएं हाथ को भी पता ना चले, उसी प्रकार का कॉन्फिडेंशियल उनका रोल था। वह बहुत ही कम बोलती थी लेकिन मुस्कुराती रहती थी। जैसे बाबा कहते हैं, विष्णु शेष शैय्या पर लेटे हैं और मुस्कुरा रहे हैं, ईशु दादी की उसी प्रकार की मुस्कुराहट थी कि सारे यज्ञ का जानते, सुनते और सारे कारोबार को देखते हुए भी गुप्त रह मुस्कुराती रहती थी। ईशु दादी इतना कारोबार संभालते हुए एवं इतना कुछ जानते हुए भी कभी किसी को कोई बात नहीं बताती थी अर्थात् सदा गुप्त रहती थी इसीलिए वह अंत तक यज्ञ की संभाल करती रहीं ।

यज्ञ की जिम्मेवार कैशियर

ईशु दादी के पास लोग पैसे सफल कर जाते थे तो वह उस पैसे को शांतिवन में गोलक भाई के अकाउंट ऑफिस में खुद जाकर के देकर आती थी। हम सोचते थे कि ईशु दादी सैर कर रही है। यह भी नहीं कि शाम को जाकर के इकट्ठे पैसे देने हैं लेकिन चाहे दिन में तीन चक्कर लगाए, चाहे चार मगर तुरंत उस पैसे को अकाउंट ऑफिस तक देकर के आती थी।

बाबा की यूनिक बच्ची

वह अंदर से बहुत लाइट रहती थी। जब उनको स्टेज पर बुलाया जाता था और कुछ शेयर करने को कहा जाता तो वह खूब हंसती और हंसाती और बाबा की बात सुनाती थी। आज हम उनकी स्मृति में उनकी विशेषताओं को याद करते हैं। उनकी बहुत सारी विशेषताएं हमारे धारण करने योग्य हैं जैसे कम बोलना, बाबा की याद और सेवा में मगन रहना जिससे एकाग्रता शक्ति बढ़ती है और जो बाबा ने काम दिया है वही करना है। ऐसी विशेष आत्मा को हम अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।



दादी का वरदान फलीभूत होते देखा



बी.के. कविता
निजी सचिव, राजयोगिनी
दादी ईशु जी, शांतिवन

मैं रोज सुबह उठते ही प्राणेश्वर बापदादा का दिल से शुक्रिया करती हूं कि उन्होंने मुझे त्रिमूर्ति दादियों के अंग-संग रहकर उनकी पालना लेने, सेवा करने और शिक्षाएं लेने का सौभाग्य दिया। हम ज्ञान सरोवर में मनोहर दादी जी के साथ रहे, प्रकाशमणि दादी जी के साथ 8 साल रहे। ईशु दादी जी को हम पिछले 23, 24 वर्षों से देख ही रहे थे परंतु दादी जी की व्यक्तिगत सेवाओं में पिछले 15 वर्षों से ही थे।

ईशु दादी प्यार की मूर्ति थी

ईशु दादी जी का लौकिक परिवार धन-धान्य से संपन्न था। दादी जी के संस्कार वैसे ही रॉयल और शांतचित्त के रहे। ईशु दादी प्यार की मूर्ति थी, ममता की मूरत थी। मैं सदा उन्हें दादी मां ही कहती थी। कभी लगता कि वह संतोषी मां है। इतनी सरलचित्त और नम्रचित्त थी, इतनी गंभीर रहती थी, उन्हें देख सदा यह एहसास होता कि इनके जीवन से जो शिक्षाएं मिल रही हैं वे हमें आगे बढ़ाने के लिए बहुत सहयोगी हैं।

पहली मुलाकात में ही दादी जी के प्यार की अमिट छाप लग गई

एक दोपहर 2:45 बजे दादी प्रकाशमणि जी ने कहा, कविता, जाओ यह चेक ईशु दादी जी को देकर आओ। जैसे ही मैं चेक लेकर उनके कमरे में पहुंची, मुझे बहुत पावरफुल वाइब्रेशन महसूस हुए, लगा जैसे यहां तपस्या हो रही है, गहन शांति की अनुभूति हुई। ईशु दादी को बेड पर लेटा देख मुझे लगा जैसे विष्णु जी शेष शैय्या पर लेटे हुए हैं। मुझे देखते ही दादी ने कहा, कविता आई है, आओ, आओ!

उस पहली मुलाकात में ही मेरे मन में दादी जी के अमिट प्यार की छाप लग गयी

और उठकर बैठ गई। मैंने कहा, दादी, आप लेटे रहिए, मैं तो बस यह चेक देने आई हूं। दादी ने कहा, नहीं, तुम पहली बार मेरे पास आई हो, मुझे पास बिठाकर बड़े प्यार से सिर पर हाथ घुमाने लगी और कहा कि मैं देखती हूँ, तुम बहुत प्यार से दादी जी की सेवा करती हो, तुम आज यहां आई, मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने कहा, दादी, आप हमें अपनी कोई सेवा नहीं देते हो, इसलिए यहां आना नहीं हो पाता है, आप मुझे कोई सेवा दीजिए। दादी ने कहा कि बाबा ने कहा है ना, अपना सारा काम खुद करना है इसलिए मैं सब कुछ स्वयं करती हूं, तुम्हें क्या सेवा दूं! उस पहली मुलाकात में ही मेरे मन में दादी जी के प्यार की अमिट छाप लग गई। लगा, दादी बाप समान है।

दादी खुद भी हल्की रहती और सभी को एक सेकेंड में हल्का कर देती

दादी सदा ही साक्षीद्रष्टा रही। यज्ञ में कितनी भी हलचल हुई हो परंतु दादी की स्थिति सदा अचल-अडोल रही। दादीजी बहुत उपराम रहती थी। पहले दादी जी खुद तैयार होकर 7 बजे ऑफिस पहुंच जाती थी, बाद में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण हमें अपने साथ ले जाने लगी। ऑफिस में कोई कुछ बात सुनाता कि यह ऐसा है, वैसा है तो दादी कहती कि देखो, यज्ञ किसका है? यज्ञ बाबा का है, भंडारी का मालिक भी बाबा है, तो फिर हम क्यों परेशान हों! मैं मालिक नहीं हूं, मैं भी आप सब की तरह निमित्त हूं, मालिक बाबा है। यज्ञ में कुछ बात ऊपर-नीचे हो भी जाती है तो उसका जिम्मेवार बाबा है, सबकुछ बाबा ही करा रहा है, हम सब कठपुतली की तरह नाच रहे हैं। ऐसे दादी खुद भी हल्की रहती और सभी को एक सेकेंड में हल्का कर देती। दादी जी ऑफिस में जाकर, ताली बजाकर, अपनी दोनों बाहें खोलकर सबको ओम शांति, ओम शांति बोलती, सबसे प्यार से मिलकर ऐसा वायुमंडल बदल देती जैसे बाबा यहां पर आ गया हो और अपनी शक्तियां फैला रहा हो। बहुत ही खुशी का वायुमंडल बन जाता।

मनमत मिक्स नहीं करनी है

जब बाबा आते थे तो ईशु दादी डायरी-पेन लेकर बैठती और यज्ञ के सारे कारोबार आदि की बातें नोट करती थी। ईशु दादी का इतना साक्षी भाव रहा है कि सब कुछ मालूम होते हुए भी कभी नहीं कहा कि मैं जानती हूं या मुझे सब पता है। दादी स्वयं को गुप्त रखती थी। हमेशा कहती कि बाबा की जब मत मिलेगी तब करूंगी, जो बाबा कहे वही मुझे करना है, मनमत मिक्स नहीं करनी है।

बाबा ने दादी जी को घड़ी दी

यज्ञ में, शुरुआत के समय में एक दिन बाबा सभी ब्रह्मावत्सों के साथ बैठे थे, तब बाबा ने कहा, किसी के पास कोई भी कीमती आभूषण है तो

उसे मम्मा-बाबा के पास जमा कर दो क्योंकि कीमती आभूषण रखा होगा तो उसमें बुद्धि जाएगी और एकाग्रचित्त अवस्था नहीं बन सकेगी। उसी समय सभी ने अपने-अपने आभूषण निकाल मम्मा-बाबा को समर्पित कर दिए। उनमें से बाबा ने एक घड़ी उठाई और वह दादी जी को दी। बाबा, दादी जी को सदा ही अपने अंग-संग रखते और दादी जी से समय पूछा करते थे। इसके अलावा दादी जी को पत्र-व्यवहार की सेवा और डाक द्वारा मुरलियों को पहुंचाने की सेवा समय से करनी होती थी। दादी जी को दी गई घड़ी, दादी जी के हाथ की नस पर चलती थी, इसमें बैटरी का खर्चा नहीं होता था इसलिए दादी जी को यह प्रिय लगती थी, इसमें भी दादी जी की इकोनॉमी थी। दादी जी के पास बहुत ही कीमती घड़ियां एक से बढ़कर एक आई पर दादी जी को बाबा की दी हुई यही घड़ी सबसे प्रिय लगती थी। इसके सामने लाखों की घड़ियां भी दादी जी के लिए तुच्छ थी। आज भी उस घड़ी को हम देख सकते हैं, जो बाबा द्वारा दादी जी को दिया गया विशेष उपहार है।

बाबा से अटूट प्यार

दादी सारा दिन बाबा को याद करती थी। हर रोज दिन में तीन बार मुरली पढ़ती थी और नोट भी करती थी। दादी रोज शाम को हमें मुरली पढ़कर सुनाती और नोट करने को कहती थी। एक बार मुरली में आया कि बच्चे बाबा को भूल जाते हैं, तो दादी ने मुझे पूछा, क्या तुम बाबा को भूलती हो? मैंने कहा, हां दादी, मैं भूल जाती हूं। तो पूछा, तुम बाबा की बच्ची नहीं हो? मैंने कहा, मैं बाबा की और आपकी भी बच्ची हूं, आप तो हमारी मां हो। तो कहा कि मैं मां नहीं हूं, मैं भी बाबा की छोटी बच्ची हूं तुम्हारी तरह। फिर मैंने पूछा, आप बाबा को कैसे याद करते हो? दादी ने कहा, बाबा को याद करना होता है! मैं बाबा को याद करती ही नहीं। मैं सोच में पड़ गई तो दादी ने कहा, बाबा को याद वह करता है, जो भूल जाता है, जब मैं बाबा को भूलती ही नहीं तो याद क्यों करू! मेरी हर सांस में, मेरी रग-रग में, मेरे रोम-रोम में, मेरे अंग-अंग में बस बाबा, बाबा, बाबा ही है, तो मैं बाबा को याद क्यों करूं, वह तो सदा याद है ही। दादी का इतना बाबा से अटूट प्यार रहा।

कभी भी दादी किसी बात के लिए न नहीं कहती थी

कभी मैं दादी से कहती, दादी, आज यहां जाना है, आप चलेंगी? तो कहती कि तुम बाबा से पूछो कि मैं दादी को ले जाऊँ? जो बाबा कहेगा, वह मुझे बताना। चाहे सुबह हो या शाम या अमृतवेला, कभी भी दादी किसी बात के लिये ना नहीं कहती थी। कहती थी कि निमित्त मात्र तुम बोलती हो लेकिन कहता है बाबा। तुम्हें निमित्त बनाकर बाबा मेरी सेवा कर रहा है। तुम यह कभी मत समझना कि मैंने दादी की सेवा की, इतना बाबा पर

अटूट निश्चय था।

दादी बहुत मिलनसार थी

दादी हमेशा अपने दोनों हाथ खोलकर कहती कि मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, बाबा मेरे दिल में रहता है और मैं बाबा के दिल में रहती हूं। दादी जी ने सबसे अधिक समय बाबा के साथ बिताया है। मम्मा, दादी, दीदी के साथ भी उनका समय बीता है। दादी सभी के साथ एडजस्ट हो जाती थी, बहुत मिलनसार थी, राइट हैंड बनकर पार्ट बजाती थी। कभी किसी के मन में यह सवाल नहीं आता था कि ईशु दादी के साथ हम कैसे चलें।

दादी कहती थी, बाबा ने मुझे क्लास कराने का पार्ट नहीं दिया है

दादी मुझे हमेशा सभी दादियों की महिमा सुनाती थी, उनकी विशेषताओं का वर्णन करती थी। मैं कहती थी, कमरे में आप इतनी सारी बातें सुनाते हो यज्ञ की, दादियों की, मम्मा-बाबा की तो ये बातें आप क्लास में भी सुनाओ ना। तो कहती थी, बाबा ने मुझे क्लास कराने का पार्ट नहीं दिया है, बाबा ने मुझे ऑफिस का काम दिया है, यज्ञ कारोबार की भंडारी दी है। क्लास कराने और मुरली सुनाने के लिए बाबा ने रतन मोहिनी दादी, प्रकाशमणि दादी, मनोहर दादी आदि को टीचर बना कर रखा है। बाबा ने मुझे कभी नहीं कहा, बच्ची, क्लास कराओ, मुरली सुनाओ, तो मैं क्यों सुनाऊं! मैं तुमको सुनाती हूं, तुम जाकर सुनाना। मैं कहती, दादी, आप बाबा के साथ रहे हो, आपके सुनाने का जो प्रभाव पड़ेगा वह मेरे सुनाने का नहीं, मैं तो अभी छोटी हूं। तो दादी कहती, मैं तो तुमसे भी छोटी बच्ची हूं, बाबा की गोद में बैठी हुई हूं। ऐसे दादी इतना महान कार्य करते भी, यज्ञ की भंडारी संभालते भी कभी अभिमान में नहीं आती थी।

जो हमारा बाबा खाता है, वो हम भी खाते हैं

जब हम दादी जी को भोजन देते तो वे पूछती, बाबा ने खाया? पहले बाबा को खिलाओ, तब मैं खाऊंगी। एक बार दादी डे के कार्यक्रम में मुन्नी दीदी और मोहिनी दीदी को रात्रि भोजन पर देर हो गई थी। हमने दादी जी से कहा, दादी, आपको रात 10 बजे सोना होता है इसलिए आप भोजन कर लीजिए परंतु दादी नहीं मान रही थी, कहा, आज तक ऐसा नहीं हुआ कि मैंने अकेले भोजन किया हो। फिर मुन्नी दीदी के कहने पर दादी ने भोजन किया और सोफे पर बैठ गई। जब हम भोजन करने बैठे तो पाया कि तुरई की सब्जी बहुत कड़वी बनी है। हमने दादी से पूछा, आपको



सब्जी कड़वी नहीं लगी! तो कहा कि भाई ने बाबा को भोग लगाया है, जब बाबा ने सब्जी खाई तो मैंने भी खा ली। हम सभी को बहुत वंडर लगा। दादी का बाबा से ऐसा जिगरी प्यार रहा कि जो हमारा बाबा खाता है, वो हम भी खाते हैं।

दादी बहुत उपराम रहती थी

दादी सागर के समान सारी बातें स्वयं में समा लेती थी, कभी किसी बात का मुख से वर्णन नहीं करती थी। डॉक्टर जब पूछता कि आपको क्या तकलीफ है? तो कहती, मैं तो आपसे मिलने आई हूं। जब मैं बताती कि दादी को यहां घुटनों में दर्द है या यह तकलीफ है, तो मुझे कहती कि तुम वर्णन क्यों करती हो कि दादी को यह तकलीफ है। तो मैं कहती कि आप तो देहभान से परे हो इसलिए आपको महसूस नहीं होता परंतु मुझे तो पता चलता है ना। तो कहती, मैं ओके नहीं, डबल ओके हूं। दादी, बाबा की याद में इतनी मगन रहती थी जो उन्हें देह और देह कि दुनिया का भान न रहता। बहुत उपराम रहती थी।

दादी बहुत निर्मान थीं

दादी बहुत निर्मान थीं, कभी क्यों, क्या के प्रश्न में नहीं जाती थी। एक बार पांडव भवन में एक भाई ने आकर दादी जी से कहा, मेरी माता जी बीमार है, मुझे घर जाना है, आप मुझे खर्ची दीजिए। ऐसा कह कर वह अपनी सेवा में चला गया। मैं दादी जी के लिए जूस लेकर पहुंची। दादी जी ने बताया कि एक भाई ऐसा-ऐसा कह कर गया है, मैं अभी जाकर उसे पैसे देकर आती हूं। मैंने कहा, उस भाई ने कहा है कि वह खुद आएगा बाद में। तो कहा, वह सेवा छोड़ कर आएगा तो उसे डांट पड़ सकती है, पता नहीं उसे फिर समय मिलेगा या नहीं मिलेगा, मैं तो फ्री हूं और दादी जी, लिफाफे में पैसे लेकर उस भाई को डिपार्टमेंट में जाकर दे आई। ऐसे दादी जी स्वयं निर्माण होकर सारे कार्य अपने हाथों से करती थी। ऐसी कई शिक्षाएं मुझे दादी जी के जीवन से मिली।

खुशी का वायुमंडल बना दिया

विश्व कल्याणी भवन में एक ही कमरे में दादी जी आराम भी करती थी, भोजन भी करती थी और भाई-बहनों से मिलना-जुलना आदि भी करती थी। एक बार मैंने दरवाजा लगा कर दादी जी को फल खाने के लिए दिए। तभी दरवाजे की घंटी बजी, 4 वरिष्ठ भाई-बहनें मिलने आए थे। मैंने उन्हें 10 मिनट बैठने के लिए कहा कि दादी जी फल खा रहे हैं, यह बात दादी ने सुन ली और कहा, बाबा के घर में, बाबा के यज्ञ की भंडारी देने

कोई आए और तुम उनको बिठा देंगी। दादी ने पहले उन सब से मुलाकात की और अपनी दोनों बाहें खोलकर स्वागत करते हुए कहा, वाह, मेरा भाई आया है, वाह, मेरी बहन आई है, ये तो मेरे बाबा के बच्चे आदिरत्न हैं, कितने लाडले बच्चे हैं। इस तरह दादी बड़े उमंग-उत्साह से सभी से मिले और खुशी का वायुमंडल बना दिया। दादी ने फिर सब को अपने पास बिठाकर, अपने हाथों से, बड़े प्यार से प्लेट में रखा फल का एक-एक टुकड़ा खिलाया। उनके जाने के बाद मैंने दादी से कहा, आपके लिए दूसरा फल काट कर लाती हूँ। तो दादी ने कहा, नहीं, बाबा ने इन सभी को फल खिलाया तो उनकी आंखों की चमक और चेहरे की मुस्कुराहट देखकर ही मेरा पेट भर गया है।

दादी का वरदान फलीभूत होते देखा

एक बार कुछ बहनें दादी जी से मिलने आई। दादी ने मुझसे पूछा, इन्होंने बाबा के घर में इतनी भंडारी दी, तुम इन्हों को क्या देगी? दादीजी कॉटेज में अपने पास कुछ रखती नहीं थी और विश्वकल्याणी भवन में आए हमें अभी दो-तीन मास ही हुए थे। मैंने कहा, दादी जी, आपके पास टोली, वरदान, सेब हैं, वे देंगे और आप अपने मुख से भी वरदान देना तो उन्होंने कहा, तुम्हें दो दिन पहले यज्ञ से जो कपड़े मिले हैं, क्या तुम वह अपने पास रखोगी, वे ले आओ और इनको दो, आपको बाबा और दे देगा। मैंने साड़ी उन बहनों को दे दी। बहनें भट्ठी करने आई थी। उन्होंने कुछ मास बाद 300 साड़ियां लाकर दादी जी के सामने रखी। दादी ने जो वरदान दिया था कि तुम दोगे तो बाबा तुम्हें देगा, वह फलीभूत होते देखा। ऐसे दादी के वरदानी बोल सिद्ध होते थे।

आज कोई भंडारी नहीं आई, मैं कैसे खाना खा सकती हूं

लॉक डाउन में जब पार्टियों का आना बंद हुआ तो एक दिन दादी ने कहा कि आज कोई भंडारी नहीं आई है, मैं कैसे खाना खा सकती हूं। किसी को पता ही नहीं होगा कि हम यहां रहते हैं, तुम आम के पेड़ के पास कुर्सी डाल दो, मैं वहां बैठकर मुरली पढ़ूंगी तो मुझे देख कर कोई आएगा, भंडारी देगा। दादी मान ही नहीं रहे थे तो खगेंद्र भाई जी एक लिफाफा, जिसमें 500 रुपये थे, लेकर बाहर जाकर पाँच मिनट बैठकर वापस आए और दादी जी से कहा, दादी, देखो किसी ने यह भंडारी दी है। दादी ने कहा, किसने दी है, मुझे मिलाओ। तो कहा, वे भोजन करके आयेंगे तब तक आप भी भोजन कर लीजिए। तब जाकर दादी ने भोजन किया और पूछती रही कि वे कब आएंगे मिलने। भंडारी आते ही दादी कहती थी कि तुम अभी कि अभी गोलक भाई जी को देकर आओ।



सबसे बड़ा डॉक्टर बाबा है

सिरदर्द की तकलीफ निरंतर रहने की वजह से एक बार चेकअप कराने के लिये डॉक्टर सुधीर शाह से मेरा मिलना हुआ। सारी जांच करके उन्होंने बताया कि सिर में नस कमज़ोर है और तुरंत ऑपरेशन करवाने की सलाह दी। सुबह 7 बजे जब मैं वापस शांतिवन पहुंची तो दादी मेरे स्वागत में फूलों की माला लेकर खड़ी थी। बड़े प्यार से मुझे अपनी बांहों में लेकर पूछा, क्या कहा डॉक्टर ने? मुझे रोना आ गया तो मैं अंदर बाबा के कमरे में जाकर रोने लगी। दादी जी ने फिर मुझे बुलवाया और पूछा तो मैंने बताया कि डॉक्टर ने ऐसा-ऐसा कहा है। दादी ने कहा कि इतनी छोटी-सी बात से घबरा गई! डॉक्टर ने कहा और तुमने मान लिया! फिर दादी मेरे सिर पर हाथ घुमाती रही, मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे स्वयं ब्रह्माबाबा आकर मेरे सिर पर हाथ घुमा रहे हैं और धीरे-धीरे मेरी सारी तकलीफ खत्म हो गई। दादी ने कहा, तुम दिल से बाबा की सेवा करती हो, सबसे बड़ा डॉक्टर तो बाबा है, वह तुम्हें ठीक कर देगा। मुझे विश्वास बैठ गया कि सबसे बड़ा सर्जन मेरा बाबा और मेरी दादी है, जो मुझे हमेशा के लिए ठीक कर देगी। सचमुच, आज तक मुझे दोबारा सिरदर्द नहीं हुआ और दवाई भी नहीं खानी पड़ी। दादी जी प्यार, ममता और सहनशक्ति की देवी थी, जो हर बात स्वयं में समा लेतीं, मुख से कुछ नहीं बोलती। मुझे याद नहीं कि दादी जी ने कभी अपने मुख से कहा होगा कि मुझे प्यास लगी है। मैं खुद ही पानी लेकर खड़ी हो जाती तो कहती कि तुमको पता था कि मुझे प्यास लगी है! जैसे बाबा ही टच करा देता था।

एक रुपया नहीं, बाबा की अमानत

शुरू-शुरू में एक दोपहर दादी की अलमारी साफ करते हुए मुझे एक रुपया मिला। दादी को दिखाते हुए मैंने कहा, दादी, आपकी अलमारी में मुझे खजाना मिला है। एक रुपया देखकर दादी ने कहा, यह कैसे यहां रह गया, किसने दिया था? यह तो अच्छी बात नहीं है। ऐसा कह कर वह एक रुपया मेरे हाथ से लेकर, ऑफिस में गोलक भाई जी को देते हुए कहा, देखो तो कविता को मेरी अलमारी में एक रुपया मिला, यह कैसे रह गया! भाई जी ने कहा, दादी, आप भी कमाल करते हो, एक रुपए की कोई बात नहीं, बाद में दे देते लेकिन दादी ने कहा, यह एक रुपया नहीं, बाबा की अमानत है, तो यह एक रुपया भी मेरे पास क्यों रहे। कभी हम कहते, दादी जी, आपकी छुट्टी हो तो हम मार्केट से यह चीज लेकर आएं? तो कहती, मेरी छुट्टी नहीं, ऑफिस में जाओ, गोलक भाई से लिखत में लेकर, पैसे लेकर, फिर काम होने के बाद बचे पैसे जमा करके आना। कभी कहती कि सब कुछ बाबा के भंडारे में मिलता है, चलो मैं तुम्हारे साथ चलकर, तुम्हें दिलवाती हूं। दादी जी इस तरह एक-एक रुपए का हिसाब रखती थी, उसे सफल करती थी।

दादी जी महान होते हुए भी निर्मान थे

दादी जी के जीवन से जुड़ी एक और बात आपको बताते हैं। पांडव भवन में दादी जी और मुन्नी दीदी दोनों का एक ही बाथरूम था। एक दिन दादी जी बाथरूम में ही थे, उसी समय मुन्नी दीदी आए और प्यार से पूछा, दादी जी, आप कितने टाइम में बाहर आएंगे और फिर वे चाय पीने चले गए। लेकिन दादी जी को बहुत संकल्प चले और जैसे ही सुना वैसे ही जल्दी बाहर आने का सोचने लगे। उनको संकल्प आया कि मुन्नी दीदी तो बड़ी दादी जी की सेवा छोड़ कर आते हैं और फिर उन्हें दादी जी को क्लास में भी लेकर जाना है इसलिए मुझे जल्दी स्नान कर लेना चाहिए या फिर और किसी बाथरूम में भी स्नान कर सकती हूँ। ब्रह्माबाबा के शांति स्तंभ के पास ही ट्रेनिंग सेंटर है, वहीं पर समर्पित या पार्टी में आए हुए बहनें रहती हैं। दूसरे दिन से ही दादी जी वहीं पर जाते और देखते रहते कि कहीं कोई बाथरूम खाली हो तो मैं स्नान करूं। एक हाथ में बाल्टी-मग और एक हाथ में कपड़े पकड़ कर बाथरूम को ढूंढ़ती रहती थी। एक दिन मैंने दादी जी को देखा तो पूछा कि दादी जी, आप यहां क्या कर रहे हैं। तब दादी जी ने मुझे सारी बातें सुनाई। तब मैंने कहा कि आप हमारे बाथरूम में स्नान कर लीजिए। उन्होंने तुरंत कहा कि नहीं, तुम्हें भी तो दादी जी की सेवा में जाना होता है ना। मैंने कहा, हां दादी जी लेकिन टाइम पर तैयार हो जाऊंगी, आप चलिए ना प्लीज। तब वे मान गए। मैंने सोचा, मैं उनकी मदद करूं, तो दादी जी ने तुरंत कहा कि नहीं, मैं सेवा नहीं ले सकती हूं आपसे। मैंने कहा, मैं तो बड़ी दादी जी की सेवा करती हूं, आप भी तो मेरे लिए बड़ी दादी ही है ना। तब दादी ने कहा कि मेरा हिसाब-किताब बनेगा ना इसलिए मैं आपसे सेवा नहीं ले सकती हूं। दादी जी की यह बात सुनकर मैं हैरान रह गई कि कितनी बड़ी महान विशेषता संपन्न दादी जी हैं।

आज्ञाकारी बन दादी ने अपने ऊपर किया कंट्रोल

एक बार की बात है कि दादी जी से मिलने दादी कॉटेज में डॉक्टर सतीश गुप्ता जी आए थे। उन्होंने पूछा, दादी जी, आप कैसे हैं? दादी जी तो हमेशा ही कहते थे कि मैं तो सदा ही ओके हूं, कभी भी कोई बात नहीं बताती थी। तब मैंने पूछा कि भाई साहब, दादी जी का पेट इतना फूला-फूला-सा क्यों रहता है? डॉक्टर भाई जी ने कहा कि आप दादी जी को कोई भी भारी चीज मत खिलाओ, हल्का भोजन दिया करो। मैंने कहा कि भाई साहब, दादी जी तो बहुत हल्का भोजन लेते हैं परंतु भोजन खाने के बाद रोज तीनों टाइम पापड़ खाते हैं। फिर मैंने पूछा, पापड़ इतना भारी

होता है क्या? तब उन्होंने कहा कि हां, कई प्रकार की उसमें दाल होती हैं तो उनसे भी गैस हो सकती है इसलिए आप पापड़ बंद कर दीजिए। तब मैंने दादी जी को देखते हुए कहा कि और तो कुछ नहीं खाते पर पापड़ बहुत प्यार से खाते हैं और वह भी बचपन से ही आदत है। सिंधी परिवार में खास करके भोजन के बाद पापड़ बड़े प्यार से जरूर खाते हैं। मैं दादी जी को देखने लगी और कहा कि धीरे-धीरे करके थोड़ा-थोड़ा कम कर देंगे शायद दादी जी को आराम मिल जाएगा। तब दादी जी कहते हैं, अगर मैं पापड़ नहीं खाऊं तो कोई हर्जा नहीं है, हम पापड़ नहीं खाएंगे। तब डॉक्टर भाई जी भी मुस्कुराने लगे कि वाह दादी जी, वाह कमाल है बाबा की! दादी जी ने उसी दिन से पापड़ खाना बंद कर दिया, उस दिन के बाद कभी भी पापड़ को हाथ नहीं लगाया। अपने ऊपर ऐसी कंट्रोलिंग पावर रखना, बहुत बड़ी बात है ना।



यज्ञ के आदि रत्नों में से विशेष रत्न दादी ईशु



राजयोगिनी बी.के. संतोष
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

इस यज्ञ के जो भी आदि रत्न हैं उन आदि रत्नों में से हमारी ईशु दादी एक विशेष रत्न रहीं जो एकनामी और इकोनॉमी का अवतार रहीं। हम जबसे इस ईश्वरीय मार्ग पर चले, जिस दिन से मैंने ईशु दादी को देखा वो हमेशा बाबा की वफादार, फरमानबरदार और आज्ञाकारी हो करके चलीं। बाबा के पास जो भी कोई आकर के अपने दिल की बात करता था या कोई समस्या बताता था उस समय भले दादी जी भी पास में बैठी हुई होती थीं परंतु इनके अंदर बहुत गंभीरता की शक्ति थी। हमने देखा इनके मुख से कभी भी कोई बात रिपीट नहीं हुई। जो भी बात होती थी वो सागर के समान अपने दिल में समा लेती थीं और भुला देती थीं। ईशु दादी की इतनी विशेषता थी, वो सारा बाबा का खजाना संभालती थीं परंतु खुद के प्रति हमने कभी नहीं देखा कि ईशु दादी ने कभी एक पैसा भी पर्सनल अपने लिए कभी खर्च किया हो। वे त्याग, तपस्या और स्नेह की मूर्ति थीं। सबके साथ उनका अति स्नेह था, क्योंकि बाबा के साथ और ब्राह्मण परिवार के साथ उनका बड़ा गहरा कनेक्शन था और हम देखते थे कि वे हमेशा स्व चिंतन में रहती थीं। कभी भी हमने ईशु दादी के मुख से किसी का परचिंतन, किसी की बुराई नहीं सुनी, कभी भी उन्होंने किसी की कमी का वर्णन नहीं किया बल्कि वो सदैव अपने में मस्त रहती थीं। वो सहनशीलता की मूर्ति थीं उनको कितना भी सहन करना पड़ा परंतु उसका कभी वर्णन नहीं किया। देखने वालों को फील होता था कि इनको कितना सामना करना पड़ता है, कितना सहन करना पड़ता है परंतु वो होते हुए भी उन्होंने कभी वर्णन नहीं

जिस दिन से मैंने ईशु दादी को देखा वो हमेशा बाबा की वफादार, फरमानबरदार और आज्ञाकारी हो करके चलीं



कराची, 30 अप्रैल 1950: भारत जाने से पहले, बीके बहनें सामान पैक कर रही हैं। (बाएं से दाएं) दादी ईशु, दादी आत्ममोहिनी, दादी शील इंद्रा, मीरा बहन, हूर बहन, आनंदी बहन, पार्वती बहन (मम्मा की बहन), दादी ध्यानी और दादी जानकी

किया। बाबा के अव्यक्त होने के बाद उन्होंने दादी प्रकाशमणि के साथ भी ऐसा ही पार्ट बजाया और दादी प्रकाशमणि के जाने के बाद उन्होंने दादी जानकी के साथ भी ऐसा ही पार्ट बजाया। मैं समझती हूं ऐसे सारे विश्व में तो छोड़ो परंतु यज्ञ में भी ऐसे कोई गिने-चुने बाबा के बच्चे होंगे जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया और इतनी गंभीरता की मूर्ति रहीं और बाबा का सारा कारोबार संभालते हुए सदैव न्यारी और प्यारी भी रहीं। हमारा तो यही कहना है कि ईशु दादी को श्रद्धांजलि देने के बजाए उन्होंने जो कुछ करके बताया है उन गुणों को हमें अपने जीवन में धारण करना है। जैसे कि शास्त्रों में बताते हैं कि दधीचि ऋषि ने अपनी हड्डियां दे दी तो वैसे ही ईशु दादी ने देखा कि बाबा इतनी मेहनत करते हैं तो वे भी कभी मेहनत करने में पीछे नहीं रहीं। अंत तक उन्होंने यज्ञ की संभाल की और संभाल करते हुए सदैव खुशी में नाचती रहीं। कभी भी टेंशन नहीं, टेंशन फ्री रहीं और दूसरों को भी टेंशन फ्री किया, तो यही हमारी उनके प्रति शुभ भावना है, श्रद्धांजलि है और यही हमारा कहना है कि जरूर उनके जैसे एकनामी और इकोनॉमी बनने की आवश्यकता है, तभी हम जीवन में सफल हो सकते हैं। हमने देखा उनको बाबा के बगैर कोई दिखाई नहीं देता था। बाबा के यज्ञ के बगैर उनको किसी प्रकार की कोई सोच नहीं थी बस एक ही सोच थी कि बाबा का जो यज्ञ है वो निर्विघ्न चले, बाबा का यज्ञ सदा भरपूर रहे, यही उनकी शुभ इच्छा थी और उसी अनुसार वो खुद भी चलती थीं और दूसरों को भी प्रेरणा देती थीं।

ओम शांति


शान्तिवन, आबू रोड (राज.)

एकनामी और इकोनॉमी की अवतार थीं



राजयोगिनी
बी.के. शशी प्रभा
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हम सबकी प्यारी आदरणीय ईशु दादी जी बहुत ही गम्भीर, हर्षितमुख होते हुए भी गहरे राज अपने अन्दर समाए रहती थी। कोई भी बात यज्ञ की या किसी भाई-बहन की कभी भी उन्होंने किसी और को नहीं बताई। चेहरे पर रूहानियत तो सदा ही समाई रहती थी। एकनामी और इकोनॉमी की तो वो अवतार ही थी। यज्ञ के एक-एक छोटे-बड़े खर्चे का हिसाब रखती थी। आवश्यकतानुसार हरेक को खर्चे के लिए पैसे दिया करती थी।

एक बार किसी भाई को बाहर जाना था, तो दादी जी के पास पैसे लेने के लिए गया। उस समय दादी जी किसी अन्य कार्य में बिजी थी तो दादी जी ने कहा, अभी थोड़ी बिजी हूँ, थोड़ी देर के बाद आ जाना। व्यस्तता के चलते बाद में दादी जी इस बात को भूल गई और वो भाई भी भूल गया। जब दादी जी को याद आया तो वो उसकी आवश्यकता के पैसे लेकर आंगन में तब तक ढूंढ़ती रही जब तक कि वो भाई मिल नहीं गया। फिर उसे पैसे दे दिए। दादी जी हरेक का पैसे के मामले में बहुत ध्यान रखती थी।

दादी जी में परखशक्ति बहुत अच्छी थी। एक बार किसी बात को लेकर एक भाई ने हैण्डराइटिंग बदल कर एक लेटर दिया पर दादी जी ने उसी समय परख लिया और वह लेटर मुझे दिखाया। बाबा के साथ रहने के कारण दादी जी का बुद्धियोग क्लियर था। उनका जीवन बहुत ही सादा था, कभी भी वो किसी भी बात की डिमाण्ड नहीं करती थी। वो यज्ञ के पुराने मकान में ही रहती थी, वहाँ पर बाथरूम आदि की सुविधा नहीं थी तो वो स्नान के लिए ट्रेनिंग सेन्टर में बाल्टी लेकर जाया करती थी। दादी जी बाबा की विश्वासपात्र थी। ऐसी यज्ञ और ब्रह्मावत्स स्नेही दादी जी को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

दादी जी में परखशक्ति बहुत अच्छी थी। बाबा के साथ रहने के कारण उनका बुद्धियोग बहुत क्लियर था।



ईशु दादी के पास सम्पत्ति और सुमति दोनों खजाने थे



राजयोगिनी बी.के. सुदेश
निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, जर्मनी

ईशु दादी जी ने कभी शब्दों से नहीं सिखाया बल्कि जीवन ऐसा जिया जो प्रेरणा बन गया। उनका जीवन बड़ा निराला और गुप्त होते हुए भी बड़ा प्रत्यक्ष था। पुष्प के समान सुंदर और सुगंधित जीवन था। फूल को छिपा कर रख दो तो सुगंध तो फिर भी आती है। मैं उनको हमेशा ऐसा समझती हूं कि परमात्मा ज्ञान सागर की वह गोल्डन गागर थी, जिस गागर में यज्ञ के बहुत गहरे रहस्य समाए हुए थे क्योंकि वह दिन-रात बाबा-मम्मा के साथ रहती थी। जहां भी बाबा जाते थे उनको साथ लेकर जाते थे। उनको ड्यूटी मिली हुई थी यज्ञ के कैशियर की तो उनके पास संपत्ति का खजाना भी था और सुमति का खजाना भी था।

दादी सरल होते भी बड़ी समृद्ध थी, रमणीक थी, गंभीरता की गागर थी। बाबा-मम्मा का उनमें बहुत विश्वास था और दीदी का भी क्योंकि मम्मा के बाद दीदी ने भी यज्ञ संभाला तो उनको कम्युनिकेशन ऑफिसर कहें, इंफॉर्मेशन ऑफिसर कहें क्योंकि उनके माध्यम से ही सब पत्र व्यवहार होता था। जो भी पत्र आते थे उसमें सब प्रकार की समस्याएं, परिस्थितियां, जीवन कहानी की भूलें अथवा अच्छाइयां होती थी। सबने अपने जीवन का जो पोतामेल दिया होता था उसको उन्होंने ऐसे ही समा लिया जैसे कि नदी सागर में समा जाती है। बाबा उनके सामने कभी-कभी किसी को पर्सनल शिक्षा भी देते थे परंतु सुनने वालों को यह डाउट नहीं होता था कि ईशु दादी के सामने बाबा हमारे जीवन की कहानी की बातें

दादी सरल होते भी बड़ी समृद्ध, रमणीक और गंभीरता की गागर थी

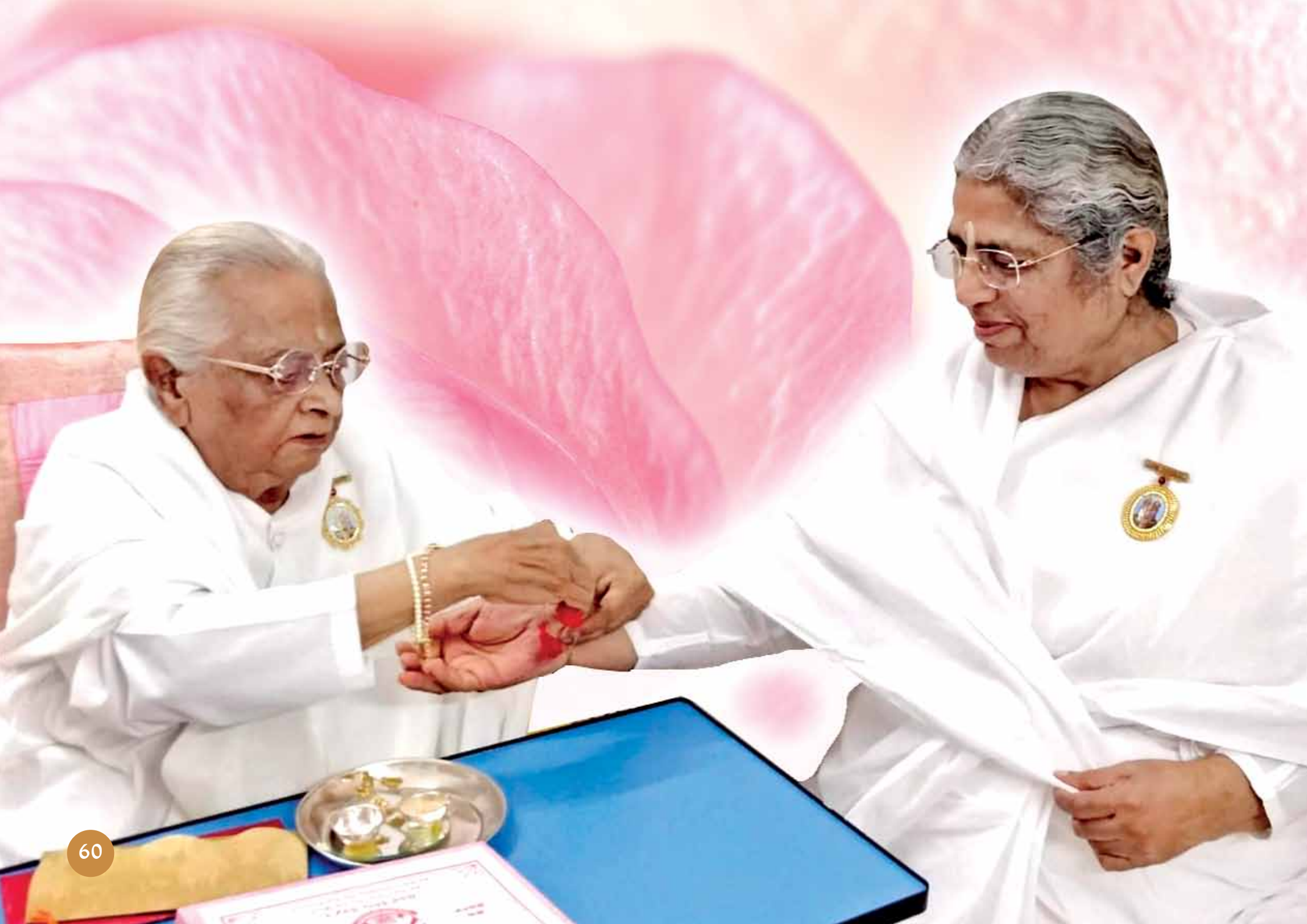


दादी प्रकाशमणि, दादी गुलजार, दादी ईशु और मोहिनी दीदी

पूछ रहे हैं या बता रहे हैं, तो कोई नुकसान होगा। उनको विश्वास था कि ये ऐसे ही समा लेंगी और समाप्त कर देंगी जैसे बाबा किसी की कमी को सुनकर के बिल्कुल समा लेता है। दादी जब उनसे मिलती थी तो कभी भी ऐसा मन में नहीं आता था कि किसी की कमी-कमजोरी स्मृति मात्र में भी उनके पास है। बाबा के संग का रंग उनको पूरा लगा। जैसे बाबा के गुण, मम्मा के गुण थे, ऐसे ही गुण उनमें भी थे।

दादी ने परमात्मा की शिक्षाओं को पूरी रीति से पालन किया। सब की बातों का पता होते हुए भी बड़े गंभीर होकर रहते थे, पोजिशन का अहंकार नहीं था। नम्रता ही महानता है। जब भी कोई प्रोग्राम होता था तो दादियों के साथ रहती थी पर बड़ी साइलेंट होकर।

उन्होंने अंत तक ऐसा जीवन बिताया और हमेशा हंसती रहती थी। विश्व कल्याणी भवन में बिल्कुल उनके सामने कमरा था तो मुझे बुला लेती थी। भाषण तो ज्यादा करते नहीं थे पर जो भी दो शब्द बोलते थे, उत्साह भर देते थे। बैलेंस वाला जीवन उन्होंने जिया। ऐसी ईशु दादी जी को शत् शत् नमस्कार और श्रद्धा के फूल अर्पित करते हैं।



दादी जी यज्ञ की शान थीं



राजयोगिनी बी.के. आशा
निदेशिका
ओम शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम

आदरणीय ईशु दादी जी को बाबा का दिया हुआ नाम पूर्णशांता था। वह बहुत ही गंभीर व्यक्तित्व की और बाबा की बहुत ही कॉन्फिडेंशियल थी, जब तक बाबा डायरेक्शन नहीं दें तब तक कोई भी बात बताती नहीं थी। एक बार की घटना है, जब बड़ी दादी जी को कुछ जानना था परंतु ईशु दादी को डायरेक्शन मिला था कि किसी को भी बताना नहीं है और उन्होंने नहीं बताया। परंतु, जब उनको बापदादा से डायरेक्शन मिला तब उन्होंने दादी जी को वह बात बताई। इसको कहा जाता है वफादार। ऐसा वफादार इस यज्ञ में हमने दूसरा कोई नहीं देखा।

दिल की सच्चाई और सफाई

दादी जी बाबा के पत्रों पर हिंदी अनुवाद लिखकर भेजती थी। कोई व्यक्ति अगर सामने आता था और उसकी कोई बात होती थी तो दादीजी के हाव-भाव से व चेहरे से कदापि भी पता नहीं लगता था कि इनको यह बात पता है, इसको कहा जाता है सागर की तरह किसी बात को समा लेना और समाप्त कर देना। उस व्यक्ति से उनका व्यवहार वैसा ही रमणीक और सरल रहा करता था। इससे सिद्ध है कि दादी जी अंदर से स्वच्छ थी और किसी की, कोई भी बात न मन में, न चित्त में रखती थी।

ट्रस्टी और जिम्मेदार

दादी जी प्यारे बाबा के यज्ञ के धन को ट्रस्टी हो करके संभालती थी। एक बार हम लोग मधुबन आए और मधुबन में जब हम आते थे तो एक नियम था कि आपके पास जो भी कीमती सामान है, आप ईशु

जब तक बाबा डायरेक्शन न दे तब तक दादी जी कोई भी बात बताती नहीं थी



दादी जी के संग ओ.आर.सी की बहनें

दादी के पास जमा करवा दें। तो हम लोग सब कुछ दादी ईशु के पास जमा रखते थे और जाते वक्त दादी जी से ले लेते थे। एक बार मैं सामान वापस लेना भूल गई, टैक्सी आ गई और हम टैक्सी में बैठने ही वाले थे। तब दादी जी ने कहा, 'आशा तुमको याद है, तुम्हारी यह थैली मेरे पास है। फिर दादी जी ने थैली मेरे हाथ में दी। दादी जी ट्रस्टी होकर के हर एक आत्मा को एक्यूरेट चीज मिल जाए, इस बात का विशेष ध्यान रखती थी। दादी जी कुछ भी भेजने वाले को हमेशा एकनॉलेजमेंट लेटर भेजती थी, आपकी ओर से यह पाया, ईश्वरीय बैंक में जमा हुआ, खातरी करना जी।

मुरली लिखने की सेवा

दादी जी इयर फोन कान में लगा कर के हिस्ट्री हॉल में बाबा की गद्दी के पीछे जाकर बैठ जाती थी। वह बहुत एकाग्र होकर के बाबा की मुरली एक्यूरेट लिखती थी और यही मुरली बाद में छपा करती थी। इस प्रकार दादी जी यज्ञ की एक शान थे लेकिन वह कभी भी स्व का वर्णन नहीं करती थी।

समर्पण भाव

मैंने देखा कि बड़ी दादी के साथ आप छोटी बहन के रूप में जो दादी बोले, वैसे ही करते थे। ईशु दादी जी में बहुत समर्पण भाव था। बड़ी दादी जी अगर भोजन पर देर से आ रहे हैं या कहीं जा रहे हैं तो ईशु दादी जी इंतजार करते थे। यह एक बहुत बड़ी बात होती है कि हम अपने निजी जीवन को भी ईश्वरीय सेवा में अर्पित कर दें। इस प्रकार ईशु दादी जी एक विशेष हस्ती थी जो बाबा के अंग-संग रही, यज्ञ के गुह्य रहस्यों को अपने में समाती रही और समय प्रति समय जब आवश्यकता पड़ी तो सुनाती रही। ऐसी आदरणीय ईशु दादी जी को दिल से, आदर से भावांजलि देते हैं। आप अमिट नक्षत्र हैं, जैसे बाबा को नहीं भूल सकते ऐसे आपको भी भुलाया नहीं जा सकता।



दादी ईशु जी ने यज्ञ रक्षक बन यज्ञ की संभाल की



राजयोगी बी.के. राजू
उपाध्यक्ष
ग्राम विकास प्रभाग, शांतिवन

आदरणीय ईशु दादी जी के साथ मैंने पूरे 50 साल बिताए हैं। बाबा के अव्यक्त पार्ट में चारों दादियों का साथ था। गुलजार दादी माध्यम थी। साथ में दीदी-दादी और ईशु दादी। उस समय बाबा जो भी महावाक्य उच्चारण करते, ईशु दादी बिल्कुल ही बाजू में बैठ कर के सब कुछ लिखती थी क्योंकि लिखने की बहुत अच्छी प्रैक्टिस साकार बाबा ने उनको कराई थी। अपनी लौकिक माता जी के साथ दो बच्चियाँ बोर्डिंग में आई, 5-6 साल की थी लच्छू दादी और उनकी बड़ी बहन ईशु दादी 7 या 8 साल की थी। दोनों ने बाबा के साथ में ही सब कुछ सीखा, पढ़ा। दोनों बहनों की राइटिंग बहुत अच्छी थी। आज सबके सामने साकार बाबा की जो मुरलियाँ हैं वो सब ईशु दादी के हाथों से ही लिखी हुई हैं।

ईशु दादी शुरू से ही बहुत अंतर्मुखी और एकांतवासी थी। उनका उठना, बैठना, खाना, पीना पूरा ही साकार ब्रह्माबाबा के साथ ही था। बाबा कहीं भी जाते थे तो लच्छू दादी उनकी हर प्रकार की सेवा, संभाल करती थी और जो यज्ञ सहयोग देते थे या बाबा को कोई अपना समाचार पत्र देते थे, वो ईशु दादी संभालती थी। बाबा की राइटिंग हर बच्चे के लिए पढ़ना सहज नहीं था। बाबा, लाल पेंसिल से बहुत बड़े-बड़े अक्षर सिंधी में लिखते थे और ईशु दादी बाबा के अक्षरों को अच्छी तरह से समझ कर उन पर हिंदी में लिखती थी। सिंधी वाला पत्र होता तो उन पर सिंधी में लिखती और अगर कोई इंग्लिश में लिखना होता था तो विश्वरतन दादा मदद करते थे। कोई पत्र याद-प्यार के होते थे, कोई जीवन-कहानी के होते थे, कोई प्रॉब्लम्स के होते थे। देश और विदेश में बाबा के अनेक बच्चे बाबा से

जैसे शिवबाबा और हम बच्चों के बीच में ब्रह्माबाबा हैं, ऐसे ही बापदादा और बच्चों के बीच में ईशु दादी थी

डायरेक्ट श्रीमत पूछते थे, बाबा से राय लेते थे। जैसे शिवबाबा और हम बच्चों के बीच में ब्रह्माबाबा है ऐसे ही बापदादा और बच्चों के बीच में ईशु दादी थी। ईशु दादी की सेवा थी हर एक के पत्र पढ़ना, हर एक के समाचार को अपने पास नोट करना और फिर बाबा को सुनाना, बाबा से उसका उत्तर लेना और ले करके फिर अपनी राइटिंग में अक्षर पर अक्षर लिख देना, फिर पोस्ट करना। एड्रेस डालने में विश्वरतन दादा का साथ लेती थी। साकार बाबा के साथ ईशु दादी के जैसा पार्ट यज्ञ में किसी भी अन्य आत्मा का नहीं रहा।

मैं यज्ञ में स्कूल की लाइफ से आया था। मैंने कहा था कि मुझे भी टाइप सीखनी है तो मुझे कहा गया कि पहले सिंधी सीखो, सिंधी सीख जाओगे उसके बाद टाइप सीखना। जब मैंने सिन्धी में पढ़ना-लिखना सीखा तो दीदी की राइटिंग पढ़ नहीं पाता था। दीदी लिखती थी बहुत वंडरफुल, उनकी अपनी सिंधी थी, सिंधी, हिंदी, इंग्लिश सब मिक्स थी लेकिन ईशु दादी की राइटिंग शुरू से पढ़ लेता था। ईशु दादी के नोट्स मुझे मिल जाते थे और मैं उन्हीं से ही मुरलियों को टाइप करने लगा। उन्हीं से ही प्रश्न-उत्तर निकालने लगा। फिर दीदी की राइटिंग भी पढ़ना मैंने धीरे-धीरे सिखा। फिर अव्यक्त बापदादा का पार्ट पूरी-पूरी रात चलने लगा और बाबा जब शुरू में 2 घंटा, 3 घंटा मुरली सुनाते तो ईशु दादी पूरी मुरली लिख लेती थी लेकिन जब बाबा व्यक्तिगत एक-एक बच्चे से बात करते तो ईशु दादी उठ जाती थी। तो दादी और दीदी ने मुझे कहा कि बाबा रात भर बच्चों से मिलते हैं, कितने महावाक्य उच्चारण करते हैं (उस समय टेप मशीन नहीं थी जो उनको रिकॉर्ड किया जाए), कोई नहीं लिखता है, तुम बैठ सकते हो? मैंने कहा, हाँ दादी, हम जरूर बैठेंगे। तो 1973 से जब गद्दी पर बाबा आते थे तो मुरली के बाद मैं भी जाकर के बाबा के बाजू में बैठता था और पूरी-पूरी रात लिखता था। मुरली लिखना, ईशु दादी की राइटिंग को पढ़ना, ऐसे करके उनके साथ कारोबार में आना शुरू किया।

दादी की नैचुरल नेचर में इकोनॉमी के बहुत गहरे संस्कार बाबा ने भरे हुए थे। यज्ञ पहले धन -धान्य संपन्न था, 14 साल तक ओम मंडली वाले पिस्ता-बदाम खाते रहे। जब यज्ञ 5 मई, 1950 को आबू में आया तो पेपर्स शुरू हुए। सामान सहित 350-450 लोगों के स्टीमर आदि का खर्चा, उसमें बहुत सारा पैसा खत्म हो गया और जिन लोगों ने बुलाया था, उन लोगों ने कोई सहयोग नहीं दिया। उन्होंने सोचा कि अगर हम सहयोग नहीं देंगे तो यह संस्था टूट जाएगी।

इस आर्थिक पेपर में कैसे इतने लोगों को मैनेज करना है, यह सारी जवाबदारी ईशु दादी के पास थी। यज्ञ में कितना आया, कितना खर्चा हुआ, पूरा हिसाब ईशु दादी संभालती थी। कितना अनाज मंगाना है, सब्जी मंगानी है, क्या करना है, ऐसे हर घड़ी का समाचार बाबा को देती थी। एक दिन की बात है कि बाबा की भंडारी में 8 आना भी नहीं था और 350 लोगों का भोजन दोपहर को बनना था। तो ईशु दादी बाबा के पास गई और बोला, बाबा, आज क्या बनेगा, न आटा है, न सब्जी है, न पैसा है। अटूट विश्वास के साथ बाबा ने कहा, थोड़ा ठहरो, 1-2 घंटे के बाद बताऊँगा। फिर 10 या 10:30 बजे पोस्ट आई और उसमें पैसा आया। फिर बाबा ने बुलाया ईशु दादी को और कहा कि पैसा आ गया है, अब जो मंगाना है मंगाओ। उसी से अनाज आया, सब्जी आई और पूरे टाइम पर भोजन बना। कोई को पता नहीं चला। बाबा और दादी को केवल पता होता था कि बाबा की भंडारी में आज कुछ नहीं है। दादी इतनी गुप्त थी, इतनी अंतर्मुखी थी कि जो किसी के आगे भी एक शब्द भी नहीं बोलती थी। इस प्रकार, यज्ञ का रक्षक बन करके बाबा के साथ ईशु दादी ने सब संभाला।

जब बाबा अव्यक्त हो गए उसके बाद की इकोनॉमी बड़ी रमणीक थी। एक-एक पैसे का हिसाब था। कोई भी अपने पास एक पैसा भी नहीं रख सकता था। समर्पित माना समर्पित। जो लाते थे, दादी कहती थी, सभी ईशु बहन को दे दो और आपको कभी भी कुछ चाहिए तो यहाँ से ही आपको लेना है। लौकिक वाले कहते थे, कम से कम मास में एक बार पत्र जरूर लिखो। दीदी इकोनॉमी का अवतार थी और दादी ईशु दादी-दीदी के एक-एक डायरेक्शन को संपूर्ण रीति से पालन करती थी। दीदी कहती थी कि जिन को भी पत्र लिखना है, लिख कर के ले आओ। इसके लिये एक छोटा सा पतला कागज देती थी। पतला इसलिये कि 10 ग्राम से या 20 ग्राम से ज्यादा होगा तो उस पर टिकट ज्यादा लगेगी। फिर एक एरिया के 8-10 पत्र इकट्ठे कर, एक ही लिफाफा बनाकर के मानो कानपुर सेंटर में भेज दिया और उनको लिख दिया कि यह पत्र जिन बच्चों के माता-पिता के हैं, आप उनको भेजते रहना। डायरेक्ट पत्र व्यवहार हम नहीं कर सकते थे क्योंकि यहाँ की बात उधर, उधर की बात इधर, समाचारों में समय जाए, बुद्धि जाए तो बाबा और दादियां हमें समर्पित जीवन का महत्त्व बताते थे। समर्पित जीवन माना पूरे बलि चढ़ गए, अब कोई भी देहधारी की याद नहीं आनी चाहिए। तब बाल काटने वाले नाई नहीं होते थे। अभी तो सब व्यवस्थाएं हैं। जब बाल काटने के लिए मास, डेढ़ मास में हम लोग बाहर जाते थे तो 8 आने या 12 आने लगते थे। उस समय दादी हमें देखती थी, पूछती थी कि अभी बाल कटाने की जरूरत है क्या? थोड़ा ठहरो, 8 आना भी क्यों खर्च करते हो अपने ऊपर? इकोनॉमी से यज्ञ को कैसे चलाया जाए, वो सिखाती थी। खुद

प्रैक्टिकल उसी जीवन में जीती थी। ईशु दादी इतनी सिंपल थीं जो वही चप्पल, वही साड़ी कितने दिनों तक चलाती रहती थी। कभी भी कोई शौक नहीं, कोई उनको चाहना नहीं।

कभी-कभी बाबा बड़े प्यार से कहते थे, यह बच्ची मेरी रिपोर्टर है। अभी भी संदेश में एक जगह आया है कि बच्ची रिपोर्टर थी। बाबा-मम्मा तो कमरे में, ऑफिस में हैं, सब बच्चों के बीच में नहीं जाते। लेकिन ईशु दादी बीच-बीच में अकेले में चक्र लगाती थी। कोई को जैसे देख ही नहीं रही है लेकिन गुप्त रीति से हर एक का चित्र खींच लेती थी कि कोई जोर से बोल रहा है, कोई खड़े-खड़े खा-पी रहा है, कहीं ईश्वरीय नियम और मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है तो खुद कुछ नहीं बोलती थी पर मम्मा-बाबा के सामने सब बताती थी कि बाबा ये-ये डायरेक्शन्स मिलने चाहिए, इस प्रकार की एक्टिविटी यज्ञ में ठीक नहीं है। फिर बाबा की उस पर मुरलियां चलती थी।

यदि, कभी हम दीदी-दादी के सामने गए और बीच में ईशु दादी भी बैठी है और हमने जोर से बोल दिया या कोई बात को सिद्ध कहने लगे, तो दादी के दो शब्द मुझे बार-बार याद आते हैं, भाऊ, तुम किससे बात कर रहे हो, भाऊ, मुझे सब पता है। ईशु दादी के सामने कोई अपने को सिद्ध और जिद्द नहीं कर सकता था। दादी आवाज में कभी नहीं आई, गुस्सा किसी पर भी नहीं किया लेकिन किसी को भी कुछ छिपाने नहीं दिया।

सेंटर का हिसाब-किताब जिसको हम पोतामेल कहते हैं, ईशु दादी पढ़ती थी और बाबा सुनते ही उस पर दृष्टि डालते थे। कहते थे, बच्ची इस पोतामेल को फाड़ दो, यह सच्चा नहीं है, झूठा है, इस बच्चे ने हेराफेरी से लिखा है। ईशु दादी एकदम सच्ची। सारे दिन में कितनी मदोगरी आई, कहाँ से आई, दादी के पास एक-एक शब्द में नाम सहित नोट होता था। मधुबन में उस समय कोई अकाउंटेंट नहीं थे। यह तो जब सरकार के नियम-कायदे बदलते गए तो चार्टर्ड अकाउंटेंट रखे गये। ईशु दादी ने एक-एक पैसे को संभाला और संभालते हुए बड़ों को गाइड किया कि कहाँ पर कितना खर्चा होना चाहिए। उन्होंने बताया कि देखो, अगर मकान बनाना है तो हमारे पास इतना है, ऐसे खर्च हो सकता है। दादी जी इकोनॉमी भी करती थी और साथ-साथ एकनामी थी। एक के सिवाय उनकी बुद्धि किसी में भी नहीं गई, चाहे कितना भी किसी ने धन से सहयोग दिया हो, जानती थी हर एक का पोतामेल। कभी भी प्रभाव में नहीं आई कि यह बड़ा स्नेही है, बड़ा सहयोगी है। सब बाबा के लिये कर रहे हैं, मेरे को कुछ नहीं चाहिए।

अगर मीटिंग में कोई बात चल रही है, ईशु दादी बैठी है, भले उसको सब कुछ पता है लेकिन एक बात भी बीच में कभी कट नहीं करेगी। सुनती रहेगी, देखती रहेगी लेकिन किसी को बीच में टोकेगी नहीं। बाद में उसको मिल करके बतायेगी कि देखो, यह बात ऐसे थी, आपने ऐसे कही।

यज्ञ में एक नियम बना हुआ था कि कोई भी दादी से पैसे लेकर के बाहर सेवा में या लौकिक में गए तो वापस आकर, कहाँ, क्या खर्चा किया और कितना बचा है, वो नोट कराना है। कहीं से कुछ मिला है तो वो भी एक्यूरेट लिख करके देना है। अगर, किसी ने 2 दिन, 4 दिन हिसाब नहीं दिया तो दादी बुलाएगी, पूछेगी, भाऊ, तुम इतना पैसा यज्ञ से लेकर गए थे, उसका हिसाब अभी तक नहीं आया। मुझे लिख कर देना पड़ता है बड़ों को, आप पहले हिसाब दे दो, इन सब बातों में एक्यूरेसी का रिकॉर्ड था उनका, कोई भी बात में डिले नहीं किया।

जब दीदी जी अव्यक्त हुई 1983 में तो एक दिन दादी और ईशु दादी दोनों ही पांडव भवन में आंगन में बैठी थी। मुझे बुलाकर के दोनों ने बीच में बिठा लिया। ईशु दादी ने कहा, दादी, दीदी जब तक थी, सारी पोस्ट देखती थी। सबको जवाब जाता था। दीदी के अव्यक्त होने के बाद सेंटर्स और सेवाएं बढ़ रही हैं। इतनी अधिक पोस्ट आती है जो मैं अकेले नहीं पढ़ सकती हूँ, आप राजू को यह जवाबदारी दो। दादी ने मुझे देखा, कहा, देखो ईशु क्या कहती है, इतने पत्र आते हैं तुम सहयोग दो। हमने कहा, ठीक है। तब से दादी और ईशु दादी के पास जितने पत्र आते उनका और मुरली का डिपार्टमेंट मिला। फिर सेंटर्स बढ़ने लगे तो धन की सेवा यज्ञ में आने लगी। फिर दादी को गोलक भाई का सहयोग मिला। ईशु दादी के साथ और भी बहुत से भाई-बहनें सेवा में मदद करने लगे।

पिछले पांच-छह सालों में मैंने देखा, दादी का पार्ट चेंज हो गया। धीरे-धीरे वो बहुत रमणीक हो गई। हंसने लगी, हंसाने लगी सबको। जहां पर मिलने जाती, कुछ ना कुछ बाबा की अच्छी-अच्छी बातें सुनाती। बहुत प्यार से मिलती, बहुत प्यार से सबको टोली खिलाती, सौगातें देती।



दादी ईशु जी रियल गोल्ड थीं



राजयोगिनी बी.के. चन्द्रिका
उपाध्यक्ष, युवा प्रभाग, अहमदाबाद

दादी ईशु जी के जीवन से कई बातों का अनुभव हमें होता है। परमात्मा शिव पिता ने हमें जो ज्ञान दिया है उस ज्ञान का साक्षात् दर्शन दादी जी के जीवन से दिखाई देता है। यज्ञ में ईशु दादी जी का रोल विशेष रहा। वे एक ज्ञान सागर की हीरे तुल्य गागर कहो, ट्रस्टी कहो, खजांची कहो, ड्रामा में एक विशेष रोल दादी जी को मिला। दादी जी का रोल शिवजी के नंदी के समान रहा। जब भी भक्तों को शिवजी को कोई बात सुनानी हो तो नंदी के कान में सुनाते हैं, चाहे वह अपनी जीवन कहानी हो, चाहे अपनी भूलें हों, गल्तियां हों, पाप हों। बिल्कुल ऐसा ही पार्ट दादी जी का रहा। ब्रह्मावत्स अपनी जीवन कहानियां पत्र के माध्यम से बाबा को भेजते थे और बाबा भी पत्र के माध्यम से बच्चों को जवाब देते थे। तो दादी जी का रोल रहा कि बच्चों का पत्र बिल्कुल ही ट्रस्टी भाव से, साक्षी भाव से पढ़ना और बाबा जो भी जवाब लिखाते थे उसे तटस्थ भाव से, पत्र के माध्यम से बच्चों को पहुंचाना। यह कोई छोटा रोल नहीं है और यह कोई साधारण विशेषता भी नहीं है। बापदादा के मन के भावों को अपने शब्दों द्वारा पत्र के माध्यम से पहुंचाने के श्रेष्ठ कार्य के लिए दादी निमित्त बनी, भगवान ने निमित्त बनाया।

इसका अर्थ यह है कि दादी जी कोई साधारण व्यक्ति नहीं थी। दादी जी के जीवन से सरलता, ऑनेस्टी, गंभीरता, न्यारापन, निर्मान भाव, निश्छल भाव, नि:स्वार्थ भाव, निष्पक्षता आदि कई गुण प्रत्यक्ष होते रहे। परमात्मा के यज्ञ के लिए वह सिर्फ स्थूल धन की नहीं लेकिन ज्ञान रत्नों की भी खजांची रही। आज हमारे पास जो ज्ञान रत्न पहुंच रहे हैं उसके लिए भी ईशु दादी ही निमित्त रही है।

यज्ञ का सारा कारोबार संभालते हुए जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना, यह हमने दादी जी के जीवन से देखा

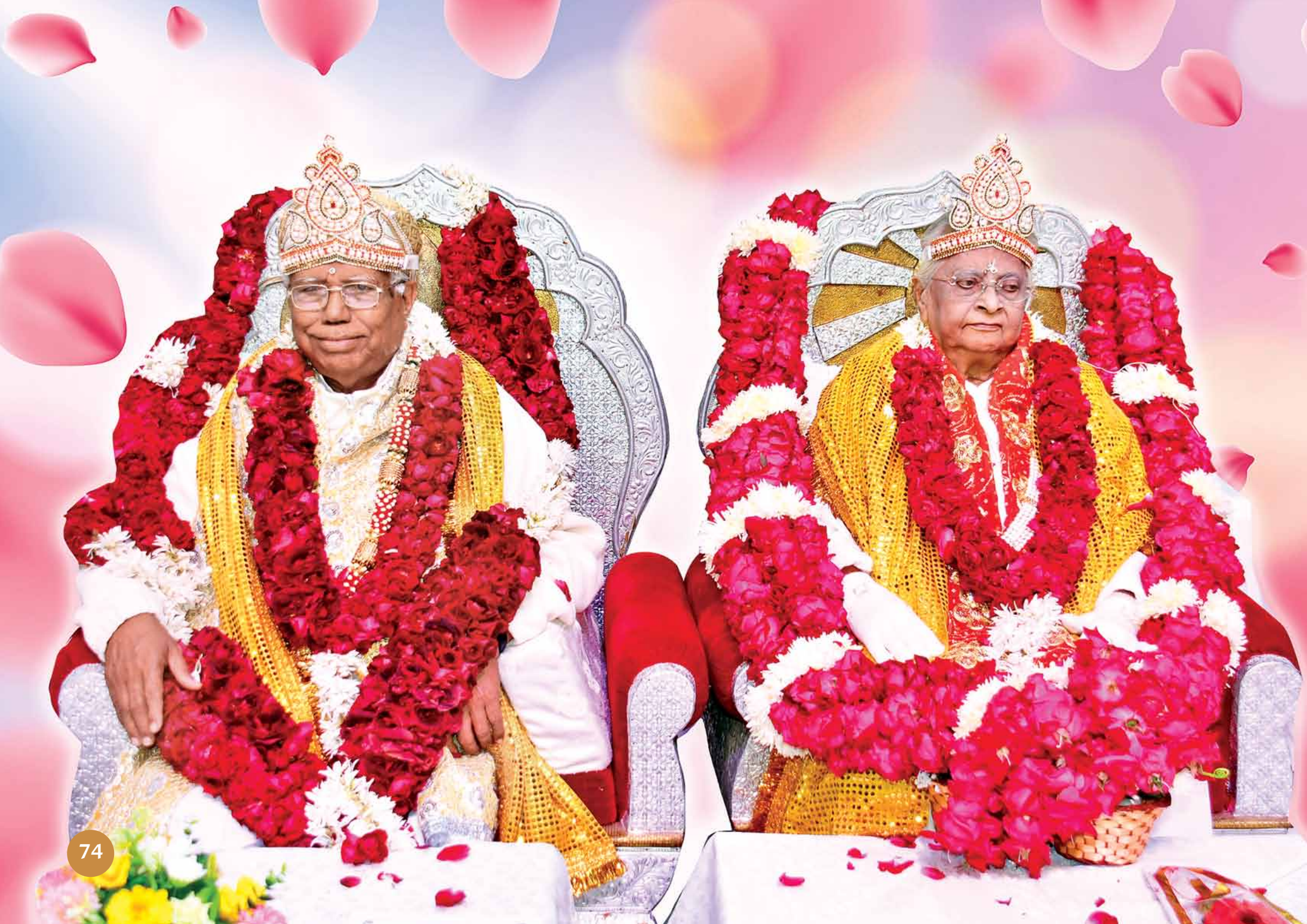

ખુશી

दादी जी की और एक विशेषता हमने सुनी है जो कोटों में कोई और कोई में से भी कोई विरले में दिखाई देती है। वह विशेषता है फ्लैक्सिबिलिटी अर्थात् रियल गोल्ड। बाबा ने हम बच्चों को मुरली के माध्यम से अंडरलाइन करवाया है कि मीठे बच्चे, रियल गोल्ड बनो। दादी जी की विशेषता रही है, जैसा देश वैसा वेश, जैसा व्यक्ति वैसा व्यक्तित्व, जैसी परिस्थिति वैसी श्रेष्ठ स्थिति, जैसी व्यवस्था वैसी श्रेष्ठ अवस्था। हर व्यक्ति, हर परिस्थिति और हर व्यवस्था के अनुरूप अपनी अवस्था को फ्लैक्सिबल रखना, सभी को खुशी बांटना, यह दादी जी की विशेषता हरेक के मन को छूने वाली है। दादी जी सचमुच यज्ञ की रियल गोल्ड थी।

यज्ञ का सारा आर्थिक कारोबार संभालते हुए भी जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना, यह हमने दादी जी के जीवन से देखा। कोई भी अहम् भाव नहीं, हद के पोस्ट-पोजिशन का नशा नहीं, न वाचा में, न कर्मणा में और न ही व्यवहार में। इतना बड़ा कारोबार संभालते हुए भी अपने आपको गुप्त रखा, न मान की चाहना, न शान की भूख, न नाम की प्यास।

दादी निर्माणता की चैतन्य मूर्ति थी। सही अर्थ में ट्रस्टीभाव क्या होना चाहिए? ट्रस्टी कैसा होना चाहिए? वह देखना हो तो दादी जी को देखें। बाबा के यज्ञ के हर राज को जानते हुए राजयुक्त रहना, सभी को राजी रखना और ट्रस्टी बनकर अपना रोल यथार्थ निभाना, यह दादी जी के जीवन से सीखने को मिलता है।

ऐसी परम आदरणीय दादी ईशु जी को तहे दिल से नमन है, जो गुण, विशेषताएं हमने आज याद किए हैं उन्हें हम अपने जीवन में लाने का पुरुषार्थ करें, यही यथार्थ श्रद्धांजलि भी होगी।



दादी जी की विशेषताएं बिल्कुल अनोखी थी



राजयोगी बी.के. करुणा
अध्यक्ष
मीडिया विंग, आर.ई.आर.एफ.

मुझे अत्यंत हर्ष है, मेरे जीवन का एक आदर्श ईशु दादी जी रहीं। मैंने इस यज्ञ में आ करके हर प्रकार की विशेषताएं हमारी दादियों में देखा है, परंतु हमारी ईशु दादी की जो विशेषता थी वो बिल्कुल अनोखी थी। पहली, इस दुनिया में कहा जाता है कि यदि कोई पैसे का मामला देखते हैं तो उनको कॉन्फिडेंशियल कहा जाता है तो ब्रह्मा बाबा का अति कॉन्फिडेंशियल मैंने ईशु दादी जी में देखा। बाबा जिसको भी, जो भी बोलते थे या लिखते थे वो केवल ईशु दादी जानती थीं और ईशु दादी सिंधी से हिंदी भी ट्रांसलेशन करके देती थीं अर्थात् जिसको भी जो भी बाबा ने कहा वो ईशु दादी जी जानती थीं लेकिन दूसरों को कभी भी वो बताती नहीं थीं, उनकी सादगी का मैं जितना भी वर्णन करूं वो कम है, वे बहुत ही सिंपल थीं। हम अपने जीवन में जितना ईशु दादी को फॉलो करें तो मैं समझता हूं कि हमारा जीवन सफल रहेगा। दादी जी सभी से सॉफ्ट बोलती थीं, कभी मैंने ईशु दादी जी को जोर से बोलते हुए नहीं देखा है। मम्मा की क्लास में बहुत पावरफुल आवाज होती थी, परंतु मम्मा की आवाज बहुत ही सॉफ्ट होती थी वे बहुत ही धीरे बोलती थीं। लेकिन ईशु दादी तो सदा ही बहुत धीरे बोलती थीं। कोई उनके सामने जोर से बोलता भी था तो उनको भी कह देती थीं कि धीरे बोलो, यह भी विशेषता हमने ईशु दादी जी से सीखी। वैसे तो उनमें बहुत विशेषताएं थीं, आपको किताब में सब कुछ मिलेगा इसलिए मैं चाहता हूं कि आप सभी इसे जरूर पढ़ें और अपने जीवन में इसको अभ्यास करने का प्रयास करें।

हम अपने जीवन में जितना ईशु दादी को फॉलो करें, तो मैं समझता हूँ हमारा जीवन सफल रहेगा



ईशु दादी बापदादा समान गुणों को धारण करने वाली शिवशक्ति थीं



राजयोगिनी
डॉ. बी.के. नलिनी
डायरेक्टर, घाटकोपर, सबज़ोन, मुंबई

ईशु दादी जी को बहुत बचपन से ही हमने देखा हुआ है। जब से मैं ज्ञान में आई तब से जैसे मैंने बाबा को देखा वैसे ही ईशु दादी को सदैव बाबा के संग में ही देखा। कभी वह बाबा के पास बैठी है, बातें चल रही हैं, कभी बाबा को पत्र सुना रही है, कभी बाबा से पत्रों की जवाब सुन रही है और लिख रही है, कभी बाबा के पास भोजन कर रही है और कभी कुछ अर्जेंट मैसेज होता है तो वह बताने आती है। ऐसे मैंने उनको भिन्न-भिन्न रूप से बाबा के आजू-बाजू ही देखा।

ईशु दादी बापदादा समान गुणों को धारण करने वाली शिवशक्ति थी, सदैव अपने काम से काम रखती थी, आज्ञाकारी और बड़ी प्रामाणिक थी। पहले मुझे लगता था कि ईशु दादी का स्वभाव थोड़ा रिजर्व, थोड़ा स्ट्रिक्ट और ऑफिशियल है लेकिन जब वह विश्वकल्याणी भवन में रहने लगी तो मेरा कमरा भी उनके ठीक सामने रहा, तब मेरा उनके साथ समीप का संबंध जुड़ा और मैंने उनका एक अलग ही रूप देखा। वह अलग रूप मेरे मन को भाया क्योंकि उनमें बापदादा की पालना की झलक थी। मैं उस पालना के लिए तरसती थी। वह पालना क्या-क्या थी, एक तो वह जब भी मुझे बुलाती तो अपने बांहों को फैला लेती थी, आओ नलिनी, आओ, कहकर वह मुझे गले लगा लेती थी, तो मुझे बाबा की याद आ जाती थी कि बाबा भी मुझे ऐसे ही बुला कर गले लगाते थे।

फिर मैं बाबा के संग में खेलती थी तो उन्हों के साथ भी मैंने लूडो खेला। जैसे बाबा कहते थे कि मैं अभी कल जाकर के विष्णु बनूंगा, कृष्ण बनूंगा तो उनके अंदर भी खेलते समय जैसे वह रूप दिखाई

मैंने दादी जी का एक अलग ही रूप देखा, वह रूप मेरे मन को भाया, उनमें बापदादा की पालना की झलक थी

देता था कि वह जाकर के छोटा बच्चा बनने वाली है। खेल में कुल दाने 6 होते थे। जब वे 6 दाने आते थे तो हम सब खुशी में ताली बजाकर उनको कहते थे, अरे वाह! 6 दाने लाकर आप जीत गए। वे कहते, अच्छा, मैं जीत गई तो खुशी में ताली बजाकर हंसती थी और सबको गर्व से देखती थी कि देखो मैंने जीत पाई, जैसे कि बिल्कुल कोई छोटा बच्चा हो। जब उनके लिए खिलौना लेकर गई तो उसे देखकर इतनी खुश हुई जैसे कोई बच्चा खुश होता है। एक खिलौना गुड़िया थी, उस गुड़िया को पूरा ब्रह्माकुमारी ड्रेस पहनाकर, बैज लगाकर बोला, देखो यह ब्रह्माकुमारी नलिनी है, अभी यह सब को नमस्ते करती है, यह सब को बुलाती है, है ना, तुम सब को नमस्ते कर रही हो ना। फिर वह गुड़िया से बात करती थी, ऐसे और भी खिलौने थे, उनसे भी बात करती थी और आनंद लेती थी जैसे कि कोई छोटा बच्चा आनंद लेता है।

इससे हमें यह सीखने को मिलता था कि हमें अपनी आत्मा को इतना पवित्र, इनोसेंट, निर्दोष बनाना है। हमारे ऊपर विषय-विकारों के कई दोष हैं, वे हमें मिटाने हैं, तब हम ऐसा मीठा बचपन पा सकते हैं। उनके अंदर एक और रमणीक रूप देखा, पुराना गीत बजाकर फिर मेरे साथ डांस करते थे, कभी मेरा बर्थडे मनाते थे मतलब मुझे कुछ ना कुछ सरप्राइज देते थे। कोई नई टोली विदेशों से आती थी तो कहते थे, यह टोली नलिनी के लिए रख दो। फिर वह हमको दिखाती थी कि ऐसी टोली कभी खाई तुमने, पता है इसका नाम क्या है? कभी भी उनकी बात में मुझे अभिमान नजर नहीं आया। मजाल है कि उनके मुख से कभी किसी के विषय में नेगेटिव बात निकले, सभी के लिए पॉजिटिव बोलती थी, सभी के गुण सुनाती थी, मुझे भी मेरे गुण सुनाये। मेरे जीवन में कई नेगेटिव बातें आई परंतु दादियों ने हमें भी समझा कर और योग की शक्ति भर कर, हमारी इन बातों का परिवर्तन करके आज हमें ऐसा श्रेष्ठ बनाया कि हम भी सकारात्मक रूप से हम आगे बढ़ रहे हैं।

और एक बात कि वह याद में सदा मगन रहती थी, बाबा के बिगर तो रह ही नहीं सकती थी। यह बात बहुत थोड़े लोगों को पता होगी कि बाबा एक बार मुंबई गए थे तो वह साथ नहीं आई थी। ऐसे तो जब भी बाबा आते थे तो वह साथ में होती थी परंतु किसी कारण से उस समय साथ में नहीं आई थी और मधुबन में ही रह गई थी। अभी दो ही दिन हुए थे, उनकी आत्मा जैसे बाबा के बिगर तड़पने लगी, तो उन्होंने एक गीत भरकर बाबा के पास भेजा। उस गीत की एक-दो लाइनें बताती हूं, 'मुझे गले से लगा लो, बहुत उदास हूं मैं, मुझे गले से लगा लो'। सारा गीत इतना दर्द

से भरा था मानो किसी पिता से बिछड़े बच्चे या दोस्त से बिछड़े दोस्त या प्रेमी से बिछड़ी प्रेमिका का हो। बाबा ने गीत सुना और जो वहां थे उन्होंने भी कहा, बाबा, आपके बगैर जैसे सूख जाएगी। बाबा की आंखों में भी आंसू दिखाई दिए परंतु वे आंसू गिरे नहीं परंतु देखने में आया कि बाबा भी जैसे उनकी याद में खो गए हों। मैं वहां हाजिर थी। बाबा ने उसी समय कहा कि बच्ची को यहां बुला लो और फिर वह आ गई।

विश्व कल्याणी में रोज मेरे से मिलती, रोज मेरा इंतजार करती। मैं रोज उनके पास जाती थी, अगर किसी दिन मैं भूल से नहीं गई तो तुरंत कविता बहन को भेजती थी कि आज नलिनी नहीं आई, क्या बात है, चलो हम चलते हैं। वह खुद चली आती थी व्हीलचेयर में कि तुम आज आई नहीं इसलिए मैं तुझे मिलने आ गई, तो मुझे बाबा की याद आ जाती थी। बाबा भी ऐसे ही कभी-कभी हम बच्चों से मिलने कमरे में आ जाते थे और हम बच्चों को प्यार करते थे। हम सभी की प्यारी ऐसी यज्ञ रतन ईशु दादी जी को कोटि-कोटि श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ।



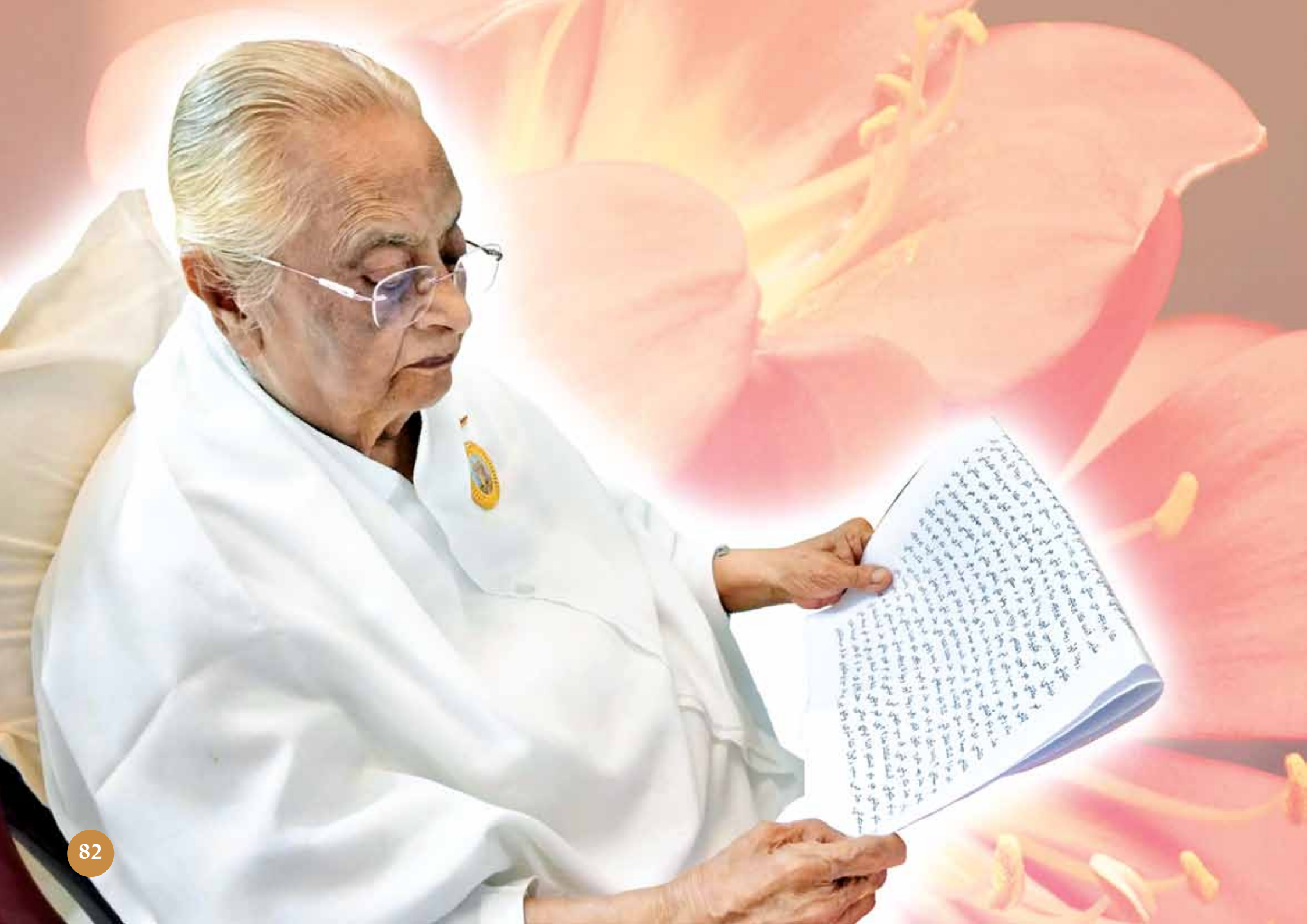
आध्यात्मिकता का जीता जागता स्वरूप थीं दादी ईशु जी



राजयोगी बी.के. सूरज
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक, माउंट आबू

ईशु दादी याद आते ही उनकी अनेक छवियाँ मानस पटल पर उभरने लगती हैं। जब से यज्ञ में आए, उन्हें देखा, समीप भी रहे और लास्ट के कम से कम 15 वर्ष बहुत समीप रहे। मुझे उनके भाग्य की एक बात बहुत आकर्षित करती थी कि वही एक आत्मा थी जो ब्रह्माबाबा के साथ अधिक से अधिक समय रही क्योंकि ऑफिस वही संभालती थी। अकाउंटस की कोई स्टडी नहीं की लेकिन बाबा ने ऐसी योग्यताएं दी कि यज्ञ का सारा अकाउंट् पर फैक्टली संभालती थी। बाबा उनके ही पास 2 घंटे रोज आकर बैठते थे, वहीं बैठकर पत्र लिखते थे। ऐसा भाग्य और किसी को नहीं मिला होगा यज्ञ में। बाबा लाल अक्षरों में लिखते थे, बीच में गैप छोड़ते थे, दादी बीच में हिंदी करके लिख देते थे। सब पढ़ लेते थे इसलिए ईशु दादी से बहुत प्यार था सबका। हैंडराइटिंग भी अच्छी थी। लगभग 6 वर्ष की आयु में आ गई यज्ञ में। संसार की सारी इच्छाएं पीछे छूट गई। पवित्र जीवन, योगी जीवन अपना लिया। कितनी महान हैं ये आत्माएं। अगर हम इनकी महानताओं पर नजर डालें तो उनके समक्ष नतमस्तक होने को मन करता है और एक दिन आएगा सारा संसार उनका गुणगान करेगा। पवित्रता के बीज इन आत्माओं में पहले से ही थे। इन आत्माओं का जन्म-जन्म से भगवान के लिए असीम प्यार था इसलिए जब भगवान इस धरा पर आए ब्रह्मा के तन में तो उनके कार्य को संपूर्ण रूप से सफल करन के लिए, पूरी तरह से अपने को समर्पित कर दिया।

ब्रह्मा बाबा उनके ही पास 2 घंटे रोज आकर बैठते थे, वहीं बैठकर पत्र लिखते थे। ऐसा भाग्य किसी को नहीं मिला होगा यज्ञ में।



दादी बहुत लंबा समय कार्य करती थी। मम्मा के साथ भी रही। बाबा का इन पर बहुत फेथ था और बाबा इन्हें मोस्ट कॉन्फिडेंशियल कहते थे। कहाँ से कितना आया, बस वो जानती थी या बाबा। इनका अपना जीवन त्याग और सादगी से भरपूर था। अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। आध्यात्मिकता का जीता जागता स्वरूप थी। कुछ लोग गुप्त रहते हैं, जिनको मान आदि की इच्छा नहीं होती है। ऐसी यह गुप्त श्रेष्ठ और महान आत्मा थी। अंतिम कई वर्षों में तो बहुत रमणीक भी हो गई थी। सभी को बहुत हंसाया, बहलाया भी करती थी। बहुत सरलचित्त थी। सभी को सुख देने की भावना, सभी को सम्मान देने की भावना थी दादी की। जो भी यज्ञ में कुछ देने आया उसे प्यार भी देती थी और उसे महसूस भी होता था कि हमारा सब कुछ यहां सफल हो रहा है। ऐसी दादी जी को उनकी पुण्यतिथि पर हम सच्चे हृदय से श्रध्दासुमन अर्पित करते हैं।



यज्ञ की महालक्ष्मी दादी ईशु जी



बी.के. खगेन्द्र
सेवाधारी
राजयोगिनी दादी ईशु जी, शांतिवन

ईशु दादी जी से मुझे मां की भासना आती थी। जब से मैं ईश्वरीय ज्ञान में चला, बाबा से रूहरिहान कर कहता था कि 'बाबा, आपने अनाथ से सनाथ बना दिया लेकिन आपकी साकार पालना तो मुझे नहीं मिली। "साकार पालना देने के लिए बाबा ने दादी जी को निमित्त बनाया। दादी जी जब सेवा के लिए बाहर जाती और मैं उनकी गाड़ी चला रहा होता तब उन्हें कुछ भी खाने के लिए देते थे तो वे सबसे पहले मेरे मुंह में खिलाती थी। मुझ सौभाग्यशाली आत्मा को बाबा ने दादी जी की ऑलराउंड सेवा करने का चांस दिया। जब दादी जी द्वारा दी गई कोई भी सेवा करके, आकर बताता कि मैं सेवा करके आ गया हूं तो दादी जी मुझे एक मां की तरह अपने गले लगा लेती थी और मेरे माथे पर प्यार से हाथ घुमाती थी। मुझे कोई ऊंची आवाज में बोलते थे तो दादी जी कहती, 'मेरे भाई से प्यार से बोलो'। दादी जी छोटी-बड़ी बातों पर मेरा अटेंशन खिंचवाती थी और मां की तरह हर बात सिखाती थी।

जितनी प्यारी, उतनी न्यारी

दादी जी हमें प्यार करती थी परंतु कहती थी, 'आप सब तो मेरे सेवासाथी हो, बाबा ने आप सबको मेरी सेवा के निमित्त रखा है, ऐसा कहते न्यारी भी रहती थी।

गंभीरता और रमणीकता का बैलेंस

दादी जी जितनी गंभीर रहती थी उतनी ही रमणीक भी थी। हमें दादी जी बहुत हंसी की बातें सुनाती थी और बहलाती भी थी लेकिन जब भी दादी जी किसी भी मीटिंग में जाकर आती और हम पूछते कि दादी

जब से दादी जी को बाबा ने यज्ञ की भंडारी संभालने की जिम्मेदारी दी, तब से आज तक यज्ञ में किसी भी चीज की कमी नहीं रही

जी, आज मीटिंग में क्या-क्या हुआ? तो दादी जी गंभीरता की देवी बनकर कहती थी, आपके काम की कोई बात नहीं थी। दादी रुकमणि जी हमें सुनाती थी कि ईशु दादी तो पहले से ही गंभीरता की मूर्ति बन कर रही, कोई भी बात होती थी तो ईशु दादी बाबा को ही बताती थी। बाबा के अव्यक्त होने के बाद, बाबा ने यज्ञ संभालने की जिम्मेवारी दीदी-दादी को दी, तब दादी प्रकाशमणि को संकल्प आया कि हम तो यज्ञ के बारे में कुछ नहीं जानते। तब दीदी-दादी जी ने संदेशी को बाबा के पास वतन में भेजा और कहा कि बाबा से पूछ कर आओ, यज्ञ में क्या है, क्या नहीं, हम तो कुछ भी जानते नहीं हैं। तब बाबा ने संदेश भेजा कि दीदी-दादी को कहना, ईशु बच्ची को सदा अपने साथ रखें, वह सब कुछ जानती है। तब से ही दीदी-दादी ने ईशु दादी को अपने साथ ही रखा।

एकनामी और इकोनॉमी की अवतार

दादी जी एकनामी और इकोनॉमी का पूरे विश्व में उदाहरण थी। दादी जी की रग-रग में बाबा समाया हुआ रहता था। दादी जी यज्ञ के एक-एक पैसे की बहुत वैल्यू करती थी। दादी जी ने अपने ऊपर कुछ भी खर्च नहीं किया और ना ही अपने पास कुछ भी रखा। गंभीर होने के कारण उन्होंने अपने संकल्प, श्वास को भी व्यर्थ नहीं गवाया, उनकी भी इकॉनामी करके स्वयं को संपूर्ण बनाया। दादी जी कहती थी, मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई, मैं बाबा की बाबा मेरा। सदा बाबा की याद में अखंड रही।

मास्टर मुरलीधर

शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के द्वारा जो भी साकार मुरलियाँ चलाई, वे दादी जी के हस्तों द्वारा लिखी गई। बाबा दादी को कहते थे, 'बच्ची, आप नाश्ता करो या ना करो लेकिन मम्मा और दादियाँ, जो दूसरे स्थान पर रहते हैं, उनके पास मुरली टाइम से पहुंचनी चाहिए। दादी कहती थी, 'जी बाबा' और शॉर्टहैंड में लिखी मुरली को विस्तार में लिखकर, दादी चंद्रमणि जी के साथ साइकिल पर बैठकर 10 बजे मुरली पोस्ट करके आती थी और वह मुरली टाइम पर दूसरे स्थान पर पहुंच जाती थी।

खुशी का पावरफुल औरा

एक बार मनमोहिनीवन परिसर में विदेशी भाई-बहनों की रिट्रीट चल रही थी, वहां पर दादी जी को सब से मिलने के लिए बुलाया गया। जैसे ही

दादी जी वहां पर पहुंची, भाई-बहनें खुश हो गए। फिर दादी जी से प्रश्न-उत्तर का सेमिनार चला। सभी का प्रश्न यही था कि 'दादी जी, आप सदा ही इतनी खुश कैसे रहती हो? तब दादी जी ने बड़े सरल शब्दों में उत्तर दिया कि 'बाबा मिला तो और क्या चाहिए! मैं सदा इसी खुशी में नाचती रहती हूं, मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा ना कोई। आप सभी इस मंत्र को पक्का कर लो तो सदा ही खुशी में नाचते रहेंगे।' दादी जी का खुशी का औरा बहुत ही पावरफुल था। जब भी दादी जी किसी भी सभा में जाती तो वहां पर खुशी की लहर फैल जाती।

संतुष्टता की देवी

दादी जी स्वयं सदा संतुष्ट रहती और उनसे मिलने जो भी भाई-बहनें आते, उनके भी संकल्पों को कैच करके उन्हें स्थूल या सूक्ष्म गिफ्ट देकर संतुष्ट कर देती थी, सबकी झोली खुशियों से भर देती थी।

प्योरिटी के साथ रॉयल्टी

दादी जी जितनी ही पवित्र थी, उतनी ही रॉयल थी। जैसे ब्रह्मा बाप में प्योरिटी व रॉयल्टी के संस्कार थे, उसी प्रकार दादी जी में ईश्वरीय कुल के रॉयल्टी के संस्कार थे। उनके देखने, बोलने, सुनने, हंसने, खाने – हर कर्म में प्योरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। दादी जी कम बोलते थे लेकिन जो भी बोलते थे, वरदान के रूप में बोलते थे। उनके जीवन में व्यर्थ बोल का अंश मात्र भी नहीं था।

सदा स्वमान की सीट पर सेट

दादी जी सदा स्वमान में रहती थी और बड़े-छोटों को सदा सम्मान देती थी। स्वमान में स्थित रहने के कारण मान-शान मिलने और ना मिलने पर भी एकरस और सदा खुश रहती थी।

यज्ञ की महालक्ष्मी

दादी जी यज्ञ का स्थूल धन संभालने में जितनी निपुण थी, उतनी ही ज्ञान धन से भी सदा संपन्न रही। जबसे दादी जी को बाबा ने यज्ञ की भंडारी



संभालने की जिम्मेदारी दी, तबसे आज तक यज्ञ में किसी भी चीज की कमी नहीं हुई। जहां-जहां दादी जी के पांव सेवार्थ पड़े वहां पर भी किसी भी बात की कमी नहीं रही।

प्रकृतिजीत

दादी जी 85 वर्षों की आयु तक अपना हर कार्य स्वयं ही करती थी। दादी जी ने अपने शरीर को ठीक रखा। अंत तक भी दादी जी के बत्तीस के बत्तीस दांत थे। दादी जी के शरीर में हर्निया के सिवाय और कोई बीमारी नहीं थी। जब वे दादी कॉटेज में रहती थी तब जो भी भाई-बहनें यज्ञसेवा देते थे उसे लेकर अकाउंट ऑफिस तक पैदल ही पूरे दिन में 8-10 चक्कर लगाती थी, जिससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता था। अभी 93 वर्ष की आयु में भी दादी जी कहती थी कि चलो बाहर चक्कर लगाकर आते हैं, तो हम दादी जी के साथ सोलार में जाते थे, वहां वे एक किलोमीटर तक पैदल सैर करती थी।

एक बार महाराष्ट्र के वर्धा शहर में दादी जी एक प्लॉट का उद्घाटन कर रही थी। वहां से 500 मीटर की दूरी पर भारी बरसात हो रही थी और जहां पर प्रोग्राम चल रहा था वहां एक बूंद भी नहीं थी। प्रोग्राम समाप्त होने के बाद जब सारा सामान भी समेट लिया गया तब उस स्थान पर भारी बरसात हुई, इससे पता चलता है कि दादी जी प्रकृतिजीत थी। दादी जी हर आत्मा की शुभेच्छा जान जाती थी और उस अनुसार उनके मुख से बाबा महावाक्य उच्चारण करवाते थे जिससे मिलने वाले भाई-बहनें पूर्ण संतुष्ट हो जाते थे।

दृष्टि और टोली से असंभव कार्य भी संभव

बात विशाखापट्टनम एयरपोर्ट की है। हमारे पास सामान ज्यादा था। जब हम एयरपोर्ट पहुंचे और सामान का वजन कराया तो 35 किलो ज्यादा निकला। वजन मापने वाली स्टाफ ने मैनेजर को बुला लिया। मैनेजर ने कहा, 35 किलो ज्यादा सामान के लिए सोलह हजार भरने पड़ेंगे। हमने कहा, सोलह हजार तो नहीं देंगे। तब मैनेजर ने कहा, दस हजार ही दे दो। तभी साथी भाई के कहने पर वहाँ उपस्थित स्टाफ को दादी जी से दृष्टि व टोली दिलाई गई। इसके बाद मैनेजर भाई हमारे पास आया और कहा कि जो ज्यादा सामान है वह मुझे दे दो। वह खुद ही सारा सामान प्लेन में रखकर आया।

अहम भाव की कोई जगह नहीं थी

सब विशेषताओं और गुणों से संपन्न होते हुए और इतने बड़े पद पर रहते हुए भी दादी जी के जीवन में कभी अहम भाव नहीं आया। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मैं अकाउंट की हेड हूं और ना कभी यह कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त या अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हूं। एक बार, एक भाई दादी जी से मिलने आए और उन्हें अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बनने की बधाई दी। फिर पूछा, दादी जी, क्या आप यह जानते हो? दादी जी ने कहा कि 'मैं यह जानती हूं कि मैं बाबा की बच्ची हूं, इससे बढ़कर और कोई पोस्ट-पोजिशन नहीं है।

स्वयं हल्की रहती और सेवासाथियों को हल्का रखती

दादी जी यज्ञ की भंडारी संभालते हुए भी सदा हल्की रहती थी और अपने सेवासाथियों को भी हल्का रखती थी। जब भी अकाउंट ऑफिस में कोई भी बात होती थी तो दादी जी तुरंत कहती थी, 'आप सबको सदा याद रखना है कि यह बाबा का यज्ञ है, इसे स्वयं बाबा चला रहा है, हम सब तो निमित्त मात्र हैं। ऐसे कहकर स्वयं भी हल्की रहती और सेवासाथियों को भी हल्का कर देती थी।

सेवा में एक्यूरेसी

दादी जी 93 वर्ष की आयु में भी अकाउंट की सेवा बहुत एक्यूरेट करती थी। भाई-बहनें जो भी अमानत दादी जी के पास लेकर आते थे, तो दादी जी स्वयं पहले चेक करती थी, बाद में मुझे चेक करने के लिए देती थी। यदि किसी चेक पर साइन नहीं किया हो या डेट नहीं डाली हो तो उन सब भाई-बहनों को बताती थी और समझानी देती थी कि हर कार्य बाबा की याद में करेंगे तो गलती नहीं होगी।

बालक और मालिकपन का बैलेंस

दादी जी हर समय कहती थी कि 'मैं बाबा की छोटी बच्ची हूं' लेकिन, जब भी दादी जी को यज्ञ के लिए चेक या कैश दिया जाता था और किसी कारण से वो दादी जी से वापस मांगते तो दादी जी कहती, 'मैं क्यों वापस करूं? यह तो बाबा के यज्ञ का है तुरंत मालिक बनकर उसको संभालती थी और फिर मुझे कहती थी कि जाओ, इसे जमा कर आओ।

बाबा से दादी जी को मिला विशेष वरदान

वर्ष 2014 में जब दादी जी स्टेज पर अव्यक्त बापदादा से मिल रही थी तो बाबा ने कहा कि 'आप बहुत गुप्त रह चुकी हो, अब थोड़ा प्रत्यक्ष हो जाओ। तभी बाबा ने मुझ आत्मा को दादी जी की सेवा के निमित्त बनाया। मैं वर्ष 2009 से ही दादी कॉटेज में सेवा के लिए आया करता था। मैं आर्मी में सर्विस करता था। निमित्त भाई ने मुझे दादी जी की सेवा में समर्पित करवाने की बात कही, तो मैं सहज ही मान गया। मैं जब भी सेवा में आता था तो दादी जी की ही गाड़ी चलाता था। तब दादी जी बार-बार मेरे से पूछती थी कि आप आर्मी छोड़कर कब पूरी रीति से सेवा में आएंगे? मैं कहता, 'दादी जी, जब आर्मी से छुट्टी मिल जाए। इस प्रकार वर्ष 2014 में दादी जी की सेवा में पूरी तरह समर्पित हो गया। बाबा ने छोटेपन में ही दादी के अंदर हर विशेषताएं और गुण कूट-कूट कर भर दिए और दादी जी को विशेष आत्मा बना दिया। ऐसी विशेष आत्मा की सेवा का चांस बाबा ने मुझ आत्मा को दिया इसलिए मैं बाबा और दादी जी का कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूं।



दादी में दिखते थे साकार बाबा



राजयोगिनी
बी.के. राज दीदी
डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़, नेपाल

ईशु दादी प्यारे ब्रह्माबाबा का दायां हाथ, सदा सहयोगी, सदा साथी और इस यज्ञ की विशेष रतन रहीं। ईशु दादी सदा तन से, मन से, हर प्रकार से बाबा की सेवा पर तत्पर रहती थीं। प्यारे बाबा को जब बच्चों के पत्र आते थे एवं बाबा जब बच्चों को पत्र लिखते थे तो दादी ही इस बात का ध्यान रखती थीं कि कौन सा पत्र बाबा को देना है या किसका सिर्फ सार ही बतलाना है। बाबा बच्चों को याद-प्यार, विशेष कोई डायरेक्शन, श्रीमत या किसी प्रकार का उत्तर देने के निमित्त सिंधी भाषा में, अपनी लाल पेंसिल से लिखते थे। बाबा के अक्षर इतने महान और विशाल होते थे कि सबके लिए पढ़ने मुश्किल होते थे। बाबा की लाल पेंसिल के बड़े-बड़े अक्षरों पर ईशु दादी अपने मोती जैसे छोटे-छोटे अक्षर लिखती थीं। ईशु दादी सिंधी समझने वाली दादियों अथवा भाई-बहनों के लिए सिंधी में और हिंदी समझने वाले भाई-बहनों के लिए हिंदी में लिखती थी। शुरू-शुरू में हमने देखा कि हमारी मीठी जगदंबा मां पंजाबी में पत्र लिखती थीं, जिसे ईशु दादी बाद में हिंदी या सिंधी में लिखती थीं।

स्वच्छ दिल वाली वरदानीमूर्त

एक बार हम कुछ बहनों की मीटिंग थी जिसमें ईशु दादी भी हमारे साथ ही बैठीं थी। मीटिंग में एक बहन ने दादी से पूछा कि आपके पास हमारे इतने पत्र आते हैं और बाबा उनका जवाब हमें लिखते हैं तो दादी, आपको हमारा सब कुछ मालूम होता होगा। जब हम आपके सामने आते हैं तो आपको हमारे पत्र में लिखी हुई वो बात याद आ जाती होगी। ईशु दादी कहते हैं कि मुझे बाबा का यह वरदान है कि मैं

उनसे सदा हल्केपन का वाइब्रेशन आता था। वे सबकी दृष्टि से सेवा करती रहीं। उनमें हमें साकार बाबा दिखाई देते थे।



पत्र पढ़ती हूं, बाबा को सुनाती हूं और बाबा जो जवाब देते हैं उसे लिखती हूं मगर उसके बाद भूल जाती हूं। इसलिए आपने क्या लिखा, मुझे कुछ मालूम नहीं है। ऐसी वरदानीमूर्त दादी ब्रह्माबाबा के अन्तिम समय तक साथ-साथ रहीं।

दादी में दिखते थे साकार बाबा

यज्ञ का इतना विशाल हिसाब-किताब संभालते हुए भी दादी हमेशा ही बहुत न्यारी और सर्व की प्यारी रहीं। उनसे सदा हल्केपन का वाइब्रेशन आता था। वे सबकी दृष्टि से सेवा करती रहीं। दादी ऐसी न्यारी-प्यारी आत्मा रहीं कि उनमें हमें साकार बाबा दिखाई देते थे ।

बाबा का इशारा एक क्षण में समझ जाती

जैसे बाबा का कहना है कि देवताओं के लिए इशारा ही बहुत है, ऐसे ही हमारी ईशु दादी प्यारे बाबा का इशारा एक पल में समझ जाती थी। बाबा के मन में क्या है, क्या उत्तर है, क्या प्रश्न है, क्या पूछना है, क्या बतलाना है, सब एक क्षण में समझ जाती थी। ऐसी बहुत-बहुत विशेषता संपन्न आत्मा जो कि सर्व को सहयोग देकर गई, उनकी याद सर्व को प्यारे बापदादा की ओर खींचती है।

जितनी न्यारी, उतनी प्यारी

ईशु दादी बहुत-बहुत न्यारी और उतनी ही प्यारी रहीं। ईशु दादी अन्य दादियों के अंग-संग संपन्न एवं संपूर्ण हो करके रहीं। मधुबन आने पर हर पल उनकी याद और किए हुए श्रेष्ठ कर्म स्मृति में रहते हैं।



दादी जी के रोम - रोम में बेहद का वैरागीपन भरा हुआ था



राजयोगिनी बी.के. कमलेश
सबज़ोन डायरेक्टर
ब्रह्माकुमारीज़, कटक

साकार बाबा के समय से मैं दादी के साथ रही। बाबा से मिलने से पहले मैं दादी से मिलती थी। जितनी भी प्राइवेट बातें होती, मैं दादी को चुपचाप बताती थी और बाबा भी कहते थे कि ईशु को सुनाओ। इसलिए मेरा दादी के साथ बहुत नजदीक का संबंध रहा है। वो मेरी दादी भी थी और सखी भी थी। दादी मुझसे गले मिलते हुए बड़े प्यार से कहती थी, 'अरे कमलेश तो मेरी सखी है। "हर बारी जब मैं दादी से मिलती थी तो वह कुछ ना कुछ सौगात जरूर देती थी चाहे मैं कितना भी मना करूँ। मैं बड़े प्यार से उस सौगात को स्वीकार करती थी। दादी जितनी गंभीर उतनी ही रमणीक भी थी। जितना उनके बारे में कहें उतना कम होगा। बाबा की भंडारी थी और गुणों की भी भंडारी थी।

सृष्टि का यह नियम है, राव-रंक, साधु-सन्यासी, महात्मा, देवात्मा, पुण्यात्मा, पापात्मा सभी को एक न एक दिन जाना ही है। पार्थिव शरीर तो विलीन हो ही जाता है लेकिन विलीन नहीं होते उनके कर्म, गुण एवं महिमा। इस धरा पर ऐसी कुछ आत्माएं आती हैं जिनके चित्र, चरित्र सब के दिल रूपी पन्ने पर छप जाते हैं। उनमें से एक हैं हम सभी की प्यारी ईशु दादी जी।

इस धरा पर ऐसी कुछ विशेष आत्मायें आती हैं, जिनके चित्र, चरित्र सबके दिल रूपी पन्ने पर छप जाते हैं



मीठी दादी जी का सन् 2018 में जगन्नाथ धाम उड़ीसा में आगमन हुआ था। पुरी, भुवनेश्वर चक्कर लगाते हुए 28 अप्रैल को कटक, विश्व-शान्ति सरोवर पहुंचे थे। उड़ीसा के सारे भाई-बहनों के बीच प्रेरणादायी आशीर्वचन दिये थे कि हमेशा हिसाब-किताब में स्वच्छता, सच्चाई और सत्यता रखें क्योंकि कोई हमें देख रहा है। खुद और खुदा देख रहा है। दादी जी हमारे पास करीब 15 दिन रुके। रोज क्लास में दादी जी भाई-बहनों को यज्ञ के आदि की कहानियां सुना कर भरपूर करते थे, बहनों को भी भरपूर किया।

दादी जी के रोम-रोम में बेहद वैरागीपन भरा हुआ था, जो उनके शब्दों से हमें अनुभव होता रहा। उनकी बात हमारे दिल में अमिट छाप बन कर सदा रहेगी। दादी जी को हमने कहा, दादीजी, चलिए 'फैनी" तूफान ने कैसी विनाश लीला रची है, देखने चलते हैं। दादी जी ने तुरंत कहा, पुरानी दुनिया को क्या देखना, हमें तो स्वर्ग में जाना है।

दादी जी के बोल मीठे और नशे वाले होते थे। कम खर्च बालानशीन की उनकी धारणा वर्णन नहीं की जा सकती। दादी जी के अव्यक्त आरोहण से कुछ दिन पहले मार्च में हम दोनों बहनें विश्व कल्याणी भवन में मिलने पहुंचे। दादी जी बड़े प्यार से मिले, बातचीत की। उसी बीच सुलोचना बहन ने कहा, दादी जी, आप तो बुजुर्ग हो गये हो। दादी जी ने बड़े नशे और खुशी से कहा, मैं क्यों बुजुर्ग होंगी, मैं तो बाबा की नन्हीं सी, छोटी सी बच्ची हूँ। किसको पता था कि हमारी दादी के साथ वह अंतिम मुलाकात होगी।

हे पुण्यात्मा, आपकी अंतिम यात्रा में भी न जनता की भीड़, न यज्ञ के धन का खर्च, इससे आपकी सरलता का, सादे जीवन का संदेश सबको मिला।



ईशु दादी जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था



राजयोगी
डॉ. बी.के. मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

ईश्वरीय परिवार की अलौकिक, दिव्य श्रृंगार, सर्व ब्राह्मण कुलभूषण स्नेही परम आदरणीय ईशु दादी जी त्याग, तपस्या और सत्यता की अवतार थी। अत्यंत अल्पायु में ही परमात्मा के सत्य स्वरूप और उनके द्वारा नवयुग के निर्माण के निमित्त कराए जा रहे अलौकिक कर्म को पहचान कर, अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया था। पिताश्री ब्रह्माबाबा ने दादी जी में छिपी हुई महान प्रतिभा और निष्ठा को पहचानते हुए यज्ञ के आर्थिक कारोबार का उत्तरदायित्व जिस विश्वास के साथ सौंपा था, वफादार दादी जी उसका निर्वहन अंतिम सांस तक करती रही। दादी जी 'एकनामी और इकोनॉमी भव" का प्रत्यक्ष उदाहरणमूर्त थी। वे व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए एक रुपैया भी बड़ी दादी जी की आज्ञा लेकर ही खर्च करती थी।

दादी जी का सादा जीवन, निर्माणचित्त और निर्माणचित्त रहकर ईश्वरीय सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देता है। संपर्क-संबंध में आने वाले भाई-बहनों को दादी जी सदा यज्ञ के कारोबार में कम खर्च बालानशीन बनकर सेवा करने तथा अपने धन-साधनों को ईश्वरीय सेवा में सफल करने की प्रेरणा देती थी।

ईशु दादी जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे यज्ञ की स्थापना के प्रारंभिक दिनों में पिताश्री ब्रह्माबाबा के द्वारा सिंधी भाषा में लिखे गए पत्रों का हिंदी अनुवाद करके लिखते थे। मातेश्वरी जगदम्बा, दीदी

पिताश्री ब्रह्माबाबा ने यज्ञ के आर्थिक कारोबार का उत्तरदायित्व दादी जी को सौंपा, जिसका निर्वहन उन्होंने अंतिम सांस तक किया



मनमोहिनी, दादी प्रकाशमणि, गुलजार दादी सहित यज्ञ की सभी वरिष्ठ दादियों के स्नेहपूर्ण संबंध में रहकर ईशु दादी जी ने यज्ञ-कारोबार को सत्यनिष्ठा के साथ संभाला, जो हम सभी के लिए अनुकरणीय है।

ईशु दादी जी ने फाइनेंस से संबंधित कोई औपचारिक डिग्री नहीं ली थी परंतु उनका हिसाब-किताब इतना पक्का रहता था कि कोई भी उसमें कभी कमी नहीं निकाल पाया।

ईशु दादी जी आज स्थूल शरीर से हमारे बीच नहीं हैं परंतु अपने दिव्य व्यक्तित्व और कृतित्व से सदा हम सभी के साथ हैं। उनका अलौकिक गौरवशाली जीवन हम सभी के लिए अनुपम उदाहरण है। ऐसी महान आत्मा ईशु दादी जी को कोटि-कोटि वंदन। आप विश्व परिवर्तन और नवनिर्माण के कार्य को तीव्र गति से संपन्न करने के लिए सूक्ष्म रूप से हम सभी का सतत् मार्गदर्शन करती रहेंगी।



सरल व्यक्तित्व, जिम्मेवारी के प्रति सतर्क



राजयोगिनी बी.के. गीता
मुख्यालय संयोजिका
व्यापार एवं उद्योग प्रभाग,
आर.ई.आर.एफ.

स्वयं भगवान ने ब्रह्मा द्वारा फुर्सत से अपने हाथों से जिन रत्नों को घड़ा एवं तैयार किया, उनमें से एक अनन्य रतन, जिसका बहुत ही बड़ा लेकिन गुप्त योगदान भगवान के कार्य में रहा, वो हैं हम सबकी प्यारी परम आदरणीय ईशु दादी जी जिन्होंने जीवन के समर्पण के प्रथम कदम से ही शांतिपूर्ण और संतुष्टतापूर्ण जीवन व्यतीत किया और बाबा के कार्य में साथी बनी। हम 1969 में ज्ञान में आए और शुरू से ही प्रकाशमणि दादी जी के साथ हमारे परिवार का संबंध रहा। प्रकाशमणि दादी जी की परछाई ही कहो, वो हमारी ईशु दादी जी रहे। इसलिए शुरू से ही ईशु दादी जी से मिलना होता रहा। दादी जी में यज्ञ के प्रति, बाबा के प्रति, बड़ी दीदी के प्रति और बड़ी दादी के प्रति बहुत ही वफादारी हमने देखी। आज दुनिया में किसी संस्था के फाइनेंस डिपार्टमेंट को संभालने वाला हो तो वो खुद भी कितनी सुविधाएँ लेगा लेकिन ईशु दादी जी में इतनी सच्चाई-सफाई थी, कोई को पता भी नहीं चलता था कि इतनी सादी-सरल दादी, इतना बड़ा महत्वपूर्ण फाइनेंस डिपार्टमेंट संभाल रही हैं। दादी जी ने ब्रह्माबाबा के साथ भी पूरा ऑफिस वर्क किया। बड़ों के साथ कारोबार करने में बहुत सारी बातें जानने को मिलती हैं पर दादी ने कोई अंदर की बात किसी को बताई नहीं। ऐसी वफादार रत्न जिस संस्था में हो तो क्यों नहीं वह संस्था आगे बढ़ेगी।

जब ज्ञानसरोवर बनने लगा था और हमारा वहां सेवा पर रहना हुआ तो शुरू में हम दादी को कहते थे कि आप यहां आकर मुरली सुनाओ। मैं तो दादी से बहुत छोटी थी लेकिन फिर भी दादी ने कहना माना

कोई को पता भी नहीं चलता था कि इतनी सादी-सरल दादी, इतना बड़ा महत्वपूर्ण फाइनेंस डिपार्टमेंट संभाल रहीं हैं



ईशु दादी के साथ रतनमोहिनी दादी, शांतामणि दादी और मनोहर इंदिरा दादी

और तीन-चार बार मुरली सुनाने ज्ञानसरोवर आए। ऐसे दादी जी बहुत ही सरल व्यक्तित्व वाली और अपनी जिम्मेवारी के प्रति बहुत ही सतर्क रहीं। ऐसी थीं हमारी गुणमूर्त दादी।

निष्ठा से चलना, सारी बातों को समाना और निरंतर यज्ञ के प्रति वफादार रहना, यह दादी में हमने देखा। पिछले 27 वर्षों से मैं भी मधुबन यज्ञ में सेवा कर रही हूं। इतने वर्षों से मैंने अपनी आंखों से दादी को बड़ी वफादारी से सारा कार्य करते हुए देखा। हमें भी जीवन में सीखने को मिला कि हमें यज्ञ के प्रति अपना पूरा बलिदान देना है परंतु सरल, संतुष्ट भी रहना है और कहीं भी वर्णन नहीं करते रहना है। गुप्त सहयोगी बनना है और बड़ों को निश्चिंत रखना है। ऐसी दादी जी को मैं हृदय से श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं ।



बी.के. सतीश

मुख्यालय संयोजक
ब्रह्माकुमारीज़, कला एवं संस्कृति
प्रभाग, माउंट आबू

दादी का दोनों बाहें खोलकर अपनी बेहद खुशी का इजहार करना, भुलाए नहीं भूल सकता

उजाले उनकी यादों के...

आदि रत्नों में रत्न विशेष ईश्वर के समीप साथी थीं ईशु दादी। दादियों को याद करते हैं तो बाबा की बड़ी याद आती है और याद आता है- जिसकी रचना इतनी सुंदर वो कितना सुंदर होगा। उनकी खूबियां याद कर स्वयं पर भी गर्व होता है तो आश्चर्य भी होता है। सचमुच ब्रह्मा बाबा ने एक अलग ही ढांचे में उनका निर्माण किया था। ईशु दादी रतनगर्भा थीं। उनमें यज्ञ के प्रति संपूर्ण निष्ठा, ईमानदारी, वफादारी और सागर की तरह गहन गंभीरता भी देखी। एकनामी और इकोनॉमी की वह अवतार थीं। यज्ञ को रिचेस्ट इन द वर्ल्ड बनाने में दादी जी की महती भूमिका रही। लघु से लेकर विशाल यज्ञ की वित्तीय व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना दादी जी की सबसे बड़ी विशेषता थी। मन में आता था कभी कि दादी यज्ञ के खर्चों के बारे में किसी से तो चर्चा करती होंगी लेकिन यह तो जैसे कि उनके स्वभाव में ही नहीं था। सागर तो फिर भी कभी उछलता भी है लेकिन उन्हें गंभीरता की प्रतिमूर्ति देखा। वह ब्रह्मा बाबा की चित्रगुप्त थीं। कितने गोपनीय दस्तावेज एवं बातें दादी जी को ज्ञात थी तो भी कभी किसी को कुछ भी कहते नहीं सुना। जब हम सन् 1978 में यज्ञ में आए तो सेवाकेंद्र की कई ऐसी बातें दादी जी को ज्ञात थी लेकिन उन्होंने कभी उसका जिक्र नहीं किया। एक बार दादी जी पुराने भोजनालय में रेवना सेवाकेंद्र के भाई कौन है ऐसा कहते हुए मिलने आईं तभी से विधिवत परिचय हुआ। हम दादी प्रकाशमणि जी को अपना मासिक चार्ट, पत्र की तरह लिखकर दिया करते थे तो दादी जी भी पढ़ती व सुनती थीं। कई बार दादी को मम्मा के कमरे में जब

मैंने गीत सुनाया तो दादी जी भी उस पल की साक्षी रहीं। वे सुनती थीं और प्रोत्साहित भी करती रहीं। हम दो भाई लौकिक में मधुबन में हैं। मन में था कि दादी ईशु एवं लच्छू दादी दोनों सगी बहनों में कुछ संबंध खींचता तो होगा लेकिन ऐसा कहीं नहीं दिखा। इस पर ताज्जुब तो तब हुआ जब 35 वर्ष बीतने के बाद दादी जी ने एक बार पूछा कि आप और प्रेम दोनों सगे भाई हैं क्या? तब मुझे लगा कि दादी कितनी सरल चित्त हैं। ऐसे तो 40-45 वर्षों में अनेक बार दादी जी से मिलना होता रहा किंतु अंतिम दिनों में दादी जी से सोलर प्लांट में मिलना अविस्मरणीय हो गया। नित्य प्रति दादी जी को सामने से मिलकर कुछ गीत की पंक्तियां गुनगुनाना और दादी का दोनों बाहें खोलकर अपनी बेहद खुशी का इजहार करना, भुलाए नहीं भूल सकता। विश्व के अलौकिक इतिहास की दमकती नक्षत्र की भांति वह हृदयाकाश में हमेशा ही कायम रहेंगी। धन्य है दादियां और धन्य हैं ईशु दादी जी।

ईशु दादी ईश्वर के साथ रहीं

बी.के. सतीश
मुख्यालय संयोजक, ब्रह्माकुमारीज,
कला एवं संस्कृति प्रभाग, माउंट आबू

दिन, महीने, वर्ष बीतते जायेंगे
हर घड़ी वो याद हमको आयेंगे
ईशु दादी ईश्वर के जो साथ रही
आदि रतन वो हमसे दूर न जाएंगे
ओ दादी हम तुमको भूल न पाएंगे

भाई दूज पर बहना बनकर आई हैं
अनुभव होता तिलक मिठाई लाई हैं
आज्ञाकारी, वफादार हम जैसे रहे
तुमको ऐसा बनना हमें सुनाई हैं
खूबियां हम उनकी गा न पाएंगे
ओ दादी हम तुमको भूल न पाएंगे

रोशनी की ये दौलत देने वाली
जिनकी बदौलत हमें मिली दिवाली
खुद को जलाके जग को उजला है किया
मिली है मस्ती महफिल है ये मतवाली
कैसे हम एहसान भला चुकाएंगे
ओ दादी हम तुमको भूल न पाएंगे

बाबा जो कहते हैं करके दिखाना है
दादियों सा जीवन हमें बनाना है
सेवा अधूरी पूरा करके जल्दी वो
सतयुग में दीवाली साथ मनाना है
खुशियों में हम तुमसा झूमते गाएंगे
ओ दादी हम तुमको भूल न पाएंगे





दादी जी में फुलस्टॉप लगाने की शक्ति बेमिसाल थी



डॉ. बी.के. सविता
मुख्यालय संयोजिका
महिला प्रभाग, आर.ई.आर.एफ.

मेरा पहली बार ईशु दादी जी से परिचय हुआ जब मैं 1990 में मधुबन डिस्पेंसरी में सेवा में आई, तब मैं उन्हें डिस्पेंसरी के पीछे बने ऑफिस में बैठे हुए देखती थी। दादी प्रकाशमणि जी के नाम आने वाली अथवा अन्य पोस्ट ईशु दादी जी ही देखते थे, दादी जी को पढ़कर सुनाते थे फिर दादी प्रकाशमणि जी जो जवाब देते, उसे लिखकर पोस्ट में भेजते थे यानि जैसे ईशु दादी ब्रह्माबाबा के साथ पोस्ट की सेवा में सहयोगी थे, अब दादी जी के साथ वो यही सेवाकार्य संभाल रहे थे। जब मुझे ग्लोबल हॉस्पिटल में कार्य करते हुए समस्या आई तो मैंने दादी प्रकाशमणि जी को पत्र लिखा और ईशु दादी जी को दिया, मुझे तुरंत उसका समाधान मिला। एक बार दोबारा भी मैंने दादी जी को पत्र लिखा था, तब भी मुझे तुरंत उसका उत्तर मिला था, यह दादी जी की विशेषता थी।

मैंने उन्हें मोहिनी दीदी तथा दादी प्रकाशमणि जी के अंग-संग देखा। दादी प्रकाशमणि जी भी उसी ऑफिस में बैठते थे, ईशु दादी टेबल-कुर्सी पर और दादी प्रकाशमणि उसके साथ लगे सोफे पर बैठे होते थे और किसी को भी कार्य होता तो दादी प्रकाशमणि जी से वहीं बात करते थे। जब ईशु दादी की तबीयत कभी नीचे-ऊपर होती तो मुझे बुलाते, मैं उनको दवाई देती। एक दिन बाद ही दादी मुझे कहती, मैं तो एक गोली में ही ठीक हो गई। दादी जी का जीवन एकदम सादा था। एक बार किसी कारण से ईशु दादी के कमरे में जाना हुआ तो यह देखकर हैरानी हुई कि दादी जी बहुत छोटे गली जैसे कमरे में रहते थे जिसमें सिर्फ एक पलंग और कुछ थोड़ा सा सामान रख सकते थे। उसमें वह पूर्ण संतुष्ट थे। उन्होंने दादी प्रकाशमणि जी से कभी अपने लिए अधिक सुविधाओं की मांग नहीं की। ईशु दादी एकनामी, इकोनॉमी के अवतार थे। शांत और गंभीर स्वभाव उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। आवश्यकता से अधिक मैंने उनको बोलते हुए

एक बाप दूसरा न कोई,
एक बल एक भरोसा,
इस तपस्या में मगन मैंने
उनको सदा देखा



शंकर सागर सेंटर, मुंबई (1966) शिवरात्रि के पर्व पर ब्रह्मा बाबा के संग रतनमोहिनी दादी, ईशु दादी एवं शील दादी

नहीं सुना। कभी फुर्सत में बैठकर इसकी-उसकी बातें करते नहीं सुना। दादी प्रकाशमणि जी की सेवा में जब शांतिवन में मैं रहने लगी तब मैंने बहुत करीब से ईशु दादी को देखा। ईशु दादी इतनी गंभीर थी कि कभी कोई राज उनके मुख से वर्णन नहीं होता था इसलिए वो दादा जी के विश्वासपात्र थे। नाखून में छुपा कर कहने वाली बात भी उन्हें मालूम होती थी। दादी प्रकाशमणि जी के हाथ में कोई भी, कुछ भी यज्ञ में सहयोग देकर जाते थे, वह उसे तुरंत ईशु दादी को पकड़ा देते थे। ईशु दादी अपने पास एक साधारण पर्स या थैला रखते थे, उसमें रखते जाते थे और उसी दिन ही अकाउंट ऑफिस में जमा कर देते थे। ईशु दादी शांतिवन में अकाउंट ऑफिस में भी जब समय मिलता था, बैठते थे। उनकी सहनशीलता, समाने की शक्ति, परखने की शक्ति, फुलस्टॉप लगाने की शक्ति बेमिसाल थी। कभी कोई उनसे जोर से बोलता या अपमान भी करके चले जाते तो भी दादी जी शांत रहते थे। कभी पलट कर जवाब नहीं देते थे। शांतिवन में ईशु दादी, दादी कॉटेज के पीछे के कमरे में रहते थे। मुझे दादी जी के स्वास्थ्य के कारण कॉटेज में सोना होता था तो दादी प्रकाशमणि जी के पास मुन्नी दीदी सोते थे और मैं ईशु दादी जी के कमरे में दूसरे बेड पर सोती थी। मैं रात को 11:15 बजे या 11:30 बजे कमरे में पहुंचती थी। कोई कमरे में आता है, तो कितना भी ध्यान रखो, थोड़ी आवाज होती है, नींद खुल सकती है पर मैंने देखा, दादी जी इतनी सहज थी, उन्होंने मुझे कभी भी कुछ नहीं कहा, न टोका। कभी-कभी रात को देर से सोने के कारण मैं अमृतवेले के बाद सो जाती थी, दादी जी समय से उठ जाते थे, पर वो मुझे सोने देते थे, कभी डिस्टर्ब नहीं करते थे। दादी प्रकाशमणि जी के अव्यक्त होने तक तो ईशु दादी को कोई ब्राह्मणी यानि संभाल करने वाली बहन नहीं थी, वो कभी इसकी इच्छा भी नहीं रखते थे और अपने सभी कार्य स्वयं करते थे। उन्होंने बाबा के यज्ञ में शुरू से ही त्यागी, तपस्वी जीवन जिया। एक बाप दूसरा न कोई, एक बल, एक भरोसा, इस तपस्या में मगन मैंने उनको सदा देखा। ईशु दादी सदा अनासक्त और उपराम रहे, उन्हें सांसारिक वस्तुओं का आकर्षण नहीं था। दादी जी को कितनी ही मूल्यवान सौगातें मिलती थी, सब यज्ञ में जमा करा देते थे। उनका अपनी कर्मेन्द्रियों पर पूरा अधिकार था। यद्यपि दादी जी ने वाचा द्वारा इतनी सेवा नहीं की लेकिन अपने स्वरूप से, वाइब्रेशन से, चलन से सभी के लिए लाइट-माइट हाउस थे। शांति के प्रकम्पन हमेशा उनसे अनुभव होते थे। अपने दो बोल से ही वे सब में खुशी, उमंग भर देते थे। दादी प्रकाशमणि जी के अव्यक्त होने के बाद स्टेज प्रोग्राम में जब उन्हें बोलने को कहते थे तो भी अधिक नहीं बोलते थे, लेकिन जो भी थोड़े वरदानी बोल दादी जी के होते थे, उसमें ही आत्माएं खुशी और आनंद से भरपूर हो जाती थीं। कभी-कभी ईशु दादी साकार बाबा के समय के अपने अनुभव सुनाते थे। यज्ञ के आदिरत्न आदरणीय ईशु दादी बापदादा के समीप, समान, अनमोल रत्न थे। उनका जीवन सदा ही ब्रह्मावत्सों को प्रेरणा देता रहेगा। जब भी दादी प्रकाशमणि जी को याद करेंगे, ईशु दादी भी याद आयेंगे।



ईशु दादी मन से सदा मधुबन में रहती थीं



राजयोगिनी बी.के. कुलदीप
निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, हैदराबाद

यज्ञ की शुरुआत में जब ब्रह्माबाबा ने सर्वस्व समर्पण किया तो हम सबकी अति स्नेही, अति आदरणीय, आदिरत्न ईशु दादी की ऑनेस्टी को देख करके यज्ञ में फाइनेंस (वित्त) का कारोबार उन को सौंपा था।

मेरा परम सौभाग्य रहा है कि बचपन से ही ईशु दादी जी की स्नेह भरी पालना प्राप्त होती रही। दादी जी का लगभग तीन-चार बार शांति सरोवर में आना हुआ और वे कहा करती थी कि मुझे शांति सरोवर बहुत अच्छा लगता है, यहाँ आने का बार-बार दिल करता है। शांतिवन में जब भी मैं दादी जी से मिलने जाती थी तब बीमारी के समय में भी वे मुझे अच्छी तरह पहचान लेती थी और कहा करती थी कि तुम बहुत दिनों के बाद मुझसे मिलने आती हो। दादी जी के अंदर यज्ञसेवा के प्रति इतना गहरा प्यार था कि जब तक यज्ञसेवा ना हो तब तक भोजन स्वीकार नहीं करती थी। चिकित्सा लाभ हेतु कुछ समय दादी जी का हैदराबाद आना हुआ तब हमने देखा कि दादी जी मन से तो सदा मधुबन में ही रहती थी, उन्हें यह स्मृति ही नहीं रहती थी कि वे हैदराबाद में हैं। दादी जी हमसे ही पूछ लिया करती थी कि तुम मधुबन से वापिस कब जा रही हो! तब मैं कहती थी, दादी जी, आप इस समय हैदराबाद में हैं। दादी जी कहती थी कि नहीं, मैं तो मधुबन में हूँ। इस तरह दादी जी सदा स्वयं को मधुबन में ही बाबा के साथ अनुभव करती थी।

दादी जी की शारीरिक आयु भले ही कितनी भी हो गई थी लेकिन उनकी स्मरण शक्ति और परख शक्ति बहुत तेज थी। एक बार की बात है, एक माता ने यज्ञसेवा हेतु दादी जी को चेक दिया जिसमें उसने

उनके योगी नयन थे और उनमें बाबा के प्रति असीम प्यार छलकता था



पांडव भवन (मधुबन) के आंगन में ईशु दादी के साथ शीलू दीदी और लच्छू दादी

राशि तो लिख दी लेकिन साइन करना भूल गई। दादी जी ने चेक देखते ही तुरंत कहा कि आपने साइन तो किया ही नहीं है, आपके साइन के बिना यह चेक काम नहीं आएगा। यह देखकर हमें इतना आश्चर्य हुआ और ऐसा लगा कि शायद इतना ध्यान तो हम भी नहीं देते हैं जितना दादी जी का ध्यान है।

दादी जी हमें अपने हाथ की घड़ी दिखाते हुए कहा करती थी कि ये घड़ी मुझे साकार बाबा ने दी है इसलिए ये मैं किसी को भी नहीं दूँगी। चाहे आप मुझे सोने की घड़ी भी दे दो तो भी ये घड़ी मैं नहीं दूँगी क्योंकि ये साकार बाबा के हाथ से मिली हुई अनमोल सौगात है, इतना दादी जी का बाबा के प्रति प्यार और भावना थी।

दादी जी सदा सभी को खुशी से भरपूर कर देती थी। ताली बजाकर सभा में दादी जी कहा करती थी कि मुझे बाबा मिला, इतना बेहद का परिवार मिला, मैं तो बहुत खुशनसीब हूँ, आप सब भी सदा खुश रहो। बीमारी के समय में भी वे सदा प्रसन्नचित्त रही। दादी जी सदा उपराम तथा बेहद की वैराग्यवृत्ति वाली थी, साथ ही सदा योगयुक्त रहा करती थी। उनके योगी-नयन थे और उनमें बाबा के प्रति असीम प्यार छलकता था। दादी जी की रूहानी दृष्टि पाकर हम गद्‌गद हो जाते थे। सिर पर हाथ रखकर दादी जी मुझे अपने दिल की दुआएँ और आशीर्वाद देती थी और कहती थी, तुम बहुत प्यारी हो, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो।

दादी जी, आपकी दी हुई शिक्षाएँ, आपके दिव्य कर्त्तव्य, आपके श्रेष्ठ कदम हमें सदा आपकी स्मृति दिलाते रहेंगे। जैसे आप सदा त्यागी-तपस्वी, यज्ञ स्नेही तथा ऑनेस्टी के अवतार बनकर रहे, ऐसे हम भी आपके कदमों पर कदम रखकर, आपके सभी गुणों को जीवन में धारण कर आपकी पालना का सबूत देंगे क्योंकि आपने डायरेक्ट बाबा से पालना ली, आपके द्वारा हमें पालना मिली। दादी जी, हम सबके दिलों में आपका वास है, हमें लगता है कि हमारी दादी हैदराबाद में हमारे साथ-साथ है, मधुबन में भी आपकी छवि हम सदा देखते रहेंगे। दिल की यही शुभभावना है कि दादी जी जहां भी होंगे उनके द्वारा बाबा का नाम बहुत-बहुत उज्ज्वल होता रहेगा।

ऐसे सदा न्यारी और प्यारी रहकर सबको निस्वार्थ प्यार बाँटने वाली, सबके प्रति सदा शुभ भावनाएँ रखने वाली हमारी दादी जी अब अव्यक्त वतनवासी बनकर अपने सभी साथियों के साथ मिलकर एडवांस सेवाएँ कर रही है। ऐसी महान विभूति को हम सबका शत्-शत् प्रणाम।



दादी जी का साथ मानों फरिश्ते का साथ



बी.के. बीना
सर्विस कोऑर्डिनेटर, ब्रह्माकुमारीज़
अन्ना नगर, चेन्नई

मैं बचपन में जब भी मधुबन जाती थी, ईशु दादी जी को हमेशा हँसते हुए आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी के साथ देखती थी। मेरे मन में उनके प्रति यही भावना थी कि यह ऑफिस वाली दादी जी हैं। कॉलेज पढ़ते समय जब मैं मुम्बई के गामदेवी सेंटर पर जाती थी, तो आदरणीया शील दादी जी के साथ खरीदारी में मदद करती थी और उनके साथ सेवाकेंद्र का हिसाब भी रखती थी। इस कारण भी ईशु दादी जी से सम्पर्क रहा। मधुबन में जब ओमशांति भवन बना तो निर्माण कार्य के लिए जरूरी साधन और सेवाओं के लिये भी काफी खरीदारी मुम्बई से होती थी। मुझे अच्छी तरह याद है, सिंधी भाषा में मुरली की पॉइंटस् लिखकर ईशु दादी जी मधुबन से शील दादी के लिए भेजते थे। मुम्बई से आदरणीया शील दादी जी भी लगभग रोज मधुबन पत्र भेजती थी। मेरा लौकिक घर मुम्बई सेन्ट्रल स्टेशन के पास ही था। सेंटर से लौटते समय मैं रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में पत्र डालकर आती थी। चेन्नई की सेवाओं के समय भी आदरणीया रोजी बहन जी के साथ भी, ईशु दादी जी से संपर्क बना ही रहा। शांतिवन में भी दादी कॉटेज में हमेशा वे उपस्थित रहती थी। जब भी मैंने उनसे पूछा, आपकी तबीयत कैसे है, हमेशा मुस्कुराते हुए कहती थी, मैं बिलकुल ठीक हूँ। आदरणीया ईशु दादी जी दो वर्ष पहले चेन्नई पधारे। पांच दिन दादी जी हमारे साथ रहे। हमें ऐसा ही लगा जैसे हम मधुबन में हैं। सेन्टर का वातावरण योगयुक्त मधुबन जैसा बन गया। सभी समर्पित भाई-बहनों को ईश्वरीय पालना से भरपूर किया, अनुभवों से भरपूर किया। दादी जी के साथ ऐसे अनुभव हुआ जैसे फरिश्ते के साथ ही रह रहे हैं। एकदम हल्की, सन्तुष्ट, निर्माणता की उदाहरण थी। हर बात में दादी जी के मुख से यही निकलता था, बाबा करा रहा है। सबके लिए शुभ भावनाओं से भरपूर दादी जी के संग में रहकर बहुत लाभ उठाया। सर्व दैवी परिवार की तरफ से आदरणीया दादी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि। दादी जी की याद हमेशा के लिए दिल में बसी रहेगी।

हर बात में दादी जी के मुख से यही निकलता, 'बाबा करा रहा है'



पांडव भवन (मधुबन) में ब्रह्मा बाबा के संग दादा आनंद किशोर, दीदी मनमोहिनी,
ईशु दादी और लच्छू दादी

धन की सेवा में दादी जी से मिला सुंदर मार्गदर्शन



बी.के. लता
राष्ट्रीय संयोजिका
न्यायविद् प्रभाग, आर.ई.आर.एफ.

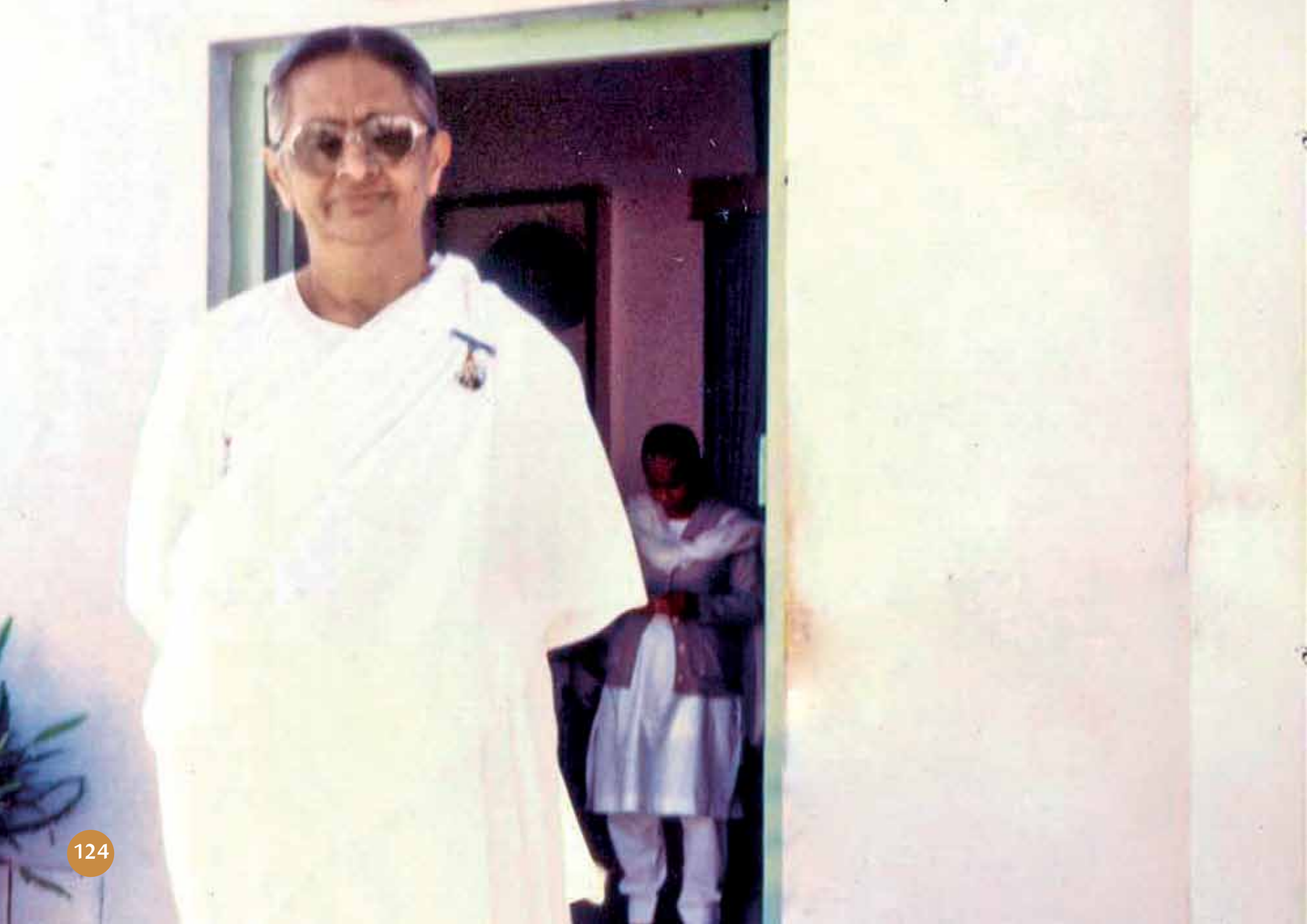
जब से मैं मधुबन में आई तबसे मुझे ईशु दादी जी के प्रति विशेष रूप से आकर्षण रहता था। पहले तो दादी जी से बात करने में संकोच होता था परन्तु जब से मैंने मधुबन में रहना शुरू किया तो कुछ न कुछ कारोबार की वजह से दादी जी से मिलना होता था। दादी जी गंभीरता की मूर्ति तो थी ही परन्तु सरलता एवं स्नेह की भी मूर्ति थी। दादी जी से स्नेह पाकर ऐसे लगता था मानो तपते मन को शीतल झरनों में नहाकर तृप्ति मिल गई हो। दादी जी बेहद सहजता से मिलते थे। उनसे मिलकर मन का बोझ समाप्त होता था और हम एकदम फ़रिश्ते जैसा हल्का महसूस करते थे।

जब भी हमें कहीं जाना होता था तो दादी जी से ही पैसे आदि लेने पड़ते थे। हम दादी जी से जितनी राशी की मांग करते थे तो दादी जी उससे ज्यादा ही देते थे। पूछने पर कहते थे कि बाहर जा रही हो इसलिए हमेशा अपने पास थोड़े अधिक पैसे रखना। साथ-साथ दादी जी कम खर्च बाला नशीन बनना, औरों की सेवा करके यज्ञ का धन बचाना, यह भी सिखाती थी।

दादी जी ने बताया कि बाबा का एक-एक बच्चा, पेट काटकर भी अपनी मेहनत की कमाई से, बड़ी भावना से यज्ञ में धन से सेवा करता है इसलिए बाबा के यज्ञ के एक-एक पैसे की बहुत वैल्यू है, उसे बहुत संभाल कर उपयोग में लाना है।

एक बार मैंने दादी जी से पूछा, दादी जी, हम तो यज्ञ में समर्पित हैं, तो हम धन सेवा कैसे करें? तो दादी जी ने बहुत ही सुंदर रीति से स्पष्ट किया कि हम जो भी चीज़ बाबा के घर में यूज़ करते हैं, जैसे

दादी जी कम खर्च बाला नशीन बनना, औरों की सेवा करके यज्ञ का धन बचाना, यह भी सिखाती थीं



कि बिजली, पानी, भोजन या अन्य कुछ भी, वो वेस्ट ना जाए। जितना आवश्यक है उतना ही यूज़ करें। भोजन का एक कणा भी वेस्ट न जाए। बाबा के यज्ञ में अगर कुछ वेस्ट होता दिखाई दे तो फ़ौरन उसको स्टॉप करें। इस प्रकार यज्ञ में बचत होगी और हमारी धनसेवा होती रहेगी। ऐसे ही अन्य आत्माओं को ज्ञान-योग की पालना देकर उन्हें यज्ञ में धनसेवा करने के लिए प्रेरणा देंगे तो भी हमारी धन सेवा हो जायेगी, ऐसे अति सहजता से दादी जी इतनी बड़ी-बड़ी बातें समझा देती थी।

दादी जी ने अपना पुराना शरीर त्याग किया तब लॉक-डाउन चल रहा था इस कारण हम शांतिवन नहीं आ पाए, दादीजी के अंतिम दर्शन के लिए मन उतावला हो रहा था। योग में दादी जी से बातें चल रही थी, तभी एक बार ऐसा महसूस हुआ कि दादी जी सामने खड़े होकर कह रहे हैं कि मैं कहीं नहीं गई, यहीं हूँ, तुम्हे सदा गाइड करती रहूंगी। दादी जी का ये असीम स्नेह पाकर मन गद्‌गद हो गया। मैं अपने आप को अत्यंत सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे ऐसी प्यारी दादी जी से इतना स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। धन्य हैं दादी जी और उनके आदर्श। ऐसी प्यारी दादी जी को स्नेहपूरित श्रद्धांजलि।



सहनशक्ति की अवतार दादी ईशु जी



डॉ. बी.के. बनारसी लाल
सेक्रेटरी, मेडिकल विंग, आर.ई.आर.एफ.

मने ईशु दादी को 1970 से मधुबन में देखा। दादी में कॉन्फीडेन्स बहुत था। मीटिंग में भी डायरी पेन लेकर चुप रहकर नोट करती रहती थी। जब भी बाबा को किसी सेन्टर पर जाना होता था, तो ईशु दादी को साथ लेकर जाते थे। लोगों को कुछ देना होता था तो बाबा हाथ में कुछ लेते नहीं थे। एक बार त्याग कर दिया, तब से पैसे को बाबा ने हाथ से नहीं छुआ। ईशु दादी सब कुछ संभालती थी। एक-एक चीज का हिसाब रखती थी।

दादी एक छोटी सी चौपड़ी में सब कुछ लिखती थी। पेशेंट के लिये हमको पालनपुर जाना होता था तो दादी से पैसा लेते थे। जितना माँगते थे उतना दादी दे देती थी। फिर पेशेंट को ठीक कराके लाने में कभी महीना लग गया, दो महीने लग गये, या 15 दिन भी लग गये और आ करके हिसाब देते थे तो दादी के पास एक कागज पर सब नोट होता था। दादी हिसाब-किताब में बहुत पक्की थी। आज के चार्टेड अकाउण्टेंट भी उतने पक्के नहीं हो सकते हैं, यह मैं दावे से कह सकता हूँ। दादी अकेले सारे यज्ञ का हिसाब-किताब करती थी, आज उनकी जगह पर काफी भाई-बहनें हैं। यह बात ठीक है कि उन दिनों में सरकार के उतने नियम नहीं थे। अभी बहुत नियम हो गये तो उनका पालन करने के लिये हैण्ड्स तो चाहिए। दादी मेहनत करती थी दिन-रात। किसी कार्यक्रम में बुलाया गया तो दादी जाती थी वरना अपने आफिस में काम करती रहती थी। उनकी कोई ब्राह्मणी नहीं थी, अकेले काम करती रहती थी। बाद में जब दादी को थायराइड हो गया तो बॉम्बे में जाती थी, अनीला बहन, डॉ.लेले से इनकी ट्रीटमेन्ट कराती रहती थी। मैं दादी के साथ जाता था, देखता था, दादी अपने ऊपर एक नया पैसा भी खर्च नहीं करती थी। कहती थी, मेरे ऊपर यज्ञ का पैसा खर्च नहीं करो। दादी का इकोनॉमी पर बहुत ध्यान रहता था। बेगरी पार्ट में भी पैसा कहाँ से आता

कितनी भी बड़ी बीमारी हो, तकलीफ हो, दादी जी के चेहरे पर एकदम शांति रहती

था, कैसे आता था, बाबा जानता था और दादी जानती थी, और किसी को नहीं पता था। बाबा के अव्यक्त होने के बाद ईशु दादी, दादी-दीदी का राइट हैण्ड थी। बाबा की तो थी ही लेकिन दादी अगर कहती, ईशु, इनको इतना दे दो, तो कभी नहीं पूछती थी, क्यों, किसलिए, क्या खरीदना है, नहीं। जी दादी कहतीं और फट से उतने रुपये निकाल कर दे देती थी। बड़े जो कहें, वही करना है। दादी-दीदी के बहुत नजदीक रही।

दीदी कहाँ भी जाती थी तो ईशु दादी को साथ रखती थी। कोई भी मीटिंग हो, उसमें ईशु दादी ना हो, ऐसा कभी नहीं होता था। दीदी-दादी जहाँ हैं वहाँ ईशु दादी जरूर है। बाबा को भी कोई निर्णय लेना होता था तो दीदी-दादी जाती थी बाबा के कमरे में, तो ईशु दादी जरूर साथ होती थी। तीनों ही आत्माएं विचार करती थी मिलकर के। प्लैनिंग करके बाबा को सुनाती थी। ईशु दादी का था इकोनॉमी का संस्कार, गुप्त रहने का संस्कार। बाबा के जाने के बाद दीदी-दादी के साथ रहने लगी तो हर्षितमुखता और रमणीकता आ गई। एक बार की बात है, दादी बीमार हुई, अहमदाबाद में स्टरलिंग हॉस्पिटल में दादी को एडमिट किया। डॉ. देख कर चले गये, तो दादी और हम लोग बैठे थे। कविता बहन भी थी। हमने पूछा, दादी, यज्ञ की कुछ बात सुनाओ, बाबा की कुछ बात सुनाओ। दादी मुस्कुराने लगी कि दादियों के नजदीक रहता है तो इसको सब पता है। हमने कहा, वो सब ठीक है पर कुछ ऐसी बातें हों जो हमको पता ही न हों। तो दादी बोली, एक बात सुनाती हूँ। बेगरी पार्ट था और हम चार बहनों को डायरिया हो गया और इतना डायरिया हो गया कि सुबह से स्नान करते-करते हम सब थक गये थे। विश्व किशोर भाऊ जो यज्ञ का मैनेजर था, उनका ख्याल चला, क्या करें। जेब में हाथ लगाया, जेब में पैसा नहीं। रुम में पैसा ढूंढ़ा तो चार पैसे निकले। वो चार पैसे लेकर दवाई की दुकान पर गया। उसने चार पैसे की एक गोली पकड़ा दी। गोली लेकर दादा आए और सोच रहे थे कि किसको दूँ। इतने में बाबा आ गये। बाबा ने कहा, बच्चे, क्या सोच रहे हो ? उन्होंने कहा, बाबा, चार बड़ी बहने हैं, इनको डायरिया हो गया है। दवाई की दुकान से एक गोली लेकर आया हूँ। किसको दूँ और किसको न दूँ, यही सोच रहा हूँ। बाबा ने कहा, बस, इतनी छोटी सी बात सोच रहे हो। बाबा ने टेबलेट ली, चाकू मंगाया, एक गिलास पानी मंगाया, गोली के चार पीस किये, एक-एक पीस चारों को देकर पानी पिला दिया। सबका डायरिया ठीक हो गया और आज तक डायरिया दुबारा उन लोगों को हुआ नहीं। यज्ञ का कारोबार एक दिन भी दादी ने छोड़ा नहीं। कोई कितनी भी गलती कर दे, जोर से बोले, क्रोध करे पर दादी में गुस्सा देखा नहीं। कभी जोर से बोली नहीं, शांत रहती थी। यज्ञ के अकाउण्ट की कोई भी बात इधर-उधर नहीं करती थी। बाबा पूछते थे, तो बाबा को पूरा हिसाब देती थी। बाबा के जाने के बाद सारे यज्ञ का, सारे सेन्टरों का हिसाब रखती थी। बड़ी दादी को बताती थी।

कितनी भी बड़ी बीमारी हो, दादी एकदम चुप रहती थी। डॉ. आते तो दादी से पूछते थे, दादी, कुछ कहना है। दादी कहती, मेरे को घर भेज दो, मैं अभी ठीक हो गई ना। आप लोगों का बहुत-बहुत थैंक्स है, मुझे जल्दी छुट्टी दे दो। हाँ दादी, आपको जल्दी छुट्टी दे देंगे, डॉक्टर ऐसे बोलकर चले

जाते थे। दादी को एक बार स्टोन गॉलब्लेडर से निकाल करके एक नली में फंस गया। मैं बॉम्बे से आया था, दोपहर का समय था। मैंने सोचा, अभी दादियां सब भोजन कर रही हैं। मैं दादी से हैलो करके ऊपर चला जाऊँ, दादी तो शाम को मिलेगी। सब भोजन कर रहे थे, ईशु दादी भी टेबल पर थी। दादी की नजर मेरे पर पड़ी, दादी ने बुलाया, मुझे कहा, मैं तो भोजन करते-करते आप को याद कर रही थी। ईशु मेरे साथ बैठी है, इसको तकलीफ है, इसको अभी बॉम्बे ले जाना है। हम बोले, जी दादी, ले जाऊँगा। दादी बोली, यहीं बैठो और यहीं खाना खा लो। अपने पास बिठा करके खाना खिलाया और वहीं से अटैची उठा करके हम फिर से बॉम्बे आ गये। ईशु दादी का इतना ध्यान दादी रखती थी।

ईशु दादी को ले गया भाटिया हॉस्पिटल में, एडमिट किया। स्टोन नली में फँसा है, इतनी उनको तकलीफ है लेकिन उनके चेहरे पर एकदम शांति है। कोई आवाज नहीं है। डॉक्टर भी देखकर के हैरान। दूसरे दिन डॉक्टर ने सर्जरी करके निकाल दिया। दादी को छुट्टी मिल गई। दादी में सहनशक्ति बहुत थी, सहनशक्ति की अवतार थी।

दादी ने मुरली कभी-कभी सुनाई होगी लेकिन सेन्टरों पर दीदी के साथ जाती थी तो वहाँ क्लास कराती थी, मुरली सुनाती थी। ज्ञान से लोगों को अच्छा बहलाती थी। लेकिन शो नहीं किया कि मैं क्लास कराती हूँ। यहाँ अपने काम में मस्त रहती थी। बेगरी पार्ट में सबको खुश रखती थी। बाबा-मम्मा उनको मनीप्लान्ट कहते थे। दादी को कोई गोपिका गुप्त रीति से कुछ देकर जाए कि दादी ये किसी को पता नहीं चलना चाहिये तो सचमुच किसी को पता नहीं लगता था, दादी जानती थी, बाबा जानता था। बड़ी दादी को हर बात सुनाती थी। बड़ी दादी, बाबा और ईशु दादी यही जानते थे। आध्यात्मिकता उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

हमारा दादी से बहुत कनेक्शन था क्योंकि पेशेन्ट को ले जाना, ट्रीटमेन्ट कराना, चेकिंग कराना होता था। बीमारों के लिये दादी कभी मना नहीं करती थी। जो माँगा, जितना माँगा, जब माँगा, दादी ने दिया। भले ही आकर हम हिसाब देते थे। दादी कहती थी, बीमार लोगों का ध्यान रखो। सब दादियों का एक ही लक्ष्य था, कोई बीमार पड़े और उसको घर याद आए, नहीं। उनकी यज्ञ से इतनी परवरिश हो कि सब यज्ञ से मिले, यज्ञ से सम्भाल की जाए। दादी सचमुच एक फरिश्ता थी। दादी को कोविड हुआ, दादी बोली, क्यों मेरे को लाए, मैं वहीं ठीक हो जाती, मेरे ऊपर खर्चा नहीं करो। हमने कहा, दादी, आप तो मालिक हो। आपको क्या फिक्र है। दादी कहती, नहीं, यज्ञ का एक-एक पैसा मोहर है, मेरे ऊपर खर्चा मत करो प्लीज, ऐसे दादी बोलती थी, नैन गीले हो जाते थे, इन लोगों का इतना त्याग, तपस्या, सादगी। दादी को हमने बहुत नजदीक से देखा, बहुत सीखा। मेरा भाग्य है कि ऐसी दादी के नजदीक रहने का बहुत-बहुत चान्स मिला। बाबा को थैंक्स देता हूँ, दादियों को भी थैंक्स देता हूँ, इतना नजदीक रखा, इतना प्यार दिया, इतना योग्य बनने का सुअवसर दिया।



दादी जी कभी भी बीमारी से प्रभावित नहीं हुई



डॉ. बी.के. सतीश गुप्ता

वरिष्ठ सलाहकार, कार्डियोलॉजी और मेडिसिन, जी.एच.आर.सी. और ट्रॉमा सेंटर, माउंट आबू

जब-जब ईशु दादी जी की मधुर स्मृतियां मानस-पटल पर उभर कर आती हैं तो अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। ईशु दादी जी खुशनुमा चेहरे वाली, सदा ही सबको आगे बढ़ाने वाली, बहुत ही कम और मीठा बोलने वाली और अपने सरल स्वभाव से सबको सम्मोहित कर लेने वाली थी। ऐसी दादी हमारे बीच तो नहीं है किंतु उनकी स्मृतियां सदा ही साथ रहती हैं और हमें आगे बढ़ाती रहती हैं। जब 1989 में मैं पहली बार दादी जी से मिला तो मैंने देखा, दादी का बहुत ही सरल और नम्रतापूर्ण स्वभाव था। जब हम कभी पांडव भवन में दैवी गुणों की लिस्ट पढ़ते थे तो मैं चेक करता था कि ईशु दादी जी में कैसे सभी गुण समाए हुए हैं, उनके अंदर अंतर्मुखता, संतुष्टता और धैर्य बहुत था। बहुत गंभीर तो थी, साथ में रमणीक भी थी और सत्यता की, पवित्रता की, निर्भयता की मूरत थी। स्वास्थ्य कभी ऊपर-नीचे होता था तो दादी विशेष मुझे याद करते थे। दादी से मैं पूछता था, दादी कैसे हैं आप? दादी कहती थी, मैं तो बहुत खुश हूं, बाबा मेरे साथ है। दादी कभी भी बीमारी से प्रभावित नहीं हुई, दुखी नहीं हुई, कर्मभोग को भी उन्होंने कर्मयोग से चुक्ता किया। बीमार होते भी जैसे ही 10 बजते थे, कहते थे, मुझे ऑफिस जाना है, मेरी ड्यूटी है। उनके अंदर केवल बाबा की याद ही नहीं लेकिन पॉजिटिविटी भी रही। दादी, साकार बाबा की दी हुई एक घड़ी पहनती थी। कई बारी हम मजाक में बोलते थे कि दादी, यह घड़ी मुझे गिफ्ट में दे दो न, मैं पहनूंगा। तो दादी कहती थी, नहीं-नहीं, यह तो बाबा की दी हुइ स्पेशल सौगात है, इसको मैं किसी को नहीं दे सकती हूँ, घड़ी मुझे बार-बार बाबा की याद दिलाती है। दादी का पहले ब्राह्मण स्वरूप तो था ही किंतु फिर फरिश्ता स्वरूप बनता गया, एकदम सबसे उपराम। दादी क्लास में आती, भले दो ही शब्द बोलती थी परंतु उन दो शब्दों में सारी क्लास खुश हो जाती थी। शाम के समय योग करके, फिर गीत बजता था तो सारी क्लास को डांस करा के जाती थी। हमारी आंखें भर आती थी उनके प्यार को, स्थिति को देख कर के। उनसे यही प्रेरणा मिलती है कि हम भी दादी जैसा बनें, बाबा जैसा बनें और अपने चेहरे और चलन से बापदादा को प्रत्यक्ष करें।

दादी जी अपने सरल स्वभाव से सबको सम्मोहित कर लेती थीं



















दादी जी के जन्मदिन पर ईश्वरीय सौगात देते हुए आदरणीय मुन्नी दीदी जी



केक कटिंग करते हुए आदरणीय दादी जी के साथ विद्या दीदी, कविता दीदी, संजय भाई और देव भाई

सेवा का उमंग, खुशी के पंख, उड़ चले हम बाबा के संग




FASTENUP THE SECURITY BELT
धूम्रपान निषेध
सुरक्षा पेटी बाँध कर रखें
FASTENUP THE SECURITY BELT


आबू रोड





दादी जी का इंटरव्यू आज भी बहुत प्रेरणा दे रहा है



बी.के. हरिलाल
कार्यकारी निदेशक
गॉडलीवुड स्टूडियो

आदरणीय ईशु दादी जी से मेरी प्रथम मुलाकात सन् 1966 में हुई थी तब दादी बृजेंद्रा जी के साथ मैं मधुबन गया हुआ था, तब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सिर्फ एक ही कैंपस था पांडव भवन। ईशु दादी साकार बाबा संग ऑफिस में यज्ञ की सेवा का कार्य करते थे। मैंने उसी रूप में उन्हें कई सालों तक देखा।

करीब 50 सालों से मैंने ईशु दादी जी में यही देखा कि वे यज्ञ की हरेक गतिविधि को जानते थे, सम्मिलित भी होते थे किंतु सदैव अपने को न्यूट्रल रखते थे। जैसे बापदादा या दादी कहती थी, उसमें अपनी बुद्धि लगाए बिना उसी प्रकार से कार्य में लग जाते थे। संपूर्ण डेडिकेशन का जो गुण उनमें था वह भी एक वंडर था। मैं खुशनसीब हूं कि गॉडलीवुड स्टूडियो की स्थापना के बाद दादी कई बार यहाँ आए। हालांकि वे कम बोलते थे किंतु लास्ट में जब वे दो-तीन बार आए तो उन्होंने अपने अनुभव भी सुनाए, हमारे साथ बहुत कुछ बातें शेयर की। वे सारे अनुभव हमने अपलोड किए हुए हैं गॉडलीवुड स्टूडियो के ऐप के ऊपर भी और यूट्यूब के ऊपर भी। गॉडलीवुड स्टूडियो में ही उन्होंने इंटरव्यू दिया था और आज भी हम सबको बहुत प्रेरणा दे रहा है। हम सदैव दादी को याद करेंगे, उनका जीवन आदर्श रूप था जो संपूर्ण समर्पण की सीख देता है।

सम्पूर्ण डेडिकेशन का जो गुण उनमें था, वह भी एक वंडर था



ईशु दादी की याददाश्त बेमिसाल थी



राजयोगिनी बी.के. विद्या
सबज़ोन प्रभारी
ब्रह्माकुमारीज़, कानपुर

संगमयुग हीरे जैसा युग है। इस युग में ब्राह्मण परिवार की शान हमारी पूजनीया दादियां हैं, ये हम सब की मार्गदर्शक और नई सृष्टि के निर्माण की नींव हैं। इन सभी दादियों में से एक महान दादी थी दादी ईशु।

दादी थी गुणों में परिपूर्ण

दादी का बचपन का नाम ईश्वरीय था। बाबा शॉर्ट में ईशु कहते थे और साथ-साथ अव्यक्त बापदादा ने दादी को बहुत सुंदर नाम दिया पूर्णशांता। सच में दादी गुणों में परिपूर्ण थी। दादी का स्वभाव बहुत ही मीठा था और दादी बोलती भी बहुत ही मीठी और धीमी आवाज में थी। उनकी चाल भी देवताओं की चाल या फिर फरिश्तों की चाल थी। दादी में मैंने कभी अधीरता या जल्दबाजी नहीं देखी।

दादी ने की यज्ञ में विशेष सेवा

साकार बाबा बहुत ही फास्ट मुरली चलाते थे और मम्मा भी बहुत फास्ट बोलते थे। कोई कितना भी फास्ट लिखने वाला हो लेकिन लिख नहीं सकता था। मगर दादी के पास बाबा का यह वरदान था कि वह चार पेज की पूरी मुरली हाथों से लिखती थी। दादी ने खुद से ही मुरली के शॉर्टहैंड शब्द बनाए थे जैसे कि बाबा जब बोलते थे प्रजापिता ब्रह्मा तो दादी तीन पी (P) लिख देती थी, ब्रह्मा, विष्णु व शंकर के लिए (BVS)

दादी सदैव अथक और निःस्वार्थ सेवाधारी रहीं

लिख देती और अगर बाबा बोलते, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो दादी एलएन (LN) का राज्य लिखती और राम-सीता में भी आरएस (RS) लिख देती थी। दादी को गॉड गिफ्ट कहें जो चार पेज की मुरली दादी स्वयं लिखती थी और उनके हाथ भी कभी थकते नहीं थे। बाबा के कोई भी वर्शंस कभी भी छूट नहीं पाते थे।

हर प्रकार की राइटिंग को समझने की विशाल बुद्धि

बाबा लाल पेन से सिंधी में पत्र लिखते लेकिन उसको सभी नहीं पढ़ पाते थे। दादी उसी पर हिंदी ट्रांसलेट करके लिख देती थी। दादी के हिंदी अक्षर बहुत ही साफ और सुंदर होते थे जिन्हें हर कोई पढ़ सकता था। दादी की एक और विशेषता रही कि सभी भाई-बहनों के और सेवाकेंद्रों से जितने भी पत्र आते थे, दादी सभी पढ़ लेती थी। कभी-कभी तो बाबा कहते थे, ईशु पढ़ो, ये झुंझार(धुंधले) अक्षर हैं, कुछ समझ नहीं आता, क्या लिखा है, चार पन्ने का पत्र भेजा है लेकिन सार का पता नहीं, लिखे खुदा, पढ़े मूसा। तो ऐसे-ऐसे टोटके बाबा बोलते थे। जो राइटिंग किसी को समझ नहीं आती, दादी उसे भी पढ़ लेती, उसे हाईलाइट करती और सार में बाबा को सुनाती थी ।

दादी बहुत एक्यूरेट थी

बाबा के पास दबाने वाली एक कॉल बेल होती थी। एक घंटी बजाई तो लच्छू दादी आई, दो घंटी बजाई तो ईशु दादी आई और तीन घंटी बजाने पर संतरी दादी पहुंच जाती थी। बाबा के दो घंटी बजाने पर दादी तुरंत पहुंच जाती थी। बहुत एक्यूरेसी थी दादी में।

यज्ञ की ऑलराउंडर सेवाधारी

सेंटरों के भाई-बहनों के जितने मनीऑर्डर आते थे, दादी ही उन्हें जमा करती थी। मनीऑर्डर के लिए दादी ही सिग्नेचर करके पोस्टमैन से मनी लेती थी। दादी के पास कई डिपार्टमेंट संभालने की जिम्मेदारी थी जैसे, मनीऑर्डर लेना, पत्र लिखना, मुरली लिखना, हिसाब-किताब रखना आदि। जितने भी यज्ञ में पत्र आते थे चाहे लौकिक घर से या सेंटर से, पहले दादी पढ़ती थी और फिर जिनके नाम के पत्र होते थे, उनको दे देती थी। दादी ने अपने संकल्प, श्वास, समय, शक्ति सब यज्ञ में सफल किए।

दादी थी बाबा की बनी बनाई अकाउंटेंट

दादी एक बहुत बड़ा पन्ना लेती थी और उस पर सारे यज्ञ का खर्चा लिखती थी। कितनी इनकम हुई एवं कितना खर्च हुआ, हर एक चीज का हिसाब रखती थी। जब यज्ञ के भाई-बहन बाहर जाते थे तो रास्ते के खर्च के लिए दादी ही उनको पैसा देती थी। दादी इतनी विशालबुद्धि थी कि झट से अंदाजा लगा लेती थी कि यह व्यक्ति अगर 3 या 4 दिन के लिए बाहर जा रहा है तो उसका ट्रेन का भाड़ा, कुली का भाड़ा, रिक्शे का भाड़ा एवं टैक्सी इत्यादि का खर्चा कितना होगा। एक्स्ट्रा पैसे भी दादी आवश्यकता के लिए देती थी। यह सारा हिसाब तिथि, व्यक्ति सहित दादी अपने कैशबुक में एक्यूरेटली नोट करती थी। जब भाई-बहनें वापस आते थे तो बचा हुआ पैसा भी वे दादी के हाथ में ही देते थे। दादी उसे उसी अकाउंट में डाल देती थी। दादी का अकाउंटेंट का कार्य बहुत ही एक्यूरेट रहता था।

अथक सेवाधारी

उन दिनों में जब पार्टियां आती थी तो एक रूम में करीब 10 लोग रहते थे। नीचे दरी बिछा दी जाती थी। सिर दीवार की तरह और सिर के किनारे सब की अटैची-पेटी खड़ी करके रखी जाती थी। सबको तीन फुट ही स्थान मिलता था जिसमें सोना भी और सारा सामान भी रखना होता था। कोई अलमारी नहीं होती थी और न ही कोई खुली जगह होती थी। दादी के पास ही सभी अपना पर्स जमा करते थे। विशेष बात तो यह है कि दादी को याद रहता था यह पर्स फलानी बहन का है। उसमें भी अगर किसी बहन को पैसे चाहिए होते तो दादी उसे पर्स दे देती और वह पैसे निकाल कर पर्स दादी को वापस कर देती थी। दादी को कभी भी आलस नहीं आया या ऐसा नहीं लगा कि अभी तो यह पर्स मांगने आई थी और फिर से वापस आ गई। मुझे लिटरेचर लेने जाना होता या बाहर की खरीदारी करनी होती तो दादी को जरा भी मन में नहीं आता था कि बार-बार पर्स मांगने आ जाती है। दादी सभी के पर्स अलमारी में ताली लगाकर रखती थी और जिसको जरूरत नहीं पड़ती थी, वह जाते समय ही दादी से अपना पर्स ले लेता था।

ईमानदारी से पाई-पाई को संभालने वाली

उन दिनों क्लास बहुत छोटा होता था। अब जहां पांडव भवन में होम्योपैथिक का स्टोर है उसके पीछे ही क्लास होता था। बाबा की भंडारी क्लास में नहीं लेकिन ईशु दादी के ऑफिस में थी, उनकी कुर्सी के बिल्कुल बगल में। सब उसी भंडारी में पैसा सफल करते थे। ईशु दादी ही उस भंडारी को



खोलती थी और हर एक पाई-आने का हिसाब रखती थी। बड़े-बड़े नोट तो उस समय होते नहीं थे। उस समय आना ही चलता था और सब सिक्के ही भंडारी में डालते थे। दादी का हिसाब आने-पाई-रुपए का होता था।
एक बार एक बहन कानपुर से पार्टी लाई थी। उस समय कितनी पार्टी आई है, उसकी संख्या और किसने कितना यज्ञ में धन सफल किया है, सब लिखत में टोटल किया जाता था। उस बहन ने हिसाब तो ठीक किया था किंतु 300 कम पड़ रहे थे। बार-बार हिसाब करने पर भी समझ नहीं आया कि पैसे कैसे कम पड़ रहे हैं। दादी ने कहा कि यज्ञ का पैसा है और यज्ञ में पूरा आना चाहिए। फिर मैंने दादी को यह रकम अपनी तरफ से पूरी करके दी। दादी को यज्ञ में सफल किए हुए एक-एक पैसे की बहुत कीमत थी।

दादी एक बार कानपुर आई थी। वहां के भाई-बहनों ने 8 आने भी दिए, 4 आने भी, सिक्के भी तो 10 पैसे भी। मैंने दादी से कहा कि आप इस चिल्लर का क्या करेंगी। दादी ने कहा कि जिसने दिया है उसका यज्ञ में जरूर जाएगा चाहे चार आने ही क्यों न हों। फिर मैंने दादी से कहा कि आप मुझे ये रुपए दे दो, मैं आपको बैंक से नये करा के दे देती हूं। दादी ने मुझे समझाया कि आना, पाई, रुपए, पुराना नोट, जैसा भी आया है वैसा ही बाबा के खजाने में जमा होगा। अगर तुम इसे बैंक से चेंज करवा कर लाओगी तो राउंड फिगर में होगा और इसे ईमानदारी नहीं कह सकते। दादी यज्ञ प्रति इतनी ईमानदार और वफादार थी जो उनके हिसाब में एक भी पैसा ऊपर-नीचे नहीं हो सकता था ।

जो लेना है यज्ञ से लेना है

कभी आज तक मैंने नहीं सुना कि व्यक्तिगत रूप में कभी दादी ने गिफ्ट लिया हो। अगर कोई सौगात देता भी था तो दादी तुरंत मम्मा-बाबा को दे देती और उनके पश्चात् प्रकाशमणि दादी या बड़ी दीदी के पास रख देती थी। दादी ने कभी किसी से कुछ नहीं लिया। वह सदैव कहती कि मुझे जो लेना है, यज्ञ से ही लेना है। जैसी वह खुद थी वैसे ही दूसरों को भी शिक्षा दिया करती थी। एक बार मैं क्लास में मुरली लिख रही थी और मेरा पेन नहीं चल रहा था। मेरे बाजू में एक भाई था। मैंने उससे पेन लेकर लिखना शुरू किया। फिर बाद में दादी ने मुझे बुलाकर प्यार से समझाया कि तुम मुझसे मांगती, मैं तुम्हें ऑफिस से पेन लाकर देती, तुमने भाई से क्यों लिया। जब तुम उस पेन से लिखने बैठेंगी तो उस भाई की ही याद आएगी, शिवबाबा की नहीं और अगर यज्ञ से पेन लेंगी तो बाबा की याद आएगी। महावाक्य लिखने हैं तो किसी के पेन से नहीं लिखने हैं। इतने तक दादी ध्यान रखती थी।

स्वयं अलर्ट रहकर औरों को अलर्ट करने की विशेष कला

दादी हर चीज को बहुत संभाल कर रखती थी। मेरा छोटा भाई शिवकुमार जो उस समय 12 वर्ष का था, दिल्ली पांडव भवन में सेवा पर रुका हुआ था। एक दिन स्नान करने के बाद उसने कपड़े और साबुन वहीं बाथरूम में छोड़ दिए। दादी ने उसे शिक्षा देने के लिए उसके कपड़े और साबुन वहां से उठाकर संभाल कर रख दिए। शिवकुमार उन कपड़ों और साबुन को ढूंढ़ता रहा लेकिन उसे मिले नहीं। दादी ने फिर उसे बुलाकर बताया कि उसके कपड़े दादी ने संभाल कर रख दिए हैं। इस तरह दादी ने उसे शिक्षा दी कि समय पर हर कार्य एक्यूरेटली करना बहुत जरूरी है। उस दिन से वह बहुत अलर्ट हो गया। इस तरह दादी खुद भी अलर्ट रहती थी और औरों को भी अलर्ट करती थी।

किसी प्रकार की कोई इच्छा नहीं

दादी का जीवन सदैव ही बहुत सिंपल और सब के लिए सैंपल रहा है। उनके मुख से कभी यह नहीं निकला कि मुझे यह वस्त्र चाहिए या मुझे किसी प्रकार की कोई चीज की आवश्यकता है। दादी हर चीज में बहुत इकोनॉमी रखतीं थी। पांडव भवन में दादी का छोटा सा कमरा था और उसका दरवाजा भी बहुत छोटा था तो खटिया भी बहुत छोटी थी। मगर दादी के मन में कभी यह नहीं आया कि मुझे रहने के लिए बड़ा कमरा चाहिए। दादी ने स्वयं प्रति कभी कुछ नहीं मांगा।

दादी ने की नि:स्वार्थ प्रेम से पालना

दादी सदैव कहती थी कि मम्मा-बाबा ही सबको अपने हाथ से हर चीज देंगे। मेरा और दादी का आपस में बहुत स्नेह था क्योंकि मैं ६ मास तक भी मधुबन में सेवा के लिए रुकती थी। एक दिन दादी ने मुझे साड़ी दी। यूं तो सब ने पूछा कि दादी तो कभी कुछ भी अपनी तरफ से नहीं देती लेकिन तुम्हें कैसे दादी ने यह साड़ी दे दी। मगर मैं जानती थी कि यह दादी का सच्चे दिल का नि:स्वार्थ प्रेम है जो दादी ने मुझे इतने प्यार से यह साड़ी दी ।

दादी किसी से सेवा नहीं लेती थी

मुझे हमेशा से ही सेवा का बहुत शौक था। एक बार की बात है जब मैं छोटी थी तो मैंने दादी को कहा कि दादी, मैं आपके सिर पर तेल लगा देती हूँ। उस दिन तो दादी बहुत मुश्किल से मान गई और मुझसे तेल लगवा लिया। मगर दूसरे ही दिन मुझे वापस भेज दिया और कहा कि नहीं, मुझे किसी

से सेवा नहीं लेनी है, मुझे बोझ नहीं चढ़ाना है। कभी दादी ने सिर पर तेल तक भी नहीं लगवाया। दादी सदैव अथक और नि:स्वार्थ सेवाधारी रही।

शिक्षा और स्नेह से भरपूर किया

मैंने ईशु दादी से अकाउंट की सेवा सीखी। पहले हाथ से सब काम होता था। ईशु दादी ने मुझे हर प्रकार की शिक्षाएं दी। दादी के साथ मेरा सदैव दिल का स्नेह रहा है और अंत तक भी दादी मुझसे बहुत प्यार से मिलती थी। जब भी मैं दादी के पास आती तो दादी हाथ फैला कर मुझे कहती कि विद्या आ जाओ। यहां तक कि कविता बहन को भी कहती कि इसको कुछ न कुछ सौगात जरूर दो। मैं दादी को कहा करती थी कि दादी, मैं भरपूर हूं मगर दादी फिर भी कोई ना कोई चीज अवश्य देती और कहती कि तुम यह ले जाओ, यह तुम्हारे काम की चीज है। ऐसी स्नेह की देवी हमारी दादी थी। दादी ने सदैव शिक्षाओं और स्नेह भरी पालना से हमें भरपूर किया है। मैं तो यूं कहूंगी कि दादियों के प्यार और आशीर्वाद से ही हमारी पालना हुई है। दादियां हमारी जान, हमारा जिगर, हमारी रहबर, हमें रास्ता दिखाने वाली हैं। हमारी नजरों में तो दादियों की ही छवि है। आज भी जब मैं मधुबन आती हूं तो उनके कमरे में बैठकर योग अवश्य करती हूं।

दादी के शॉर्टहैंड शब्दों ने बनाया कलेक्टर को बाबा का बच्चा

जब मैं यज्ञ से सेवा पर निकली तो पहले-पहले गंगे दादी के पास कानपुर में गई और दादी ने मुझे फिर मिर्जापुर भेजा। उस समय मैं नई-नई थी और आयु में भी छोटी थी। वहां कुछ लोगों ने बहुत विरोध किया। फिर वे हमारी मुरली क्लास में आए मगर उनको कुछ समझ में नहीं आया कि बाबा के महावाक्य क्या हैं, मुरली पढ़कर क्या सुनाते हैं, तो कलेक्टर के पास शिकायत की और सीआईडी वालों को ब्रह्माकुमारियों के पीछे लगा दिया गया। हमारी मुरलियां एवं बाबा के लिखे हुए पत्र सीआईडी वाले ले जाते मगर उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता। भला बाबा के लिखे हुए महावाक्य उन्हें कैसे समझ में आते! दादी के लिखे हुए शॉर्टहैंड शब्द भी उन्हें समझ नहीं आते। एक दिन सीआईडी से कोई सेंटर पर बहाने से 7 दिन का कोर्स करने के लिए आया और कहने लगा कि मुझे वे बाबा के पत्र और मुरली पढ़कर सुनाओ। उसे दादी के लिखे हुए शॉर्टहैंड शब्द और बाबा की मुरलियां कुछ समझ में नहीं आई। उसके पूछने पर मैंने बता ही दिया कि तीन पी (P) का मतलब है परमपिता परमात्मा, एलएन (LN) अर्थात् लक्ष्मी-नारायण, आरएस (RS) अर्थात् राम-सीता और बीवीएस (BVS) अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। सीआईडी का वह व्यक्ति कहता है कि मैंने इतने जासूसी पत्र पढ़े हैं पर आज मैं बाबा के पत्र और मुरलियां समझने में फेल हो गया। इतनी खोजबीन करने के बाद वह बाबा का बच्चा बन गया। यह दादी के शॉर्टहैंड शब्दों का जादू था जिसने एक सीआईडी व्यक्ति को बाबा का बच्चा बना दिया।


दादी जी

सबको अपनेपन की बहुत प्यार की, भासना देती थीं



बी.के. ज्योति

निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, यूएई ओमान और क़तर

आदरणीय ईशु दादी जी को मैं 1975 से जानती हूं, मिलती आई हूं। हर वर्ष जब मैं लंदन से आती पांडव भवन में तो उस समय सभी दादियां बार-बार मिलते थे क्योंकि ईशु दादी तो दीदी मनमोहिनी जी का जो कमरा था उसके पीछे कमरे में रहते थे लेकिन हमेशा ऑफिस में वहां ही सामने-सामने दादी बैठती थीं, और जो भी प्रोग्राम होता था, जहां भी जाना होता था तो हमेशा दादी, दीदी के साथ ही होते थे। बाद में दादी प्रकाशमणि जी के साथ भी दादी जी का बहुत समय पार्ट चला। जहां भी दादी ट्रैवल करती थीं तो ईशु दादी साथ में ही होती थीं, इसलिए मैं तो चाहे भारत में रही, लंदन में रही या और देशों में लेकिन हर साल मधुबन आती ही थी और अच्छी तरह से सभी दादियों से मिलती थी, पर ईशु दादी से खास मिलती थी। उसमें से एक अनुभव की बात है, जब हम विदेश से आते थे तो जो भी बाबा की भंडारी के लिए पैसा होता था उसे हम ईशु दादी को देते थे क्योंकि जब दादी फ्री होती थी तो ईषु दादी फिर बड़ी दादी को देते थे, तो उस बार जब मैं आई तो कभी मैं क्लास में बिजी तो कभी दादी जी बिजी हो गईं। ऐसा करते-करते दो दिन ऊपर हो गया तो ईशु दादी ने मुझे खास बुला कर कहा कि ज्योति तुम यह दादी को दे दो बाबा की भंडारी का, क्योंकि दादी जी को कंसर्न था कि जब ये देगी तभी वो बैंक में डाल सकती हैं। बाबा के यज्ञ में दो पैसा तो आएगा ना, मतलब दादी को बाबा के यज्ञ के एक-एक पैसे का हिसाब रहता था, इतना इकोनॉमी के साथ चलती थीं। दादी जी साकार बाबा से तो पालना ली हुई थी इसलिए सब बच्चों के अंदर एकनामी, इकोनॉमी के संस्कार तो थे ही। फिर दादी हमारे पास दुबई में 2009 में आए थे। जब

'मैं बाबा की सौगात रात दिन पहन कर रखती हूँ।'

– दादी ईशु जी



दुबई के मिरेकल गार्डन में दादी ईशु जी, कविता दीदी, समृद्धि दीदी, खगेंद्र भाई एवं अन्य सेवा साथी

मोहिनी बहन, मुन्नी बहन और ईशु दादी तीनों लंदन गए थे तो वो वहां से लंदन से वापसी के समय दुबई में रुके थे। उस समय मैं भी ईशु दादी के साथ ही कमरे में सोती थी, सबको अलग-अलग रूम दिया था। उसमें हमारे फ्राइडे का दिन छुट्टी का होता था तो उस दिन लंबी क्लास चलती थी। मेहमानों का स्वागत और अनुभव आदि क्लास के बाद रखते थे। उस समय जब पूरे न्।म् के ब्राह्मणों की गैदरिंग थी तो दादी जी ने मुरली सुनाई थी वो अभी भी हमारे पास रिकॉर्डिंग में है। बहुत प्यार से ईशु दादी ने मुरली बाबा की सुनाई थी। अभी फिर से 2020 में आए थे तो नए घर में, बाबा का जो नया भवन बना है उसमें आए, फरवरी में कोरोना के पहले, तब भी दादी जी सबसे बहुत प्यार से मिलीं और फिर सबको बाबा की स्मृति दिलाती थीं और उसमें भी एक विशेष बात, दादी के हाथ में जो घड़ी थी उसे वो दिखा कर कहतीं कि साकार बाबा ने मुझे दी थी, अभी मैं बाबा की यादगार सौगात रात-दिन पहन कर रखती हूं। दादी ऐसा करके सबको बहुत यज्ञ की, बाबा-मम्मा की याद दिला रही थी। मतलब दादी भले ही बहुत लंबा क्लास नहीं कराती थीं परंतु दादी सबको अपनेपन की बहुत प्यार की भासना देती थीं। एक-एक से मिलती थीं और सबको दृष्टि, टोली देकर बहुत प्यार करती थीं। मैं जब भी मधुबन में आती थी तो जरूर दादी से मिलने के लिए जाती ही थी और कोरोना के समय जब मैं शांतिवन में विश्व कल्याणी भवन में रही तो दादी हाल-चाल पूछती रहती थीं। खास मैं मिलने के लिए उनके पास बैठने के लिए जाती थी और वही अंतिम बार दादी जी से मिलना हुआ था। मैं इतना कहूंगी कि दादी ने सभी को बहुत-बहुत प्यार दिया, पालना दी और सबकी दुआओं के बाबा, मम्मा, दादियां तो सब है ही लेकिन सभी ब्राह्मण परिवार की दुआओं के वे पात्र बनीं।



दादी जी ने कर्म द्वारा दी शिक्षा



बी.के. सुप्रिया

मुख्य संपादिका, ब्रह्माकुमारीज़
हेडक्वार्टर डेली ई-पेपर
पांडव भवन, मधुबन

मुझे बचपन से ही ईशु दादी जी को देखने का सौभाग्य मिला। दादी जी के दिल का स्नेह और पालना कभी भूल नहीं सकती। जब भी दादी जी से मिलने गए, दादी जी ने रूहानियत से भरपूर मीठी दृष्टि, निश्छल मुस्कान से दुआयें देते हुए नया उमंग-उत्साह भर दिया।

एक बार विश्व कल्याणी भवन में जहाँ दादी जी का कमरा है, वहाँ कुछ काम से जाना हुआ। रात का समय था। मैंने देखा, दादी जी को गाड़ी से उतार रहे थे। दादी जी की मीठी दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और मेरी दृष्टि दादी जी के ऊपर। मैं तुरंत गाड़ी के पास पहुंची। दादी जी को व्हील चेयर से अन्दर लाए। जब दादी व्हील चेयर से उठकर ख़ड़ी हुई तो दादी जी का हाथ मेरे हाथ में आया। एक तरफ मैंने दादी जी को पकड़ा और दूसरी तरफ एक भाई ने। दादी जी को अंदर ले जा रहे थे, अचानक दादी जी बाबा के कमरे के दरवाजे के पास रुक गए। बड़े ही प्यार से दादी जी ने बाबा को देखा और बहुत उमंग-उत्साह, ख़ुशी से हाथ हिलाते हुए बाबा से कहा, बाबा, मैं आज सेवा करके आयी और अभी कमरे में जा रही हूँ।

इस सीन ने मेरे दिल को इतना टच किया कि आज तक मेरी आंखों के सामने है। मैंने दादी जी से सीखा कि सिर्फ सेवा शुरू करने से पहले ही नहीं लेकिन सेवा पूरी होने के बाद भी हमें बाबा को सुनाना है, बाबा को थैंक्स करना है। उस दिन से जब भी बाबा के कमरे से गुजरती हूँ, सेवा समाचार बाबा को सुनाती हूँ। दादी जी ने प्रैक्टिकल में करके मुझे ये पाठ पक्का कराया। दादी जी ने मुख से शिक्षायें कम दी, उनका जीवन ही शिक्षा का स्वरूप था, सदा हर कर्म से सिखाया।

दादी जी ने मुख से शिक्षाएं कम दीं, उनका जीवन ही शिक्षा का स्वरूप था



ईशु दादी जी बड़ी ही गम्भीरमूर्त, आज्ञाकारी थीं



बी.के. राधा
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, लखनऊ

प्यारे बाबा के इस महायज्ञ की भंडारी आदरणीय ईशु दादी जी को हमने 1984 में पहली बार देखा। बड़ी दादी जी के अंग-संग रहने वाली ईशु दादी जी बड़ी ही गंभीरमूर्त, आज्ञाकारी थी। किसी भी संस्था की उन्नति, नामाचार, प्रसिद्धि का आधार वहां की आर्थिक गतिविधियाँ होती हैं। दादी जी को ईमानदारी, सच्चाई, सफाई से ट्रस्टी बन यज्ञ का धन संभालते हुए हमने देखा। जब भी हम मधुबन आते थे तो हमारे पास जो भी धन होता था, उसे ईशु दादी जी को देकर हम हल्के व निश्चिन्त हो जाते थे और वापस लौटने पर दादी जी उस पैसे को वैसा ही वापस लौटाती थी ।

पिछले लगभग साढ़े चार वर्षों से तो उनका हमने बचपन का रूप देखा। 27 मार्च, 2021 को अंतिम बार दादी जी से मिलकर आये थे। बहुत प्रेम से दादी जी मिले, वरदान, सौगात व दृष्टि दी। उनके सम्मुख आने से हल्केपन की अनुभूति होती थी, बाबा की याद स्वत: आती थी। हम सभी प्यारे बाबा की यज्ञरतन ईशु दादी जी को कोटि-कोटि श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

उनके सम्मुख आने से हल्केपन की अनुभूति होती थी



दादी जी नम्रता की दिव्य मूर्त थीं



बी.के. समृद्धि
राजयोग शिक्षिका, गोरखपुर, यू.पी.

यह मेरा परम सौभाग्य और पुण्य कर्मों का फल है कि प्यारी, मीठी ईशु दादी जी के अंग-संग रह कर सेवा करने का सौभाग्य मिला। दादी जी की हर्षितमुखता बेमिसाल थी। मैंने उन्हें हमेशा प्रसन्नचित्त ही पाया। दादी जी नम्रता की दिव्य आदर्श मूर्त थी। सब गुणों की खान दादी जी के व्यक्तित्व से ही अटूट स्नेह झलकता था, उन्हें देखकर खुशी व आनंद का अनुभव होता था। जब भी हम दादी जी से मिलने जाते थे तो उनके दिल का दरवाजा सदैव खुला पाया। दादी जी का नूरानी खुशनुमा चेहरा हमारे लिए सर्वोच्च आकर्षण था। हम जब मधुबन आने वाले होते थे तब दादी जी स्वागत करते यही कहती थी कि आओ, तुम्हारा बहुत प्यार से वेलकम करूंगी, रिसीव करने आऊंगी, तुमको माला पहनाऊंगी, फूलों का गुलदस्ता दूंगी, फोन में ऐसा कहके दादी जी उमंग-उत्साह भर देती थी और जब हम दादी जी के पास पहुंच जाते थे तो दादी जी ठीक वैसे ही करते थे। हम जब दादी जी से छुट्टी लेते थे तब मुझे बार-बार दादी जी यही कहती थी कि आप मुझे कभी नहीं छोड़ना, मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगी। दादी जी मेरे को जल्दी छुट्टी नहीं देते थे, कहते थे, मुझे यहां आपकी जरूरत है, वहां कोई भी सेंटर संभाल लेगा। छुट्टी लेते समय हम कभी यह नहीं कह पाते थे कि दादी जी हम सेंटर पर जा रहे हैं, यही कहते थे कि हमें हमेशा यहीं रहना है। हमें कभी उनसे दूर जाने का संकल्प नहीं आया।

दादी जी दिन में कई बार मुरली पढ़ती थी, दादी जी के मुखारविंद से अनेकानेक बार मुरली श्रवण करने का चांस मिलता था। मुरली पढ़ने के बाद बड़े प्यार से दृष्टि देते और मुस्कुराकर ओम शांति करते तो हमें अतींद्रिय सुख का अनुभव होता था। एक बार दादी जी से जो मिला उसके हृदय में दादी जी की अमिट

दादी जी का दिव्य नूरानी खुशनुमा चेहरा आत्मा के लिए सर्वोच्च आकर्षण था



छाप लग जाती थी। उनके प्यार और मार्गदर्शन ने मुझे आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर किया। दादी जी मेरी मार्गदर्शिका के साथ-साथ मेरे लिए सदैव आदर्श भी रहे।

घटना 10 अप्रैल, 2021 की है। दादी जी को श्वास लेने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी। जब दादी जी का ऑक्सीजन लेवल चेक किया गया तो वह डाउन दिखा रहा था। दादी जी को ऑक्सीजन लगाना जरूरी हुआ, साथ में कोविड-19 टेस्ट भी हुआ, दादी जी में वह संक्रमण निकला लेकिन हल्का था। दादी जी को शांतिवन से ट्रॉमा में एडमिट किया गया लेकिन दादी जी के और अच्छे स्वास्थ्य के लिए दादी जी को अहमदाबाद स्टर्लिंग हॉस्पिटल में लाया गया। तब तक दादी जी के संभाल के लिए जो सेवा साथी थे वे तीनों ही कोरोना संक्रमित हो चुके थे। जब मेरे को मालूम चला कि दादी जी अहमदाबाद आ गए हैं तो अंतरात्मा की आवाज आई कि इस कठिन समय में मेरे को दादी जी के पास होना चाहिए। उन्हें मेरी जरूरत है। दिल में एक तड़प थी। उस समय लॉकडाउन की स्थिति बन चुकी थी। फिर कविता दीदी जी का फोन आया कि यहां आपकी जरूरत है। जैसे ही दीदी का कहना हुआ, हमारे मुख से तुरंत हांजी निकला। अगले दिन की फ्लाइट से मेरा 13 अप्रैल को अहमदाबाद पहुंचना हुआ। हॉस्पिटल में पहुंचे तो दादी जी की स्थिति पहले से ठीक हो रही थी। दादी जी से मिलना हुआ और कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए दादी जी की निमित्त भाव से, दिल से सेवा करने का सौभाग्य मिला। दादी जी को दो से तीन दिन बाद आईसीयू में शिफ्ट किया गया, वहां भी थोड़ा समय दादी जी के पास आईसीयू में सेवा करती थी। दादी जी कभी मुरली पढ़कर सुनाते थे, तो कभी बाबा के साथ की बातें बताते थे। दादी जी बहुत खुश होते थे मेरे को देखकर और दिन भर में कई बार मेरे हाथ को पकड़ कर पक्का कराते थे कि आप मुझे कभी नहीं छोड़ना, मैं भी तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगी। लेकिन, ड्रामा की भावी! बाबा को शायद दादी की जरूरत हमसे ज्यादा थी लेकिन दादी आज स्थूल में भल साथ नहीं हैं लेकिन सच में आज भी अपनी उपस्थिति का अनुभव प्रतिपल कराते रहते हैं।



दादी जी यज्ञ के लिए जी जान से सोचते थे



बी.के. विश्वनाथ
मधुबन

ईशु दादी जी के साथ मैं 1993 से संपर्क में आया। दादी जी को देखते ही मुझे ग्रैंड मदर जैसे अनुभव होता था। दादी प्रकाशमणि जी मुझे मेरी मां की तरह लगती थी। जब मैं पांडव भवन में ट्रेनिंग सेंटर और इंद्रप्रस्थ में सेवा में था तो हर रोज दोनों दादियों से मिलता रहता था। दोपहर के भोजन के बाद ईशु दादी और बड़ी दादी जी शांति स्तंभ का चक्कर लगाती थी, मैं वहीं पर प्रेस करता था। इस प्रकार मैं दादी जी की नजर में आ गया। तब मैं समर्पित नहीं हुआ था, लौकिक घर से जो खर्ची मिलती थी, वह दादी जी को देता था। ईशु दादी मुझे देखते ही कहती थी कि यह मेरा बड़ा भाई है और यज्ञसेवा करता ही रहता है। एक बार मैं खर्ची देना भूल गया तो दादी ने कहा कि भाई साहब, बहुत दिन के बाद दिखाई दिए और अभी खर्ची देना भूल गए हो। मैंने कहा, दादी, इस मास की और अगले मास की खर्ची इकट्ठी देता हूं। दादी जी ने कहा, ठीक है।

फिर मैं पांडव भवन से ज्ञान सरोवर में सेवा में गया। वहां पर भी दादी जी कॉटेज में अपनी सेवा देता था, इससे बहुत नजदीक से दादी जी के संबंध-संपर्क में आ गया। वहां जो भी प्रोग्राम होते थे तो ईशु दादी जी प्रोग्राम में मिली हुई खर्ची मेरे को देती थी। प्रोग्राम पूरा होने के बाद मैं दादी जी के कमरे में जाता था। दादी बहुत तेज दिमाग के थे। उन्होंने जितने लिफाफे मेरे को दिए होते थे, सब याद रहते थे। मैं भी सब लिफाफे दादी जी के कमरे में पहुंचा देता था, इस प्रकार दादी जी का मेरे ऊपर विश्वास बैठ गया। यज्ञ की

दादी जी के साथ रूहरिहान कर बहुत खुशी होती थी



जगदम्बा सरस्वती संग दादी ईशु, दादी प्रकाशमणि, दादी शांतामणि,
दादी गुलजार एवं अन्य भाई-बहनें

जो भी अमानत दादी मेरे को लाने के लिए कहती थी, मैं बैग में लाकर, दादी जी को दिखा कर, दादी जी के कमरे में अलमारी में रखता था फिर ताला लगाकर चाबी दादी जी के हाथ में दे देता था।

एक बार मैं कुछ समय के लिए घर गया, दादी जी से मैंने खर्चे के लिए 1 हज़ार रुपये लिये। घर से आने के बाद बचत के 251 रुपये, 25 पैसे दादी को दिये। पूरा सही हिसाब देखकर दादी बहुत खुश हुए। हिसाब की उस पर्ची को दादी ईशु जी ने, दादी प्रकाशमणि जी को दिखाया। तो दादी ने कहा, आप यज्ञ के वफादार, फरमानबरदार, ईमानदार और आज्ञाकारी भी हो। दादी जी ने मेरे अंदर सहनशीलता, यज्ञप्रेमी के विशेष गुण देखे तो दादी जी ने कहा, मेरा अकाउंट का भाई है, फिर दादी जी के अंग-संग रहने का विशेष मौका मिला। तबीयत के कारण बड़ी दादी शांतिवन में आए तो ड्रामा अनुसार मेरा भी दादी जी के साथ नीचे आना हुआ। शांतिवन में भी यज्ञ की मिली हुई खर्ची दादी जी को देनी होती थी। कभी-कभी दादी जी के साथ भोजन करना, रिफ्रेशमेंट करना, रूहरिहान करना, इससे हम बहुत खुश होते थे। दादी जी को हमने देखा कि दादी जी यज्ञ के लिए जी-जान से सोचती थी। मेरा यह विशेष सौभाग्य रहा कि दादी जी, मेरे और लच्छू दादी जी से अति संवेदनशील सेवा करवाती थी। दादी जी का इतना विश्वास था मेरे ऊपर।



ईमानदार, वफादार, कर्तव्यपरायण दादी ईशु जी



बी.के. महेन्द्र
प्रबंधक, प्रशासन
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

ईश्वरीय यज्ञ की आदि रत्न ईशु दादी जी सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव के मुरब्बी बच्चों में से एक हीरा थीं। उनके जीवन में सच्चाई, सफाई, विश्वसनीयता, वफादारी, सत्यता, कर्तव्यपरायणता, सम्पूर्णता, संपन्नता और सबसे महत्वपूर्ण पवित्रता में अखण्डता झलकती थी। जैसे ही 1967 में हमें बाबा ने दिव्य जन्म दिया, हमें ईश्वरीय कार्य में कुछ दादियों का परिचय भी मिला और उनके द्वारा निभाए जाने वाले कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में भी जानकारी मिली, जैसे कि ईशु दादी जी पिताश्री जी के सभी पत्राचार का कार्य और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण संस्था के धन (वित्त) संबंधी कार्यों की देख-रेख करती थीं। यह दोनों ही कार्य हमारे जीवन यापन में आधार मूर्त हैं और हमें दादी जी के प्रति अति सम्मान और उनकी महानता का अहसास हुआ।

बाबा ने जो हमें हमारे सुनहरे उज्जवल भविष्य, हमारा वर्सा, हमारी राजधानी, जहां हम सभी डबल ताजधारी थे, जहाँ सम्पूर्णता, संपन्नता और अखण्डता रहती है, इसका सुंदर ज्ञान दिया और इसकी प्राप्ति के लिये हमें ब्राह्मण जीवन में अपने अन्दर जो ज्ञान की धारणाएं करनी है यह सभी विशेषताएं हमने दादी जी में सहज रूप में देखी। हमने सम्मुख अपनी आंखों से देखा कि कैसे दादी जी अपनी कर्तव्यपरायणता, बाबा के प्रति निष्ठा और मन्सा, वाचा, कर्मणा की पवित्रता में अखंड नजर आती थीं।

प्रभु कार्यों में वे सदा न्यारी और प्यारी रहती थीं। हम जब भी मधुबन आते थे तो उनके पास यज्ञ के प्रति सहयोग लेकर जाते थे। एक समय ऐसा आया कि हम उनके पास जा नहीं सके तो हमारा मन थोड़ा भारी हुआ, हमने उनको सुनाया कि हम इस वजह से आ नहीं सके तो उन्होंने कहा कि ''हम

जीवन में जो ज्ञान की धारणाएं करनी हैं, वो सब हमने दादी जी में सहज रूप में देखीं



पांडव भवन, मधुबन (1962): ब्रह्मा बाबा के साथ दादी प्रकाशमणि, दादी गुलजार और दादी ईशु

कभी भी किसी के बारे में सोचते नहीं है, आप निश्चिन्त रहें' उनका इतना कहना और हम बिल्कुल हल्के हो गये क्योंकि हम दादी जी को परमपिता परमात्मा की सदैव जिगरी, दिल तख्तनशीन बच्ची समझते थे। हम समझते थे कि कुछ भी यज्ञ के प्रति देते हैं तो भगवान के पास तुरन्त पहुँच ही जाता है और परिणाम स्वरूप हम निश्चिंत और संतुष्ट रहते थे।

दादी जी के अन्तिम वर्षों में हमने हमेशा उन्हें अतीन्द्रिय सुख के झूलों में झूलते देखा। यह दृश्य हमें अपनी मंजिल की याद दिलाता था और हमारा मन भी गदगद हो उठता था। लोग जीवन में खुश रहने के लिए तरह-तरह के प्रयास और साधन अपनाते हैं परन्तु हमें दादी जी के पास जाने से ही अपार खुशी मिलती थी, ऐसे दृश्यों को याद करके भी खुशी की महसूसता होती है। वे इतना शांत रहते हुए भी परमात्म कार्यों में विशेष दूत थीं। सच में धन्य है यह विशेष आत्मा, हमारा कोटि-कोटि नमन और वन्दन।



कोषाधिकारी दादी ईशु जी



बी.के. सुभाष
सदस्य, ब्रह्माकुमारीज़, ज्ञान सरोवर

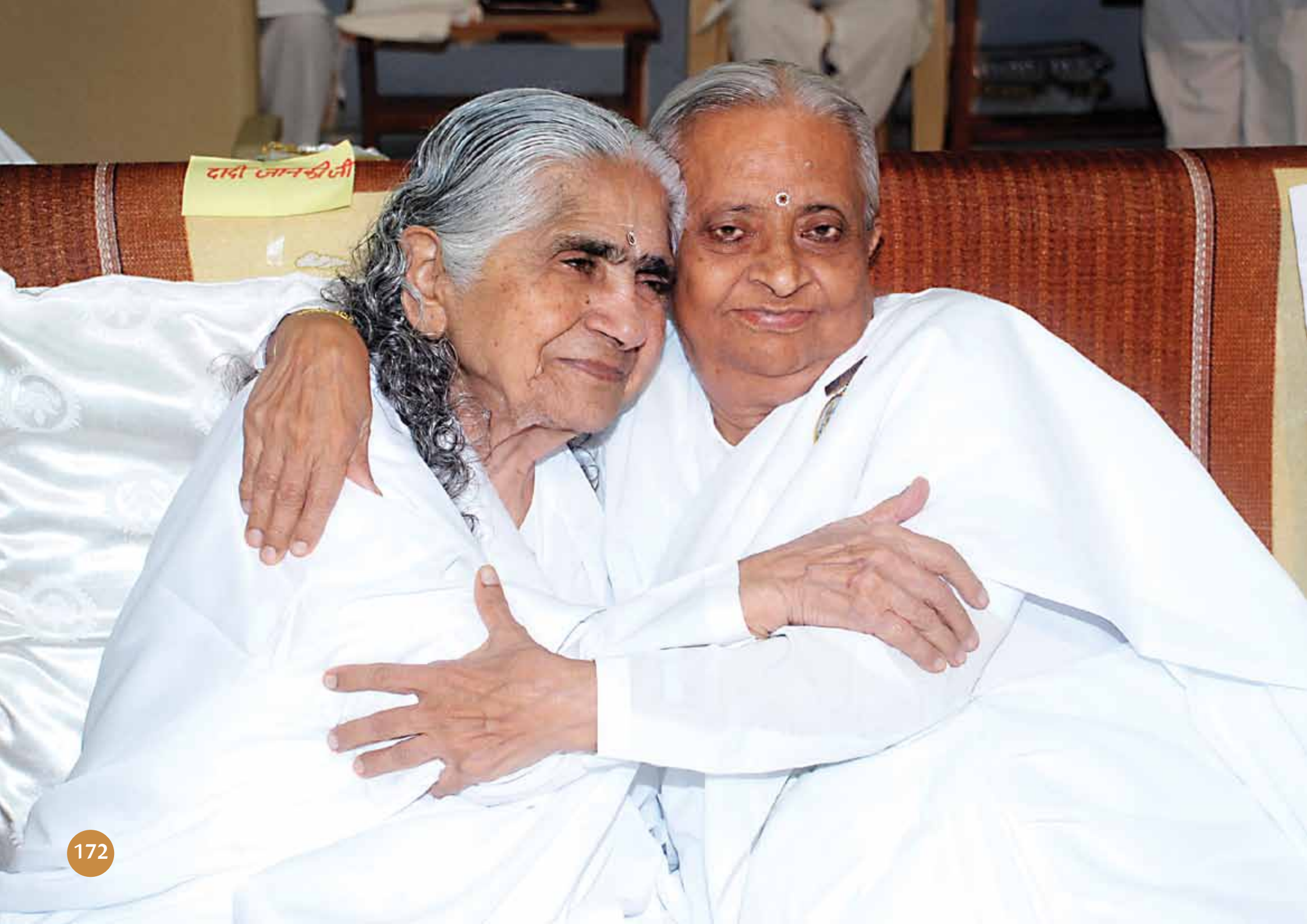
सन् 1983, मार्च में ईशु दादी जी से मेरा प्रथम परिचय हुआ था। तब मैं दो मास आबू में सेवा करने के पश्चात् अपने भाई तुलसीराम के साथ भोलेनाथ की भण्डारी में सहयोग हेतु, ईशु दादी जी के कार्यालय गया था। सौभाग्य से अन्य मुख्य दादियों का दर्शन भी हमें इसी स्थान पर हुआ था।

यज्ञ में समर्पित होने के उपरान्त हमें अपने पैतृक गृह जाने का मार्गव्यय ईशु दादी जी द्वारा ही प्राप्त होता था। मैंने पांच सौ रुपये की मांग की थी लेकिन जिस दिन मुझे घर जाना था, उस दिन स्वयं ईशु दादी जी ने मुझे भंडारे में आकर 2 हजार रुपये का लिफाफा दिया व कहा कि रास्ते में कभी भी आवश्यकता होती है, ये अपने पास रख लो। सचमुच मेरा खर्चा पांच सौ ही हुआ, बचा हुआ जब वापस दिया तो मुझे यज्ञरक्षक कह बहुत आशीर्वाद दिये।

एक बार मेरे केश कर्तन हेतु दादी जी ने मुझे पाँच रुपये दिये, मैंने जब उन्हें शेष एक रुपया वापस किया तो उन्होंने मुख्य प्रशासिका प्रकाशमणि दादी जी से मेरी प्रशंसा भी की थी।

बात सन् 1987 की है, हमारी गीतापाठशाला गुजरवाड़ी के लिए अव्यक्त मुरली डाक से भेजने हेतु मैं डाकघर गया, स्मरण आया कि आज तो रविवार है। सोचा, बाज़ार हो आते हैं। बाज़ार में एक दुकान में टीवी पर रामानंद सागर का सुप्रसिद्ध धारावाहिक ''रामायण'' चल रहा था। आकर्षणवश 10 मिनट देखने लगा। वापस कमरे में पहुँचा, तभी चिमन भाई आये और कहा, आपको ईशु दादी जी बुला रही हैं।

ईशु दादी जी यदि आवश्यक हो तभी बोलती थीं


दादी जानकीजी

मैं कार्यालय पहुँचा, वहाँ आदरणीय प्रकाशमणि दादी जी व ईशु दादी जी बैठे थे। ईशु दादी जी ने पूछा, भाऊ, कहां गये थे ? मैंने कहा, डाकघर। ईशु दादी जी ने कहा, किन्तु आज तो रविवार है ? मैं समझ गया, अविलंब प्रकाशमणि दादा जी के समक्ष बैठ एक ही श्वास में कह गया, मैं डाकघर ही गया था किन्तु बन्द होने के कारण बाज़ार चला गया था, वहाँ एक दुकान पर ''रामायण'' देखने का आकर्षण छोड़ नहीं पाया, मुझे नहीं देखना चाहिये था, मेरी त्रुटि है, मुझे क्षमा कीजिए, भविष्य में ऐसी त्रुटि नहीं करूंगा। ईशु दादी जी यह दृश्य देख कुछ भी बोली नहीं लेकिन मंद-मंद मुस्कुरा रही थी।

ईशु दादी जी यदि आवश्यक हो तभी बोलती थीं। उनको भाषण देने या मंच पर जाने का लोभ कभी नहीं रहा। हम सभी स्नेह से उन्हें कुबेर की कोषाधिकारी भी कहते थे। वो अत्यंत सरल स्वभाव की थीं। भोजन के उपरान्त यज्ञ का लेखा-जोखा प्रकाशमणि दादी जी को टहलते हुए ही दे दिया करती थीं, ऐसी प्रखर बुद्धि थी उनकी। मितव्ययी थीं। व्यय पर नियंत्रण रखती थीं। स्वयं के स्वार्थ हेतु उनकी कोई अभिलाषा नहीं थी। ऐसी महान विभूति ईशु दादीजी 1 मार्च, 2019 में ज्ञान सरोवर में कविता बहन के साथ पधारी थी। उस समय उन्हें भोजन परोसने का सौभाग्य मुझे मिला। दादी जी ने अपने हाथों से सौगात देकर व टोली खिलाकर अपना वरदहस्त मेरे ऊपर रखा, वो कभी भूल नहीं सकता। 6 मई, 2021 रात्रि 8 बजे ईशु दादी जी पार्थिव शरीर का त्याग कर, शिवधाम की यात्रा पर चली गईं। उनकी मधुर स्मृति हमारे मानस पटल से कभी विस्मृत नहीं होगी। उनके द्वारा की गई यज्ञ की सेवा सदैव प्रेरणा देती रहेगी। उनका सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञ हेतु समर्पित था। ऐसी त्यागमूर्ति आदरणीय ईशु दादी जी को शत् शत् नमन।



पांडव भवन (मधुबन) में ईश्वरीय सौगात लेते हुए ईशु दादी

दादी का पहला नंबर का गुण असोचता था



बी.के. ज्योति
लंदन

दादी ईशु जी के साथ मेरी पहली मुलाकात सन् 1964 में हुई तब मैं माउंट आबू के बोर्डिंग स्कूल में दाखिल होने ब्रह्माबाबा के पास आई थी। दूसरे ही दिन स्कूल में जाना हुआ। दादा विश्वरतन मुझे स्कूल ले गए। बाबा ने दादा को कहा, इसके टीचर को कहना कि अगले संडे इसे बाबा के पास आने की इजाजत दी जाए। सप्ताह बाद मैं बोर्डिंग स्कूल से बाबा के पास आ पहुंची। मुझे ब्रह्माबाबा ऑफिस में मिले, बाबा खत लिख रहे थे। मैं कुछ दूर जाकर खड़ी हो गई। किसी ने बाबा को कहा, बाबा, ज्योति आई है। बाबा ने तुरंत अपने पैड को रखा और कहा, बच्ची आओ, आओ, बाबा को सुनाओ, तुम्हें स्कूल कैसा लगा? बाबा का प्यार और सहानुभूति भरा बोल सुनकर मेरे आंसू निकल आए, मैं वहीं खड़ी रही। फिर किसी ने बाबा को बोला, यह तो रो रही है। फिर बाबा ने बहुत प्यार से कहा, बच्ची आओ। बाबा को सुनाओ, तुमको स्कूल कैसा लगा? फिर कदम बढ़ाते मैं पास रखी संदली पर जा बैठी और अपने आंसू पोंछते हुए कहा, बाबा, मुझे स्कूल अच्छा नहीं लगता है। बाबा ने बहुत प्यार से पूछा, स्कूल में क्या अच्छा नहीं लगता है? मैंने बताया, मुझे खाना अच्छा नहीं लगता है, लड़कियां अच्छी नहीं लगती हैं और सप्ताह में हमें सिर्फ दो दिन स्नान करने को मिलता है, मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता है। दादी ईशु ने कहा कि रामचंद्र की बेटियों को तो स्कूल बहुत अच्छा लगता था (रामचंद्र मेरे पिता के मित्र थे, उनकी बेटियां मेरे से पहले उसी स्कूल में पढ़ती थी)। इसी बीच मेरे से कोई ने पूछा, आप नॉनवेजिटेरियन हो? मैंने कहा, नहीं, मैं वेजिटेरियन हूं। फिर दादी ने कहा, रजनी और कांता तो सब खा जाते थे। बाबा ने मुझे निहारते हुए कहा, यह बच्ची और बच्चियों जैसी नहीं है। इस तरह मेरी ईशु दादी

जहाँ बाबा, वहाँ दादी।
हर हाल में दादी ने बाबा का साथ दिया।

जी से पहली मुलाकात हुई। मैं बाबा से हर माह में दो बार मिलने आया करती थी। हर बार मुझे दादी, बाबा के आसपास मिलती थी पर उनसे बहुत वार्तालाप नहीं होता था केवल नयन मुलाकात होती थी जो बिना कुछ कहे, बहुत कुछ कह देती थी।

दादी जी से मिली शिक्षाएं

एक ना बताने वाली बात मैं आपसे शेयर कर रही हूँ। बोर्डिंग स्कूल में हर आने वाले और जाने वाले पत्र नन्स पढ़ा करती थी। इसलिए हम कोई ऐसी-वैसी बात अपने खत में, अपने माता-पिता को लिख नहीं सकते थे। तो लड़कियां मुझे अपना खत व कुछ पैसे दिया करती थी ताकि मैं उसे बाबा के घर से पोस्ट करूं। उन लिफाफों को मैं हाथ में तो नहीं ले जा सकती थी इसलिये अपनी ड्रेस के पेटीकोट पर सेफ्टी पिन से लगाकर बाबा के घर पहुंचकर दादी ईशु को पोस्ट करने के लिए दिया करती थी। कुछ समय तक तो दादी ने वे लिफाफे मुझसे ले कर के पोस्ट किए। मुझे यह भी नहीं मालूम कि मैं उस पत्र के पोस्ट की सही रकम दे भी रही हूं कि नहीं। मैं इस बात का अंदाजा भी लगा सकती हूं कि दादी ने ब्रह्माबाबा को यह बात अवश्य सुनाई होगी, दादी तो ब्रह्माबाबा के प्रति बहुत ही वफादार थी। फिर एक दिन की बात है, जब मैंने दादी को उनके ऑफिस में उन्हें कुछ लिफाफे पोस्ट करने को दिए तो दादी ने उनके बारे में पूछा। मैंने उन्हें सच-सच सुनाया। मेरी बात को सुनकर दादी जी ने कहा, यह तो ठीक बात नहीं है। अगर लड़कियों ने स्कूल या नन्स के खिलाफ कुछ लिखा है फिर तो यह गलत हो गया। दादी जी की वह बात सुनकर उस दिन से मैंने सखियों के खत इस तरह भेजना वाजिब नहीं समझा। मैं सोच रही थी कि मैं सखियों का भला कर रही हूं परंतु दादी की शिक्षा ने मुझे सावधान किया।

बाबा को अव्यक्त हुए करीब दो मास हुए थे। मुझे वह दिन बिल्कुल याद है कि हम दो-तीन बहनें दादी के साथ बाबा के आंगन में खड़े थे। शाम का समय था, थोड़ी ठंडी हवा चल रही थी। एक बहन ने दादी से भविष्य के बारे में कुछ पूछा। उस पर दादी ने बहुत वैराग्य वृत्ति से कहा, जिनको आना था, वे आ गए, अब मकान आदि का विस्तार करके क्या करना है। फिर कुछ वर्षों के बाद मैंने दादी को कहा, दादी, आपको याद है, आपने ऐसे कहा था। दादी हंसे और कहा, मुझे याद नहीं। मुझे भी आश्चर्य नहीं लगा कि दादी को याद ही नहीं है। दादी एकदम क्लीन स्लेट बन कर रही थी। कल की बात स्लेट पर नहीं हुआ करती थी, दादी उसे पोंछ लिया करती थी। यह कहना सही होगा कि दादी का पहला नंबर गुण असोचता था। दादी ने कभी किसी के बारे में न सोचा और न ही अपना ओपिनियन बनाया। उसके पास सभी का पोतामेल हुआ करता था, फिर भी अगर कोई आत्मा जिसका कोई दोष हो, उसके सामने या बाबा के सामने आ पहुंचे तो दादी का चेहरा बिल्कुल एकरस हुआ करता था। हमें इस बात की दादी को दाद देनी ही पड़ेगी।

बाबा के अव्यक्त होने के बाद मैं मधुबन में अपनी लौकिक मां के साथ पहुंची। गुरुवार का दिन था और दीदी-दादी ने ब्रह्माभोजन की व्यवस्था हिस्ट्री हॉल में करायी। हम सभी नियम प्रमाण भोजन कर रहे थे। इतने में एक गीत बजा, एक बाबा मिले मधुबन में, शिवबाबा मिले उनके तन में। गीत सुनकर मेरी आंखों में आंसुओं की धारा बहने लगी। मैं रोती गई, दादी मेरे पास बैठे थे। उन्होंने देखा कि यह रोए जा रही है। फिर बहुत प्यार से दादी ने कहा, ज्योति, क्या हुआ? बाबा की याद आ रही है! मैंने आंसुओं को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन मेरे आंसू बहते ही जा रहे थे। दादी ने बहुत प्यार से मेरी दिल ली। मेरे लिए पानी भी मंगाया। वह दिन मुझे भूलाए भी नहीं भूलेगा। इस तरह थोड़े शब्द बोलने वाली दादी ईशु ने प्यार से हमदर्दी दी। ऐसी मीठी दादी को कैसे भुलाया जाए।

दादी के मुख्य तीन गुण

दादी के मुख्य तीन गुणों में से पहला गुण था आज्ञाकारी। दादी बचपन से ही शांत स्वरूप तो थी ही परंतु बहुत आज्ञाकारी भी थी। जहां बिठाओ, जो खिलाओ, जहां सुलाओ, कभी भी दादी जी ने श्रीमत में अपनी मनमत मिक्स नहीं की। दादी जी का दूसरा गुण था ईमानदारी। दादी ने बाबा का सारा कारोबार ट्रस्टी बनकर बहुत खूबी से निभाया। तभी तो दादी बाबा की खजांची बन कर रही। दादी का तीसरा गुण था वफादारी। ईशु दादी सदा ब्रह्माबाबा के अंग-संग दिखाई देती थी। बड़ी दीदी भी बाबा के साथ-साथ चलती थी, दोनों कभी भी बाबा को अकेला नहीं छोड़ती थी। जहां बाबा, वहां दादी। हर हाल में दादी ने बाबा का साथ दिया। ईशु दादी ने दादी कुमारका को भी वैसे ही साथ दिया । दादी कुमारका पैदल करती थी, दादी ईशु साथ में जरूर होती थी। दादी कुमारका लंदन आई हुई थी तो जाहिर है दादी ईशु भी उनके साथ आए। फिर दादी कुमारका को विशेष प्रोग्राम के लिए वापस मधुबन जाना पड़ा तो मैंने दादी ईशु को कहा, दादी, दादी को तो जरूर जाना पड़ रहा है लेकिन आप दो सप्ताह के लिए और रुक जाओ, फिर आप कब आओगे। दादी ने मुझे बहुत प्यार व नशे से कहा, मैं दादी को कभी अकेले ना छोडूँ। जिस अंदाज से दादी ने ये बोला, मैंने सोचा कि इसी को कहा जाता है वफादार। ऐसे आज्ञाकारी, ईमानदार, वफादार थी हमारी प्यारी दादी ईशु।

दादी ईशु और दादी लच्छू के साथ लौकिक रिश्ता

1964 से लेकर दिसंबर, 1968 तक मैं माउंट आबू के कॉन्वेंट बोर्डिंग स्कूल सोफिया में पढ़ी थी। तब तक दादी ईशु व दादी लच्छू के साथ मेरा अलौकिक रिश्ता था। दादी ईशु व दादी लच्छू की लौकिक मां का नाम दादी कला था। दादी कला मेरे ससुर की सगी बड़ी बहन थी। दादी कला की

छोटी बहन का नाम दादी सरला था जिनको सभी अच्छी तरह से जानते हैं, जो बेंगलुरु में थी। कहानी कुछ इस तरह है कि मेरे ससुर के मां-बाप उनकी छोटी आयु में ही चल बसे। मेरे ससुर की एक बड़ी बहन थी, उसकी सास ने मेरे ससुर को गोद में लिया। ससुर की छोटी बहन सरला दादी को गोद में नहीं लिया गया। फिर दादी कला, दादी सरला को ओम मंडली में लेकर गई। सारा परिवार ओम मंडली में था। दादी सरला की उम्र करीब 6 वर्ष की थी। यहां थोड़ा गौर करने की बात है कि जब लौकिक में कोई ने गोद नहीं लिया तो बापदादा ने दादी सरला को छोटेपन से ही गोद में अपनाया। दादी कला और दादी सरला मेरे युगल की सगी बुआ थी।

दादी ईशु से अंतिम मुलाकात

फरवरी, 2019 में मेरा मधुबन जाना हुआ, मैं दादी ईशु को ढूंढ़ रही थी। दादी जानकी की तबीयत नाजुक थी, वे अहमदाबाद में थे और दादी रतनमोहिनी बेंगलुरु गई थी। दादी ईशु मधुबन में ही थी जिससे दिल को बहुत तसल्ली मिली। मैं दादी ईशु से उनके कमरे में मिलने गई। उस मुलाकात ने मुझे मेरा बचपन लौटा दिया। दादी का रूप मानो एक मिचनू जैसा था। कविता बहन ने दादी के खिलौने मुझे दिखाये। बहुत सारे खिलौने थे, मैं उन्हें देख-देख कर खुश हो रही थी। एक घंटे से अधिक बैठी रही। जब मैं कहूं कि दादी, अब मैं चलती हूं, आपसे फिर मिलूंगी तो दादी बहुत प्यार से कहे, बैठी हूं ना। दादी ने मुझे उठने भी नहीं दिया। बाबा के यज्ञ के लिए लिफाफा मैंने दादी जी को दिया। दादी को अच्छा लगा। दादी ने मुझे एक अंगूर का बड़ा बॉक्स दिया। मैंने दादी को कहा, दादी, मैं तो प्लेन में जा रही हूं, इतना अंगूर कैसे ले जा पाऊंगी! थोड़ा सा अंगूर दे दीजिए लेकिन दादी ने कहा, यह बाबा के फार्म का है, बहुत मीठा है। अंगूर मैं मुंबई ले आई। अंगूर बहुत मीठे थे। वे अंगूर खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे, इतनी बरकत थी उनमें। इसी को सच्ची दिल कहा जाता है। इसको प्यार की मुराद नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे।

अंत में यही कहेंगे कि संगमयुग में मुझे ब्रह्माबाबा मिले, इतनी सारी दादियाँ भी मिली। मेरा बड़ा नसीब रहा जो सभी दादियों के अंग-संग रहने का मौका मिला। सभी दादियाँ बहुत खूबसूरत है, उसमें से हमारी ईशु दादी बहुत-बहुत खूबसूरत है।

दादियों का आपसी प्यार बहुत प्रेरणा देता है



बी.के. निहा
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका
गामदेवी, मुंबई

बाबा के घर मधुबन में हमने बचपन से आना शुरू किया, तब से बड़ी दादी जी के साथ-साथ ईशु दादी जी के समीप आने का मौका मिला। ईशु दादी को देखती थी तो अंदर यह संकल्प चलता था कि ये कितनी भाग्यशाली हैं जो बाबा के गुप्त कारोबार को संभाल रही हैं, इन्हें दादियों और साकार बाबा के भी संग रहने का सौभाग्य मिला है। जब दादी के समीप आने का मौका मिला तो पाया कि दादी जी बहुत सरल हैं और प्यार से पालना देती हैं। जब मिलने जाती थी तो दादी हमेशा कहती थी, 'कैसे हो निहा, सब कारोबार कैसे चल रहा है।' दादी सारा हालचाल पूछती थी तो अपनापन महसूस होता था और एकदम हल्का कर देते थे। उनको मिले माना सबको मिल लिये, ऐसा एहसास होता था। धीरे-धीरे सब दादियां तो अव्यक्त होने लगी, उनके बाद भी ईशु दादी जी की बेहद पालना और सहयोग हमेशा मिलता रहा। जब भी दादी से दृष्टि लेते थे और दादी हाथ मिलाती थी तो लगता था जैसे कोई फरिश्ता हमसे हाथ मिला रहा है। उनके हाथ मिलाने में भी सौम्यता महसूस होती थी। उनको यज्ञ-सहयोग देकर बहुत ही तृप्ति की अनुभूति होती थी। बाबा के कारोबार को नम्रचित्त होके संभालना, सब कुछ समा कर शान्त, शीतल, सहनशील बनना, यह ज्ञान वो अपने कर्मों से सारे यज्ञवत्सों को देती थी। दादी जी की चाल, बोल, व्यवहार से बहुत प्रेरणायें मिलती थी कि ऐसे दिव्य गुण हमारे अंदर भी होने चाहिए। दादीजी की रग-रग में यज्ञ स्नेह था, वो महसूस होता था। भले ही बाबा ने अलग रोल के लिए दादी जी को अपने पास बुला लिया लेकिन आज भी दादी जी सूक्ष्म में हमारे साथ हैं। जब भी बाबा की भंडारी का सहयोग देने जाते हैं तो दादी जी सामने आ जाती हैं। गामदेवी सेन्टर पर भी ईशु दादी कई बार बड़ी दादी जी के साथ आये। जब गुलज़ार दादी यहाँ थे तो ईशु दादी जी खास कार से यात्रा कर उनसे मिलने आए। बड़े प्यार से दादी जी से मिलन मुलाकात की। वो रूहानी मिलन के पल अभी भी हमें याद हैं। दादियों का आपसी प्यार भी हम ब्राह्मणों को प्रेरणा देता है कि हमें भी आपस में बहुत-बहुत प्यार और रिगार्ड से रहना है। ऐसी प्यारी दादी जी को हम दिल के स्नेह भरे श्रद्धासुमन समर्पित करते हैं।

दादी जी के रग-रग में यज्ञ स्नेह था



न्यारी-प्यारी दादी ईशु जी



बी.के. अदिति
राजयोग शिक्षिका, ज्ञान सरोवर

परम आदरणीया ईशु दादी जी का सानिध्य और प्यार भरी पालना प्राप्त करने का सुनहरा अवसर मुझे मिला। दादी जी से जब भी मिले, ऐसा लगा कि एक फ़रिश्ते से मिल रहे हैं। वो कुछ बोले या न बोले पर उनके पास जाते ही हल्कापन महसूस होता था, मानो उनकी लाइट-माइट स्थिति ने सम्पूर्ण वायुमंडल को लाइट बना दिया हो। मैंने कई बार दादी जी से उनके लौकिक परिवार और बचपन के बारे में जानने की कोशिश की, क्योंकि बाकी सब दादियों के माता-पिता, परिवार आदि के बारे में वीडियो या ऑडियो रिकॉर्ड में है पर ईशु दादी जी के लौकिक परिवार के बारे में ज्यादा कभी कुछ नहीं सुना था। परन्तु, हर बार दादी जी कहती थी, मुझे कुछ याद नहीं है, बस इतना याद है कि मैं बगीचे में खड़ी थी और ब्रह्माबाबा ने मुझे कहा, आओ बच्ची, आओ और मैं बाबा के पास आ गई। मरजीवा अव्यक्त स्थिति की जीती-जागती मिसाल थी न्यारी-प्यारी ईशु दादी जी। एक बार मैं दादी जी से रात्रि के समय मिलने गई, लगभग 9:30 बजे का वक्त होगा। दादी जी आखों पर चश्मा लगाए, बड़े प्यार से दोनों हाथो में मुरली पकड़ कर एक-एक अक्षर गहराई से पढ़ रही थी। मुरली पढ़ने के बाद दादी जी ने कहा कि मै रोज़ सोने से पहले मुरली पढ़कर सोती हूँ। मैंने दादी जी को मीडिया की कुछ सेवाओं का समाचार दिया और कहा कि दादी जी, ये सब बाबा की और आपकी दुआओं और तपस्या का फल है, हम तो आपके बच्चे हैं। तो दादी जी ने कहा कि बच्ची नहीं, तुम तो मेरी सखी हो। दादी जी ने बड़े प्यार से मेरे गालों पर हाथ रखे, अपने हाथों से टोली खिलाई और खुद वरदान पढ़कर सुनाया। दादी जी द्वारा दिए गए स्वमान, वरदान और उनके जीवन के चरित्र सदा के लिए मेरे मानस पटल पर छप से गए हैं जिन्हें बार-बार स्मृति में लाते ही आत्मा तृप्त और प्रफुल्लित हो जाती है। ऐसी साक्षात् फरिश्ता स्वरूप, सत्यता, दिव्यता, अलौकिकता की प्रतिमूर्ति आदरणीया ईशु दादी जी को मेरा शत् शत् नमन।

मरजीवा अव्यक्त स्थिति की जीती जागती मिसाल थीं दादी जी



दादी जी वरदानीमूर्त थीं



बी.के. ईशु
राजयोग शिक्षिका
ओ.आर.सी., दिल्ली

कहते हैं कि बड़ों का आशीर्वाद और दुआएं सदैव छत्रछाया बनकर हमारे साथ रहती हैं। ठीक इसी तरह से 'आदरणीय ईशु दादी' जी के वरदानी बोल और दुआओं की छत्रछाया' मैं सदैव' स्वयं के ऊपर महसूस करती हूँ।

दादी जी से मैं बचपन से ही मिलती रही क्योंकि मेरा नाम भी ईशु था। 'लौकिक मात-पिता मुझे हमेशा ईशु दादीजी से मिलने की प्रेरणा देते रहते थे। उन्हें बड़ा नाज़ होता था कि मेरा नाम भी ईशु है। बचपन के दिन भुला न देना - आज यही गीत मेरे जेहन में बार-बार उभर कर आ रहा है। 'मुझे याद है कि 5 साल की आयु में' जब दादी जी से मिल रही थी तो मिलते ही दादी जी ने मेरा नाम पूछा, आपका नाम क्या है? मैंने कहा ईशु, तो दादी जी ने कहा, ईशु दादी बनोगी? यज्ञ का अकाउंट्स संभालोगी? उस समय तो मुझे समझ नहीं आया लेकिन दादी जी के वरदान से आज मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझती हूँ। जबसे 'मैं यज्ञ में समर्पित हुई' तबसे ही अकाउंट्स ऑफिस में अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। पिछले 12 वर्षों से ओआर सी दिल्ली में समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रही हूँ। उस समय से ही हर वर्ष दादी जी से मिलना होता रहा। एक बार मैंने अपना 'लौकिक और अलौकिक' जन्मदिन दादीजी के साथ बड़े प्यार से मधुबन में मनाया। 2018 के वो अविस्मरणीय पल आज भी मेरी आंखों के सामने घूम रहे हैं।' कविता दीदी के सहयोग से 'दादी का सान्निध्य सदा ही मिलता रहा।' आशा दीदी जी का भी' मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूँ क्योंकि जब भी दीदी मधुबन जाते थे तो अगर हम उनके साथ होते थे तो वे दादी जी से जरूर मिलवाते थे। दादी सदा ही मुझे देखकर कहती थी - आप कभी रोना नहीं, घर जाने का संकल्प नहीं करना। बाबा की हिम्मतवान बच्ची हो आप।

दादी जी के वरदान ने सौभाग्यशाली बनाया



सच्चाई का दर्पण दादी ईशु जी



बी.के. बालू
सदस्य, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन

मेरा सौभाग्य रहा कि संगमयुग पर प्यारे बापदादा की आदिरतन, अंग-संग रहने वाली ईशु दादी जी की पालना प्राप्त हुई। दादी प्रकाशमणि जी के साथ सदैव अपना अहम् रोल दादी जी ने अदा किया। एकदम सच्ची, जिसमें झूठ की रत्ती भी नहीं, कोई मिलावट, हेराफेरी नहीं, ऐसी थी दादी ईशु। एक बार मैं शान्तिवन से पाण्डव भवन में गया। मेरे पास किचन के सामान का 25 हजार रुपये का बिल था। निमित्त भाई ने कहा, दादी बिल पास नहीं करेंगे। मैंने कहा, सामान तो किचन का है, इसमें मेरे लिए पर्सनल कोई चीज नहीं है। उन्होंने बोला, फिर आप जाओ। मैं बिल लेकर पहले बड़ी दादी जी के पास गया, दादी जी को सुनाया। दादी तुरन्त ईशु दादी के पास लेकर गईं और बिल पर साइन करके दिया, कहा, सच्चे दिल पर साहब राजी रहता है। दादी में परख शक्ति थी।

ज्ञान-योग पर ध्यान खिंचवाती थीं ईशु दादी

एक बार शाम 6:30 बजे पाण्डव भवन के आंगन में दादी जी, बड़ी दादी के साथ बैठी थीं। मैं एक भाई के साथ नक्की झील का चक्कर लगाने निकला। दादी ने बुलाया, पूछा, कहाँ जा रहे हो ? मैंने कहा, दादी, चक्कर लगाने जा रहे हैं। दादी ने घड़ी की तरफ इशारा करते हुए कहा, अभी नुमाशाम के योग का समय है। बाबा ने 6:30 बजे से 7:30 बजे का समय योग के लिए रखा है। आप योग करने के बाद चक्कर लगाना। दादी की वह बात दिल को लग गई, तब से लेकर 6:30 बजते ही योग की तरफ ध्यान चला जाता है।

साकार बाबा ने शान्तामणि दादी, ईशु दादी को सचली कौड़ी का टाइटल दिया



प्रकाशमणि दादी जी के प्रति आज्ञाकारी, वफादार

ईशु दादी जी का बड़ी दादी जी के प्रति बहुत रिगार्ड था, कभी किसी बात में ना नहीं कहा। ब्रह्माबाबा ने दादी को निमित्त बनाया था इसलिए दादी की हर आज्ञा का पालन किया। भोजन पर दादी किसी कारण कितना भी लेट हो जायें लेकिन ईशु दादी, दादी जी का इंतजार करती थीं। जब तक दादी डायनिंग टेबल पर नहीं बैठती थीं, तब तक दादी बैठती नहीं थीं। आपस में एक-दो के प्रति इतना अलौकिक स्नेह था कि दादी, बड़ी दादी को बाबा की जगह देखती थीं।

भोजन कभी नीचे-ऊपर हो जाये तो भी ईशु दादी जी ने कभी उसमें कमी नहीं निकाली। बाबा की याद में भोजन स्वीकार करती थी। दादी का ब्रह्माभोजन के प्रति बहुत आदर था।

यज्ञ के प्रति दादी की ईमानदारी बेमिसाल थी

साकार बाबा ने शान्तामणि दादी, ईशु दादी को सचली कौड़ी का टाइटल दिया। यज्ञ में जो भी धन सेवा आये उसको यज्ञ में जमा करना, यह संस्कार दादियों की रग-रग में भरा हुआ था। कोई भी आता, दादी के हाथ में दिया माना बाबा के पास पहुँच गया, यह सभी को निश्चय था। बाबा के यज्ञ को कैसे भरपूर करना, यह दादियों से सीखने को मिला। ऐसी महान विभूति को शत्-शत् प्रणाम!



महान व्यक्तित्व अमर बना गया दादी ईशु जी को



बी.के. अवतार
मुख्यालय संयोजक
सामाजिक सेवा प्रभाग, आर.ई.आर.एफ.

अपनी सम्पूर्ण समर्पणमयता, तपस्या की सतत साधना से आलोकित सभी दिव्यगुणों व शक्तियों का अनुपम स्रोत, बहुमुखी प्रतिभा की धनी, यज्ञ की कोषागार प्रभारी होते हुए धन, यश, ख्याति, वैभव से अलिप्त रहकर सादा जीवन उच्च विचार की उदाहरणस्वरूप, त्याग, तपस्या की प्रतिमूर्ति राजयोगिनी दादी पूर्णशान्ता का महान व्यक्तित्व उन्हें अमर कर गया। दादी जी के साथ रहने के इतने अनुभव हैं जिन्हें सिलसिलेवार लिपिबद्ध किए जाने से कई ग्रन्थ तैयार हो सकते हैं किंतु उनमें से कुछ एक यहां प्रस्तुत कर, दादी की जीवन झांकी की एक झलक से पाठकों को लाभान्वित किए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

दादी जी निर्माणचित्त व सरल स्वभाव की प्रतिमूर्ति थीं, छोटे-बड़े का उनमें कोई भेद नहीं था, सर्व के लिए समादर दृष्टि थी। उन्हें अजनबी को भी अपना बनाने में महारत हासिल थी। किसी कारणवश, किसी के भी नाराज होने का समाचार उन्हें उद्वेलित कर देता था, जिससे वे नाराज व्यक्ति को खुश रखने का हर संभव प्रयास करती थीं। सदैव ट्रस्टीपन का भाव उनके मानसपटल पर बना रहता था। साकार बाबा-मम्मा के समय से लेकर दीदी मनमोहिनी व दादी प्रकाशमणि के अत्यंत समीप रहते हुए उन्हें यज्ञ की सूक्ष्म से सूक्ष्मतर गोपनीयता की पूरी जानकारी रहती थी लेकिन कभी भी उन्होंने चाहे कितना ही विश्वासपात्र व्यक्ति क्यों न हो, बड़ों की अनुमति के बिना कोई भी बात व्यक्त नहीं की।

बाबा को हर बात में आगे रखती थी

ईशु दादी कभी भी बिना पूछे अनावश्यक अपनी राय नहीं देती थी। पूछने पर भी वह बाबा को हमेशा हर कार्य के लिए आगे रखती थी। इसी संदर्भ में एक बात मेरे स्मृतिपटल पर उभर रही है। हुआ यूं कि

'यह कमरा जैसा भी है, बाबा ने दिया है, इसलिए इससे बढ़कर कोई स्थान नहीं हो सकता।'

- दादी ईशु जी

ओमशान्ति भवन बन रहा था। नए भवन का क्या नाम रखा जाए, उस पर भाई-बहनों की बैठक चल रही थी। उनमें से कुछ ने निर्माणाधीन भवन का नाम ओमशान्ति भवन रखने व कुछ ने 'यूनिवर्सल पीस हॉल" रखने की सलाह दी। इसी बीच दीदी मनमोहिनी ने ईशु दादी को पूछा कि आपकी क्या राय है, जिस पर उन्होंने सदैव की भांति यही कहा कि मेरी इसमें कोई राय नहीं है, बाबा को पूछ लो। बाबा जो कहेंगे वही हमें मान्य होगा। उनके कहते ही पूरी चर्चा पर विराम लग गया। संदेशी को बाबा के पास भेजा गया। दोनों की बात रखते हुए बाबा ने संदेश दिया कि भवन का नाम ओमशान्ति भवन, हॉल का नाम यूनिवर्सल पीस हॉल। दादी ने कभी भी बिना पूछे आगे होकर कोई राय नहीं दी, यदि कोई पूछ भी ले तो वे हमेशा बाबा को पूछने की बात करती थी जिससे बाबा के प्रति उनके समर्पण भाव की झलक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती थी।

गुजरात के सूरत शहर में एक कार्यक्रम के दौरान दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई से दादी प्रकाशमणि जी की मुलाकात हुई। कार्यक्रम के दौरान अपने भाषण में देसाई ने कहा कि जहां सौ नैष्टिक ब्रह्मचारी एकत्रित हों, वे वहां बिना बुलाए ही चले जाएंगे। उसी सभा में दादी ने प्रधानमंत्री को कहा कि संस्था के मुख्यालय मधुबन में सौ तो क्या हजारों ब्रह्मचारी हैं इसलिए उन्हें वहां आना चाहिए। इसे स्वीकार करते हुए उन्होंने संस्था के मुख्यालय में आने की स्वीकृति दे दी। देसाई के मधुबन में आने की तैयारियों से लेकर उन्हें ठहराने की चर्चा चल रही थी। जिस पर बात सामने आई कि होटल में अन्यथा सर्किट हाउस में उन्हें ठहराया जाए। पाण्डव भवन में केवल योग भवन ही ऐसा स्थान था जहां किसी मेहमान को रुकाया जा सकता था। इस पर भी ईशु दादी को पूछा गया कि उनकी क्या राय है। उनका एक ही जवाब था, बाबा से पूछ लो। अंतत: मोरारजी देसाई माउंट आबू आए, योग भवन में रुके। मेडिटेशन हॉल में प्रात:कालीन सभा में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

त्याग की पराकाष्ठा

एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक संगठन की कोषागार प्रभारी होते हुए भी ईशु दादी का आवास पुराने भवन में टीनशेड के नीचे एक गलीनुमा कमरे में था। उसी में उनकी खटिया थी। साथ ही दो अलमारियां जहां वे यज्ञ के लिए उपहार दी गई कीमती वस्तुएं व अमानती सामान, जो आने वाले उनके पास संभालने को देते थे और जाते समय वापस ले जाते थे, रखती थी। जगह इतनी तंग थी कि कोई दूसरा व्यक्ति आने पर उसे ठीक से बैठने के लिए स्थान नहीं मिल पाता था। ऐसे स्थान पर उन्होंने पूरा जीवन निकाल दिया। हालांकि उन्हें इंद्रप्रस्थ, ट्रेनिंग सेंटर, छोटे हॉल के पीछे किसी भी कमरे में स्थानांतरित करने की योजना बनी लेकिन उन्होंने कहा कि वे यहीं खुश हैं, उन्हें कोई परेशानी नहीं है, यह कमरा जैसा भी है, बाबा ने दिया है इसलिए इससे बढ़कर कोई स्थान नहीं हो सकता। उनके कमरे का नवीनीकरण व फर्श पर टाइल्स आदि लगाने की बात को भी उन्होंने विनम्रतापूर्वक टाल

दिया। उनके कमरे में जाने के लिए कोई सीधा रास्ता नहीं था बल्कि दो अन्य कमरों से गुजरकर जाना पड़ता था। एक दिन उनके अमृतवेले योग में नहीं आने का जब दीदी मनमोहिनी ने कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि सुदेश बहन की तबीयत ठीक नहीं थी, वह रात भर खांसती रही। मैंने सोचा कि उसके कमरे से निकलूंगी तो उसे डिस्टर्ब होगा। इसलिए मैंने कमरे में ही बैठकर योग किया। यह था दूसरों के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के साथ ही उनकी ओर से किसी को परेशानी न हो, उसका एक उदाहरण।

हर परिस्थिति में बेफिकर बादशाह

वर्तमान में जहां ओम शान्ति भवन बना हुआ है वहां विशाल पहाड़ था जिसको तोड़कर समतल बनाकर, विशाल इमारत खड़ी करने की योजना बन रही थी। इस पर लगने वाली भारी भरकम राशि पर चर्चा के दौरान दीदी मनमोहिनी ने ईशु दादी को कहा कि इतनी बड़ी रकम कैसे आएगी, क्या तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं है। उनका जवाब था कि कार्य बाबा का है। भवन भी उसे ही बनाना है। भंडारी भी उसी की है तो वह चिन्ता किस बात की करेगी।

बाबा ने इकोनॉमी सिखाई है

एक बार उनके पांव में हल्की-सी मोच आ गई जिससे उन्हें चलने में तकलीफ हो रही थी। मैंने कहा कि दादी, आपकी चप्पल ठीक नहीं है, क्या बाजार से चप्पल ले आऊं? जिस पर उनका जबाब था कि नहीं भाऊ, यह चप्पल बहुत अच्छी है, बाबा ने इकोनॉमी सिखाई है। जब तक चप्पल चल रही है, तब तक दूसरी चप्पल लाने की जरूरत नहीं है। इसी तरह उनके कार्यालय में एक पुरानी छोटी सी टेबल थी जिस पर वे अपने दैनिक कार्यों का संपादन किया करती थी। एक बार टेबल का पहिया कमजोर होने की वजह से टूट गया। जिस पर नई टेबल बनाने की बात हुई लेकिन उन्होंने विनम्रतापूर्वक यह कहते हुए नकार दिया कि इस टेबल का पहिया ही ठीक किया जाये। काम चल रहा है तो नए सिरे से खर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हालांकि लंबे अर्से बाद टेबल का दूसरा पहिया टूट जाने से दादी प्रकाशमणि व अन्य भाई-बहनों की ओर से किए गए भारी अनुरोध को देखते हुए ईशु दादी वह टेबल बदलने को राजी हुई।

बड़ों के प्रति आदर, निष्ठा

एक बार दीदी मनमोहिनी का सवेरे के समय स्नानगृह में पांव फिसल गया जिससे उनके सिर पर चोट आई। डॉक्टर ने उन्हें पूर्ण रूप से आराम करने को कहा लेकिन दीदी ने कहा कि कोई भी मिलने आए तो उन्हें मना नहीं करना। ईशु दादी, दीदी के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए पूरे दिन उनके

कमरे के बाहर बैठी रहती थी। जो भी मिलने आता उसे बड़े स्नेह व विनम्रतापूर्वक वस्तुस्थिति की जानकारी देती। फिर दूसरे, तीसरे व्यक्ति से यही क्रम दोहराती। यह कार्य एक दिन नहीं बल्कि आठ-दस दिन तक अनवरत चलता रहा। यदि कोई और व्यक्ति होता तो दिन में कई लोगों को एक ही बात का जवाब देने में असहजता का अनुभव करता लेकिन वे एक नहीं, कई दिन तक यह क्रम दोहराती रही। सभी के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हुए उनकी अवस्था में कोई परिवर्तन आता नहीं देखा गया। इसे देख औरों ने भी शिक्षा ली।

आपसी समन्वय की अद्भुत कला

ईशु दादी का आवास मधुबन के पुराने भवन में था जहां शान्तामणि दादी, जमना दादी, भूरी दादी, भोली दादी, सती भोली समेत चौदह बहनें अलग-अलग कमरों व एक हॉल में रहते थे। उन सभी के स्नानगृह सामूहिक ही थे जिनकी संख्या मात्र तीन ही थी। इस संबंध में एक घटना याद आती है। ईशु दादी जी आमतौर पर गर्म कपड़े नहीं पहनते थे। एक दिन वह शॉल और स्वेटर पहने हुए जब बैठे थे तो दीदी मनमोहिनी ने उनसे पूछा कि आज ये गर्म कपड़े कैसे पहन लिए। तब ईशु दादी ने कहा कि आज मुझे थोड़ी ठंड लग गई है। दीदी मनमोहिनी ने पूछा कि ठंड कैसे लग गई? तो ईशु दादी ने बताया कि आज मैंने सुबह 2 बजे उठ करके ठण्डे पानी से स्नान कर लिया। उन दिनों गर्म पानी 3 बजे आया करता था लेकिन ईशु दादी ने 2 बजे इसलिए स्नान किया ताकि बाकी बहनें जब स्नान के लिए बाथरूम में जाएं तो उन्हें बाथरूम खाली मिले। दादी की ऐसी समायोजन की भावना और ऐसा स्वपरिवर्तन देख कर के दीदी मनमोहिनी ने कहा कि आप क्लास के बाद स्नान कर लिया करें। तब से दादी ने स्नान का अपना समय बदल दिया। ऐसे उनका परस्पर समन्वय स्थापित करने का स्वभाव था, जो आगामी पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय व प्रेरणास्रोत रहेगा।

परखशक्ति व दूरदृष्टि का अद्भुत तालमेल

एक बार आबूरोड स्थित संगम भवन में मधुबन निवासी एक भाई रात को रुका हुआ था। सवेरे, संगम भवन में सेवारत एक अन्य भाई की जेब से कुछ रुपये चोरी हो गए। लम्बी छानबीन के बावजूद भी पैसे नहीं मिले। वहां की निमित्त बहन व जिस भाई के पैसे चोरी हुए थे उन्होंने आपस में मिलकर जो भाई वहां रुका हुआ था उस पर चोरी का संदेह व्यक्त करते हुए ईशु दादी को फोन पर घटना की जानकारी दी। ईशु दादी ने साफ शब्दों में कह दिया कि वह भाई चोरी कर ही नहीं सकता है। वे लोग इधर उधर ढूंढ़ लें, कहीं गलती से पैसे रह गए होंगे। लेकिन बार-बार उनके इसी आरोप के फोन आते रहे परन्तु ईशु दादी ने हर बार आरोप को नकार दिया। कुछ दिन बाद जब वास्तविक चोर पकड़ा गया तब दादी की दूरदर्शिता व परखशक्ति का सभी ने लोहा माना। हुआ यह था कि सवेरे एक भाई अपना कुर्ता कमरे में खूंटी पर टांगकर स्नान के लिए चला गया जिसमें कुछ रकम थी, इसी

बीच कोई व्यक्ति दूसरे मकान से छलांग लगाकर वहां आया व खूंटी पर टंगे कुर्ते की जेब से पैसे चुराकर भाग गया। चुराए हुए पैसे खत्म होने पर वह पुन: उसी तरह, उसी समय कमरे में आया और पकड़ा गया। उसे पुलिस के हवाले किया गया जहां उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

दीदी-दादी के सौ कदम

एक बार चिकित्सक ने दीदी को उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए नियमित पैदल चलने की सलाह दी थी। दीदी ने अपनी व्यस्ततम दिनचर्या का हवाला देते हुए पैदल चलना संभव नहीं बताया। उस समय ईशु दादी भी वहीं खड़ी थी। दीदी ने ईशु दादी की ओर इशारा करते हुए डॉक्टर से कहा कि यह जैसे कहेगी वैसे किया जा सकता है। ईशु दादी ने बिना किसी विलम्ब के कह दिया कि दीदी को पैदल करवाने की मैं जिम्मेवारी लेती हूँ। उसके बाद सभी दोपहर के भोजन पर चले गए। भोजन पर ईशु दादी ने दीदी के पैदल चलने की डॉक्टर की सलाह की जानकारी दादी प्रकाशमणि को दी। इस पर तय हो गया कि भोजन के बाद आज ही दीदी को पैदल करवाया जाएगा। उस दिन ये पाण्डव भवन से मिनिस्टर कॉटेज के मोड़ तक पैदल चलकर वापस आ गए। यह क्रम दिनचर्या में शामिल हो गया, जो अन्त तक ईशु दादी ने कभी अनियमित नहीं होने दिया। पूरी जिम्मेवारी से उन्होंने दीदी-दादी को दोपहर भोजन के बाद पैदल करवाने की ड्यूटी का निर्वहन किया, जो बाद में दीदी के सौ कदम के नाम से प्रचलित हो गयी। दीदी-दादी के प्रति ईशु दादी के मन में हमेशा ही अगाध सम्मान की भावना रही। उनका कहना था कि इन्हें बाबा ने निमित्त बनाकर, बाबा की गद्दी पर बिठाया है इसलिए वे बाप समान ही हैं।

लेखे-जोखे में संपूर्ण पारदर्शी

यज्ञ में पहले से ही यह नियम बना हुआ है कि सेवाकेंद्रों से बहनें क्लास के भाई-बहनों को मधुबन में लेकर आती हैं, उनकी ओर से की गई यज्ञसेवा को नाम सहित ईशु दादी को प्रस्तुत करती हैं। एक बार किसी बहन की ओर से दिए गए हिसाब व नगदी में दस रुपये का अंतर आ रहा था। कई बार हिसाब मिलाया व नगदी गिनी लेकिन अंतर बरकरार रहा। फिर उन्होंने मुझे भेजकर उस बहन को बुलाया व विनम्रतापूर्वक कहा कि बहन जी, आपने जो हिसाब दिया है, लगता है उसमें से दस रुपये मेरे से कहीं गुम हो गये हैं अथवा आपसे हिसाब में कुछ त्रुटि रह गई है। मुझे दीदी-दादी को हिसाब देना है इसलिए या तो आप इस में दस रुपये काटकर नया हिसाब बना कर दो या त्रुटि की क्षतिपूर्ति करके दो जिससे मैं सही हिसाब करके दे सकूँ। हालांकि वे दस रुपये का कम हिसाब दे भी देती तो कोई उनसे पूछने वाला नहीं था फिर भी उन्होंने हिसाब की पारदर्शिता बनाए रखने के लिए यह कदम उठाया, जो उनकी बड़ों के प्रति निष्ठा, यज्ञ के प्रति ईमानदारी के साथ स्वयं की पारदर्शिता का भी एक अनुपम उदाहरण है।



दादी अष्ट रत्नों में से एक गुप्त रत्न थी



बी.के. गायत्री
राजयोग शिक्षिका, कोलाबा, मुंबई

मैं ने बचपन में 6-7 वर्ष की आयु से मधुबन में सभी बड़े महारथियों से, विशेष सभी दादियों से बहुत-बहुत प्यार पाया है, रूहानी पालना ली है। मधुबन में सबसे पहले मीठी-प्यारी प्रकाशमणि दादी जी बांहें पसारे हमारा स्वागत करती थीं। जब हम दादी जी को देखते थे तो उनके साथ और तीन मूर्तियाँ भी देखते थे। मोहिनी दीदी, ईशु दादी और मुन्नी दीदी। ईशु दादी जी को मैं 1973-74 से जानती हूं और मेरा बचपन उनके तथा उनकी लौकिक सिस्टर लच्छू दादी के साथ बीता है। ईशु दादी जी की लौकिक मदर मुंबई में ही रहते थे। उनकी दूसरी माता जी की बेटी नानकी बहन मुंबई में, बांद्रा में रहते थे और हर 18 जनवरी को हम उनको ब्रह्माभोजन में इनवाइट करते थे। गामदेवी में भी उनके माता जी और उनकी यह लौकिक सिस्टर आया करते थे। इस तरह मुझे उनके लौकिक परिवार से भी बहुत नजदीकियां मिली हैं। चार मास मैं मधुबन में सेवाओं में रही। प्रकाशमणि दादी ने मुझे सेवा दी थी कि ईशु दादी के ऑफिस में बैठना है और जो भी लेटर्स आते हैं उन्हें खोलकर ईशु दादी को पढ़कर सुनाने हैं और बड़ी दादी को दिखाने, सुनाने वाले इंपॉर्टेंट लेटर अलग करने हैं। उसमें कई ऐसे लेटर होते थे जिनके जवाब भी मैं लिख लेती थी और यह मेरा विशेष कार्य था। यज्ञ के बहुत कॉन्फिडेंशियल कार्य मैंने ईशु दादी के साथ किये हैं। अनेक आत्माएं दादी को सोना, चांदी, हीरे-मोती देते थे। दादी का इतना फेथ था कि यज्ञ में जितना भी सोना-चांदी आता था तो मुझे देते थे और मैं मुंबई में उसका भाव करके, सेल करके, बाबा के यज्ञ में वापस देती थी। जैसे ही हम कॉटेज में जाते थे, तो मोहिनी दीदी, मुन्नी दीदी तो अंदर होते थे पर बाहर बैठे ईशु दादी के दर्शन होते थे। दादी तुरंत पूछती थी, गायत्री कैसी है? ठीक है? सब ठीक है कोलाबा में, मजे में हो? ऐसे मीठी बातें करती थी, प्यार करती थी, टोली खिलाती थी। आज विश्व कल्याणी भवन का वो कमरा ईशु दादी की याद का मंदिर है। दादी अष्ट रत्नों में से एक गुप्त रत्न है। प्रत्यक्ष ना हो कर भी सबके दिलों में अभी तक भी प्रत्यक्ष है और सदा प्रत्यक्ष रहेगी। मीठी ईशु दादी को मेरा दिल से प्रणाम। शत-शत वंदन, श्रद्धांजलि, पुष्पांजलि, स्नेहांजलि देती हूं।

आज विश्वकल्याणी भवन का वो कमरा दादी ईशु जी की याद का मंदिर है


BRAHMA KUMARIS
VISHWA SHANTI SADAN
OPP. AUROBINDO COLLEGE, FEROZEPUR ROAD
VILLAGE-JHANDE, LUDHIANA

दादी जी हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लेती थीं



बी.के. सीए रुचिका जैन
लुधियाना

रशु दादी नाम के समान इष्ट स्वरूप में सदा स्थित रहने वाली, शांत और वरदानी, स्नेह की मूर्ति थीं, लेकिन समय के अनुसार, व्यक्ति के अनुसार स्वयं को हर परिस्थिति में मोल्ड करने वाली दादी थीं। वे जब स्टेज पर बाबा के बच्चों को देखती थीं तो खुशी से ताली बजाती थीं और सभी को कहती थीं ताली बजाओ। जब छोटे बच्चे उनसे मिलने जाते थे तो बहुत प्यार से मिलती थीं, आत्मिक स्थिति में बहुत रिगार्ड से मिलती थीं, यज्ञ के लिए तो इतनी ईमानदार और यज्ञ की रक्षक थीं कि हर समय बाबा का यज्ञ ही उनके सामने रहता। एक बार उनके लिए लुधियाना से दीदी ने गर्म शॉल भिजवाई जिसकी उनको शायद जरूरत भी रही होगी और थोड़ा पैसा भी साथ में भेजवाया था, शॉल को देखते ही दादी ने कहा ये तो कपड़ा है - बहुत ही साधारण तरीके से कहा, वो शॉल उनके लिए आई थी यह बिल्कुल भी नहीं सोचा और जब यज्ञ की भंडारी में सफल करने का लिफाफा देखा तो बहुत खुश हो गईं कि वह बाबा के यज्ञ के लिए आया है, दादी जी इतना यज्ञ स्नेही थीं ।

हर समय बाबा का यज्ञ उनके सामने रहता



दादी जी यज्ञ का आधार स्तंभ थी



बी.के. रश्मि
अकाउन्ट्स डिपार्टमेन्ट, शांतिवन

हमारी बड़ी दीदी, सरला दीदी जी (पानीपत), हमेशा कहते थे कि ईशु दादी जी का यज्ञ में अहम पार्ट रहा है, दादी जी यज्ञ का आधार स्तंभ है। जब इस तरह से सुनते थे तो मन में संकल्प आता था कि ऐसी महान आत्मा से मुझे अवश्य मिलना है।

बाबा ने यह संकल्प 2018 में पूरा किया जब दादी जी के ऑफिस (अकाउंट्स डिपार्टमेन्ट) में सेवा करने का सुनहरा अवसर मिला।

सेवा आदि से फ्री होने के बाद शाम के समय रोजाना एक घन्टा दादी जी के पास जाती थी और देखती थी कि कैसे दादी जी आने वाले भाई-बहनों से मिलते हैं। उनको स्नेह भरी दृष्टि, अलौकिक पालना और समझानी भी देते थे। सभी आत्मायें संतुष्ट होकर जाती थीं।

उसके बाद दादी जी मुझसे सारे दिन का समाचार सुनते थे कि मैंने सेवा ठीक प्रकार से की, मैं सेवा पर समय पर जाती हूं। कभी-कभी मैं दादी जी से कुछ छुपा लेती तो दादी जी परख लेते कि तुम आज समय पर ऑफिस नहीं गई, तब दादी जी कान पकड़ कर समझानी भी देते और कहते, मेरी प्यारी सखी, सेवा और बाबा के साथ कभी भी समझौता नहीं करना।

दादी जी में ईमानदारी, वफादारी के साथ परखने का भी विशेष गुण था। कई बार जब मैं शाम को दादी जी से मिलने जाती तो वे परख लेते थे कि आज मैं उदास हूँ। तब मैंने अनुभव किया कि दादी जी कैसे मेरी सखी बन करके, कभी टीचर बनकर के मेरी उदासी सेकेण्ड में खत्म कर देते थे।

ईशु दादी जी गुणों की खान तो थी ही लेकिन मेरे लिए वो स्वयं भगवान द्वारा बनाई हुई ''शिक्षा की

दादी जी से बाबा की बातों के सिवाय कोई दूसरा शब्द कभी नहीं सुना



किताब" थी। दादी जी के हर कर्म से शिक्षा मिलती थी। दादी जी से बाबा की बातों के सिवाए कोई दूसरा शब्द कभी नहीं सुना। जब भी दादी जी से मिलो, उनके यही शब्द होते ''मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई'' दादी जी में सिर्फ अलौकिकता थी। दादी जी से कभी लौकिक के बारे में पूछते भी तो उनको जैसे स्मृति ही नहीं थी, वो कहती कि मेरा लौकिक है ही नहीं, मैं थी ही बाबा की।

मुझे याद है, जब किन्हीं कारणों-वश दादी जी से मिलने नहीं जा पाती तो कविता दीदी, दादी जी से फोन पर बात कराते। तब दादी जी कैसे एक छोटी बच्ची बनकर बातें करते कि कहां हो तुम मेरी सखी, मुझसे मिलने नहीं आती, मैं तो तुम्हें रोज याद करती हूँ, दादी जी के इतने स्नेह भरे बोल सुनकर आंखें भर आती थी।

जब मैं दादी जी के कमरे में प्रवेश करती थी तो दादी जी बहुत प्यार से कहती, आ गई मेरी ''आनन्दी माता" और पास बैठाकर बहुत दुलार करती थी, कभी कान खींचती, कभी सखी बन जाती। उस समय मुझे लगता था जैसे मुझे आज सारी खुशियाँ मिल गयी।

दादी जी सबसे कहते थे, ये तो मेरी ''आनन्दी माता" है। कभी-कभी दादी जी कहते, आज तुम मुझे मुरली सुनाओ। मुरली सुनते हुए दादी जी ध्यान खिंचवाते थे कि तुम किस की मुरली सुना रही हो ? बुद्धि बाहर तो नहीं है, ऐसे दादी जी पुरुषार्थ भी कराते थे ।

दादी जी जब ऑफिस आते तो हम सभी से मिलते, स्वयं टोली खिलाते और एक-एक से पूछते कि किस की सेवा कर रही हो ? बुद्धि लौकिक में तो नहीं जाती ? मन भारी तो नहीं होता सेवा में ? ऐसे दादी जी समझानी देकर, सबको सन्तुष्ट कर देते थे।

दादी जी, आपके साथ बिताये हुए पलों में मिली हुई शिक्षा, समझानी को स्वयं भी धारण करूंगी और दूसरों को भी कराऊंगी ।

ऐसी गंभीरता की देवी, अन्नपूर्णा, यज्ञ की आधार स्तंभ को अकाउन्ट्स डिपार्टमेन्ट के सभी भाई-बहनों की तरफ से भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शत्-शत् नमन।

बाबा-बाबा मुख से कहती, जुड़वाती शिवबाबा से तार, खुश रहती और खुशी बांटती देती सबको रुहानी प्यार।

ईमानदार और वफादार, अंतर्मुखता की वो खान, एकनामी और इकोनॉमी, कथनी-करनी एक समान।

एक प्यारी सी, नन्हीं सी कली, बाबा के हाथों में पली, बनके फरिश्ता नील गगन में, उड़ चली वो उड़ चली।



सर्व को बेदाग बनाने वाली दादी ईशु थीं सच्ची कोहिनूर



डॉ. बी.के. मनीषा
फिजियोथेरेपिस्ट, शिवमणि होम

साकार बाबा को देखा नहीं, यह उलाहना हमेशा मेरे मन में रहता था लेकिन बाबा ने दादियों की सेवा का चांस देकर उसे भी पूर्ण कर दिया। आदरणीया ईशु दादी जी के पास फीजियोथेरेपी की सेवा के लिए प्रतिदिन मुरली क्लास के बाद जाना होता था, जिससे दादी जी की विशेषताओं को अनुभव कर पाए। कई बार मन में कुछ उलझन भी रहती थी लेकिन दादी जी के संग से मैं स्वयं को एकदम हल्का अनुभव करती थी। दादी जी से प्रतिदिन मिलना, उनको एक्सरसाइज कराना, मेरी दिनचर्या का हिस्सा ही बन गया था। दादी जी मुझे टीचर बुलाते थे। कभी जब दादी जी बाहर होते थे और मैं सेवा में नहीं जा पाती थी तो अनुभव होता था कि कुछ खालीपन है। बाबा का प्यार दादी जी की नस-नस में था। उनके संग में रहते अनुभव होता था कि बाबा को याद करना कितना सहज है। दादी जी बच्चों के जैसी निश्छल थीं, उमंग-उत्साह में भरपूर थीं, हमेशा खुशी में नाचती रहती थी और नचाती रहती थीं।

आदरणीया ईशु दादी जी के प्रति कुछ पंक्तियां-

निर्मल, निश्छल, निस्वार्थ भाव से ईशु दादी जी थीं भरपूर, वफादार, फरमानबरदार बन विघ्न करती थीं दूर,
पुण्य आभा वाली थीं बापदादा के नैनों की नूर, सर्व को बेदाग बनाने वाली ईशु दादी जी थीं सच्ची कोहिनूर।
ज्ञान, योग, पवित्रता का बल बढ़ाने देती थीं खुशी में रहने की समझानी, इसीलिए आज भी हम याद करते दादी जी की दिव्य कहानी, सदैव ब्रह्मावत्सों को स्मरण आती उनकी स्मृति सुहानी,
वर्णन करते नहीं थकते सब दादी जी की महिमा अपनी जुबानी।
बचपन से ही यज्ञरक्षक बन रहीं, लुटाती सबको ज्ञान, स्नेह, प्यार से झोलियां भर दी, लुटाये सब पर वरदान,
बाप समान सदैव ऊंची स्थिति में रह दिया महादान, इतनी महानता होते भी बन कर रहे निर्मान।
हम दादी जी को याद करके दिल से अर्पित करते भावांजलि,
उनकी विशेषताओं को जीवन में धारण करना ही होगी सच्ची श्रद्धांजलि।।

दादी जी बच्चों के जैसे निश्छल और उमंग-उत्साह से भरपूर थीं



दादी जी सबको संतुष्ट करती थीं



बी.के. शिल्पा
राजयोग शिक्षिका, राजौरी गार्डन, दिल्ली

बात 2020, जुलाई 17 की है। उस दिन मेरा जन्मदिन था। मैं उस समय मधुबन में ही थी। सुबह जब मैं प्यारे बाबा को याद कर रही थी तो रूहरिहान करते मैंने बाबा को कहा कि आप तो निराकार हैं पर मुझे आप आज साकार में अपना प्यार अनुभव करवाइए। दोपहर में ईशु दादी जी के पास गई (2018 से हर वर्ष मैं दादी जी के साथ ही अपना जन्मदिन मनाती थी और दादी जी ने सदा ही मुझे विशेष अनुभव करवाया है)। दादी जी ने और कविता दीदी जी ने मुझे जन्मदिन की बधाई दी, दादी जी ने अपने पास बिठाया और बहुत प्यार किया। अपने हस्तकमल मेरे सिर पर आशीर्वाद के रूप में रखे तो बहुत शक्ति महसूस हुई। उसके बाद गाल पर प्यार से हाथ रखा और फिर मेरा हाथ अपने हाथों में ले लिया। मुझे बाबा का प्यार साकार में फील हुआ। फिर दादी जी ने बड़े प्यार से टोली खिलाई, वरदान दिया और एक साड़ी तथा बैज सौगात में दिए। बहुत सुख और शक्ति का अनुभव हुआ। प्यारे-मीठे बाबा ने अपने समान दादी जी के द्वारा अपना प्यार साकार में अनुभव करवाया। आज भी वो पल याद आते ही खुशी के मोती आंखों में आ जाते हैं।

इस वर्ष अपने जन्मदिन पर मैंने दादी जी को बहुत याद किया। उनकी दी हुई साड़ी मैंने इस जन्मदिन पर पहनी तो अनुभव हुआ कि दादी जी सदा साथ ही हैं और उनकी ब्लेसिंग्स और प्यार सदा हमें आगे बढ़ा रहा है।

सुख, शांति का अनुभव कराती दादी ईशु जी



निरहंकारी, सदा मुस्कुराती, ममता की मूरत



बी.के. प्रभा मिश्रा
राजयोग शिक्षिका, मधुबन

मुझ आत्मा का सौभाग्य रहा, दादी से कई बार मुलाकात करने का क्योंकि मैं बाहर सेवाओं पर जाती थी, सेवा से लौट कर, यज्ञ सेवा अर्थ धन या जो कुछ भी दिया जाता था वो दादी के पास जमा कराती थी। दादी को देख कर ऐसे लगता था कि हम दादी से बहुत बात करें लेकिन वो तो शांति की मूर्त थी, सिर्फ आँखों से ही इतना स्नेह भर देती थी जिसका कोई ठिकाना नहीं।

एक बार मैं बाहर से सेवा करके आई और सोच रही थी की दो रोज बाद फिर मुझे दूसरी जगह जाना है, वहाँ से लौट कर भी आऊँगी तो सब एकत्र करके दे दूँगी। शाम को मैं योग करने गई, दादी बाहर बैठा करती थी कॉटेज के तो दादी को ओम शांति करने चली गई। दादी ने मुझे याद दिलाया कि तुम वहाँ से आई हो ना, वहाँ से बहुत कुछ दिया है। मैंने कहा, जी दादी, रुम पर रखा है, तो कहा, ले आओ। मैंने कहा, दादी जी, मैं सोच रही थी, कल मुझे और कहीं जाना है, तो वहाँ से भी जो दिया जाएगा वो साथ में दे दूंगी। दादी ने कहा, जो अमानत है, सफल करके चले जाओ, दो दिन बात जब वहाँ से आओगी तब दे देना। दादी ने तुरन्त दान महा कल्याण की शिक्षा बहुत प्यार से दी। ज्ञान की और गुह्यता आती गई तो मुझे समझ में आया कि मैं 6-7 दिन बाहर प्रोग्राम करने जाऊँ और क्या पता मेरी ओम शांति हो जाए, तो वो अमानत मेरे कमरे में कौन ढूंढ़ेगा, वो मेरे भाग्य से कट जायेगा। दादी इतने प्यार से समझा देती थी।

एक बार मैं कहीं गई थी और मेरा बैज टूट गया था। मैंने बहुत अच्छे से बैज को पैक करके मुन्नी बहन से कहा, मेरा बैज टूट गया है। ईशु दादी भी बैठे थे, बड़ी दादी भी बैठे थे, ईशु दादी ने कहा, दिखाओ। दादी

हर एक की मनोकामना पूर्ण करने वाली ऐसी हमारी प्यारी दादी थीं



ईश्वरीय सेवा में मगन दादी ईशु जी

वो पुड़िया खोलती जा रही थी, खोलती जा रही थी क्योंकि वो 5-6 परतों में बहुत अच्छे से पैक किया था। दादी ने कहा, इसे बहुत वैल्यु है बैज की, देखो कितने अच्छे से पैक किया है। दादी के शब्द सुनकर मुन्नी बहन ने तुरन्त बैज दे दिया। इन आत्माओं का एक-एक शब्द हमारी छोटी-छोटी बातों को इस तरह से पेश करता था जो सामने वाले का भी उमंग-उत्साह बढ़ता था।

एक घटना और याद आती है, मेरे पुत्र पमपोश ने बाइक ली थी, मैंने कहा था, दादी ओपनिंग करेंगे। हम विश्वकल्याणी के सामने बाइक ले कर गए और दादी ने वो स्वास्तिका वगैरह बनाया, नारियल तोड़ा, सभी को सौगात दी और टोली भी दी। हमारे लिये वो बहुत बड़े उत्सव का दिन था। दादी ने बेटे को कहा कि मम्मी को पीछे बिठा कर एक चक्कर लगा कर आओ। दादी ईशु बहुत कम बोलती थी लेकिन इतने में ही वो बेहद अपनापन भर देती थी।

दो साल पहले मेरे बर्थडे पर दादी बड़े प्यार से आए थे। फिर दादी ने जो गिफ्ट दी वो आज तक याद है। एक-एक भाई-बहन को अपने हाथ से केक खिलाया। ऐसा लगा, भगवान हमारे घर में आ गए और बहुत प्रेम से काफी समय दादी रुके। हर एक की मनोकामना पूरी करने वाली ऐसी हमारी प्यारी दादी थी। बेटा कहीं शूटिंग के लिये जा रहा था, दादी से मिलने गया। दादी ने कहा, ये तो आदिरत्न है। बेटे को आज तक वो शब्द याद है और कहता है, मुझे तो दादी का वरदान है कि में आदिरत्न हूँ। बातें छोटी होती हैं पर इन बड़ों के एक-एक शब्द वरदान बन जाते हैं।

मैं कहूँगी कि शांति की मूरत, यज्ञ की वो रक्षक थी, कुबेर भी करे नमस्कार, ऐसी वो मूरत थी। निरंहकारी सदा मुस्कुराती ममता की वो मूरत थी, बाप-दादा की दादियों की लाड़ली, मेरी प्यारी ईशु दादी थी। ऐसी दादी को कोटि-कोटि प्रणाम।



आज भी दादी जी अपनी उपस्थिति महसूस कराती हैं



बी.के. पंकज
शांतिवन

आदरणीया ईशु दादी जी जहां भी यज्ञ सेवा अर्थ मधुबन से बाहर जाते तो मुझे अपने साथ ले जाते थे। दादी जी के साथ देश-विदेश में सेवा करने का मुझे मौका मिला। मैं अपने आप को बहुत-बहुत सौभाग्यशाली समझता हूं कि ऐसी बाप समान दादी जी के अंग-संग सेवा करने के निमित्त बना।

दादी जी के बारे में जितना भी लिखो उतना कम है। दादी जी हमारे जैसे छोटे भाईयों को भी ''भाई साहब'' कहकर बुलाते थे, इतने निर्माणचित्त थे दादी जी। मैं कभी फ्लाईट में नहीं बैठा था लेकिन दादी जी की सेवा का मौका मिलने के कारण कई बारी फ्लाईट में बैठने का सुअवसर मिला। दादी जी सिर पर हाथ फेरकर बहुत प्यार करते थे और खुद तो हमेशा खुश रहते थे लेकिन हमें भी अपनी खुशी से भरपूर करते थे। बापदादा का मैं तहे दिल से शुक्रिया करता हूं कि अंत तक दादी जी की सेवा का चांस मुझे दिया। बहुत-बहुत थैंक्स बापदादा एवं हमारी प्यारी दादी जी का।

ऐसा लग ही नहीं रहा है कि दादी जी हमारे बीच नहीं रहे किंतु ऐसा लगता है कि आज भी दादी जी हमारे साथ हैं, हमारे अंग-संग हैं ।

दादी जी खुद खुश रहते और सभी को खुशी से भरपूर करते



दादी ईशु जी छोटे-बड़े सभी पर प्यार लुटाती थीं



डॉ. बी.के. ओम प्रकाश
ब्रह्माकुमारीज़, शांति सरोवर
सिरसा, हरियाणा

मैं जब-जब मधुबन आता था, सभी दादियों से मिलना-जुलना होता था परंतु 7-8 वर्ष पहले एक बार मैं ईशु दादी जी से मिलने गया तो मैंने कविता दीदी से इच्छा व्यक्त की दादी जी के एक्यूप्रेशर पॉइंट्स करने की। कविता दीदी ने कहा कि आप एक दिन करो, अगर दादी जी को अच्छा लगा तो फिर आप रोजाना करना। यह मेरा परम सौभाग्य है कि दादी जी को मेरी एक छोटी सी सेवा पसंद आ गई। तब से मैं जब-जब मधुबन आता तो दादी जी की यह सेवा किया करता था। इस सेवा के दौरान दादी जी की जिन-जिन विशेषताओं को मैंने अनुभव किया, उन्हें कलमबद्ध करने की कोशिश की है।

दादी जी के रोम-रोम में बाबा

महाभारत का एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है जो कि दादी जी पर बिल्कुल खरा उतरता है। प्रसंग यह है कि रुक्मणी, श्री कृष्ण को अक्सर उल्हना देती थी कि आप अर्जुन को बहुत ज्यादा प्यार करते हो, उसी को याद करते रहते हो। श्री कृष्ण ने कहा कि कभी समय आने पर बताऊंगा। एक बार अर्जुन, श्री कृष्ण को मिलने द्वारिका आये। जलपान करने के बाद श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि आप लम्बा सफर करके आये हो, थोड़ा विश्राम कर लो, फिर भोजन भी ग्रहण करेंगे और साथ-साथ बातचीत भी करेंगे। जब भोजन का समय हुआ तो रुक्मणी ने सेवक को अर्जुन को बुलाकर लाने को कहा, काफी देर तक सेवक वापस नहीं आया तो रुक्मणी ने दूसरे सेवक को भेजा। जब वो भी नहीं आया तो रुक्मणी खुद जाकर

बाबा के प्रति अगाध प्यार उनके रोम-रोम, से झलकता था



देखती है कि अर्जुन सोया हुआ है और दोनों सेवक टकटकी लगाये उसे देख रहे हैं। वह भी देखने लग गई। कुछ देर बाद श्री कृष्ण आए और रुक्मणी से पूछा कि आप तीनों यहां क्या कर रहे हो। रुक्मणी ने कहा कि अर्जुन गहरी नींद में सोया हुआ है लेकिन उसके रोम-रोम से आपके नाम की धुन निकल रही है। तब श्रीकृष्ण ने कहा कि रुक्मणी, अब आपको समझ में आया कि मैं अर्जुन को इतना प्यार क्यों करता हूं! इसी प्रकार, दादी जी के दिलो-दिमाग में, वाणी-कर्म में एक बाबा के सिवाय कुछ नहीं होता था। बाबा के प्रति अगाध प्यार उनके रोम-रोम, श्वास-श्वास में झलकता था।

मम्मा-बाबा का स्वरूप थी दादी जी

मैंने दादी जी से साकार बाबा की पालना का अनुभव किया। दादी जी के संग बीते वो सुनहरी पल अवर्णनीय और अविस्मरणीय हैं। मैंने देखा कि दादी जी से मिलने भाई-बहनें आते थे तो दादी जी छोटे-बड़े सभी पर एक समान बेहद प्यार लुटाती थी, सदा कहती थी कि मीठे बाबा के मीठे बच्चे आये हैं।

सर्वश्रेष्ठ रूहानी कोषाधिकारी

टीचर बहनें यज्ञ की भण्डारी का चेक जब देती थी तो दादी जी चेक को पहले गौर से चेक करते थे और कोई कमी नजर आती थी तो उसे तुरंत ठीक कराते थे। इतनी बड़ी आयु में भी दादी जी यज्ञ के वित्तीय कार्यों को बहुत बारीकी से संपन्न करते थे ।

मीठी-प्यारी दादी जी गुणों व शक्तियों की चैतन्य मूर्ति थी, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दृढ़ता के साथ ईश्वरीय सेवा में लगाया, लाखों आत्माओं की रूहानी पालना की और बाबा को प्रत्यक्ष किया। ऐसी कोहिनूर हीरे समान दादी जी को मैं दिल की गहराईयों से शत्-शत् नमन करता हूं।



तपस्या उनकी दृष्टि, वृत्ति, बोल, वाइब्रेशन में समाई हुई थी



बी.के. बाला
शांतिवन, आबू रोड

बाबा की मुरली में अक्सर आता है कि बच्चे, तुम चलता-फिरता म्यूजियम बनो। आगे ऐसा समय आने वाला है जो ज्ञान सुनाने का समय नहीं होगा लेकिन आने वाली जनरेशन चलन से समझेगी, देखेगी। ईशु दादी उसका उदाहरण थी। बोलती तो बहुत कम थी लेकिन उनके हर बोल में बाबा ही समाया था। बाबा ने यज्ञ की जिस सेवा के लिए उनको निमित्त बनाया, निर्माणता और अथकपन से उसका उन्होंने निर्वहन किया।

दादी में अपनापन भी लगता था और स्नेह के साथ वह शिक्षा भी दे जाती थी। कैड (CAD) प्रोग्राम में दादी अक्सर आती थी। उनको देखने से ही जितने भी हृदय वाले पेशेंट होते थे वो झूम उठते थे। एक ओम शांति शब्द से भी सब खुश हो जाते थे, यह उनकी तपस्या का ही फल था। तपस्या उनकी दृष्टि, वृत्ति, बोल, वाइब्रेशन में समाई हुई थी। ऐसी ईशु दादी जी भले हमारे साथ आज साकार रूप में नहीं है लेकिन दिलों में सबके है। बापदादा के साथ हम दादी जी को कभी नहीं भूल सकते। दादी जी को हम शत्-शत् नमन करते हैं। बापदादा की शक्तियों को अपने अंदर धारण करते हुए हमें भी उन जैसा बनना है और बापदादा का जो कार्य है दुखियों को सुखी बनाना, स्वर्ग की स्थापना करना, उसमें दिल से सहयोग देकर बापदादा और दादियों के नाम को ऊंचा करना है, पूरे विश्व में उनका झंडा फहराना है।

उनको देखने से ही हृदय रोगी झूम उठते थे



बी.के. हेमंत
सदस्य, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन

दादी जी
आध्यात्मिकता की
पराकाष्ठा को छू गयीं

सागर को हप करने वाली ज्ञान-बुलबुल दादी ईशु जी

ज्ञ इतिहास और भगवद् चरित्रों को समीपता से देखने वाली दादी ईशु जी, ब्रह्मावत्सों की जीवन कहानियों के पत्र पढ़कर, बाबा के समक्ष उनका चित्रण करने वाली एक चित्रगुप्त भी थी।

बाबा के चुंबकीय व्यक्तित्व का आकर्षण

दादी जी का जन्म सिंध-हैदराबाद में 1 मई सन् 1928 को हुआ। पिता 'दयालदास थडानी' एवं माता 'कमला' ने उन्हें नाम दिया 'ईश्वरी'। सदा शांतचित्त व धीर-गंभीर स्वभाव के अनुरूप शिवपिता ने अलौकिक नाम दिया 'पूर्णशांता'। ब्रह्माबाबा लाड से 'ईशु' कहते थे। दादी का घर बाबा के घर के पास ही था। एक दिन दादी बाहर निकली, सामने बाबा खड़े थे, उन्हें देखते ही जैसे साक्षात्कार हुआ कि ये कोई साधारण इंसान नहीं लेकिन बहुत ऊंचे व्यक्ति, दैवी हस्ती, महान विभूति, महापुरुष हैं, इनमें कुछ पावर है। दादी मात-पिता से बोली, 'मैं इनके पास जाती हूँ, तो वे सत्संग में लेकर गये। वहां दादी, बाबा के चुंबकीय व्यक्तित्व से आकर्षित हो गोद में समा गई। बाबा के नि:स्वार्थ प्यार-दुलार ने दादी को बाबा का दीवाना बना दिया। वे मात-पिता से बोली, 'मैं बाबा के पास ही रहूंगी। मात-पिता ने भी खुशी से छूट्टी दी, तब बच्चों के लिए बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग में सात वर्षीया ईश्वरी रूहानी व जिस्मानी पढ़ाई पढ़ने लगी। उसी दरम्यान दादी से 6 वर्ष छोटी बहन 'लच्छू दादी व चार भाईयों सहित पूरा परिवार समर्पित हुआ।

परमात्म टचिंग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की

इसी बीच सिंध-हैदराबाद में पवित्रता पर हंगामे हुए तो बाबा कराची गये। जिन बच्चों के नाम वारंट निकले वे घर गये। भाग्यशाली दादी बाबा संग कराची आई। बाबा मुरली चलाते तो दादी नोट्स लेती पर बाबा की स्पीड (गति) बहुत फास्ट होती, तो कोई लिख नहीं पाता। इसलिए दादी ने परमात्म टचिंग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की। लम्बे शब्दों व वाक्यों के प्रतीक बनाए, जैसे लक्ष्मी नारायण के लिए LN (एल एन), सृष्टिचक्र का गोल चिन्ह, ऐसे कई निशानियां नोट कर याद की, उसी आधार से पूरी मुरली लिख लेती। दादी, मम्मा के साथ रहती व बाबा अलग रहते। इसलिए वे बाबा के पास क्लिफ्टन पर मिलने जाते, जहां बाबा हंसाते, बहलाते, प्यार से मीठी-मीठी बातें सुनाकर खुश करते। बाबा कहते, 'खुशी जैसी खुराक नहीं, सदा खुश रहो, नाचते रहो, हंसते रहो, उड़ते रहो, कभी नाराज होकर न रोना, न मूड ऑफ कर मुरझाना। दादी कहती, 'बाबा आपकी सुनाई अच्छी-अच्छी बातें नोट की हैं, तो बाबा प्रसन्न हो प्यार बरसाते। मम्मा के भवन में वापिस आने पर, मम्मा सुनाने के लिये कहती तो वे बाबा की बातें सुनाती, सभी खुश हो ताली बजाते। उन्हें अपने भाग्य पर नाज होता कि बाबा ने बचपन में ही हाथ पकड़ा है। मम्मा-बाबा के अंग-संग 14 वर्ष की भट्ठी में पाई अपार खुशियाँ बयां करते, दादी के हृदयवीणा के तार झंकृत हो गा उठते, 'खुशियों भरी जिंदगानी हमारी, देवी-देवताओं से भी जो है प्यारी!

सच्चाई-ईमानदारी-वफादारी के संस्कार

शांत स्वभावी ईशु दादी की सच्चाई-ईमानदारी-वफादारी के संस्कार देख, दादी को नौ वर्ष की उम्र से ही बाबा उन्हें तिजोरी की चाबियां सौंपने लगे। यज्ञ के आदि से ही बाबा की राइट हैंड बन, वे यज्ञ का स्थूल खजाना व आर्थिक कारोबार संभालने के निमित्त बनी। बाबा-मम्मा प्यार से उन्हें 'मनी प्लांट भी कहते थे। वे बाबा के हर आदेश को सिर माथे रख श्रीमत के नक्शे कदम चलती रही व परीक्षा की हर कसौटी में सच्चे सोने समान खरी उतरी। एक दिन बाबा ने फरमान किया, '15 दिन कोई भी बाहर का व्यक्ति मकान के अंदर नहीं आ सकता है, सफाईकर्मी (जमादार) भी नहीं, गेट को ताला लगा दो, सब कुछ अपने हाथों से करना है। ड्राईवर भी नहीं आ सकता था। यज्ञ में एक बड़ी बस थी, बाबा बोले, 'बस की सफाई भी तुम्हें करनी है, तो दादी ने कुछ बहनों के साथ मिलकर, बस के नीचे जाकर सफाई की।

निश्चय का कमाल

भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद दादी बाबा संग आबू आई। तब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय आर्थिक मंदी (बेगरी पार्ट) के दौर से गुजर रहा था किंतु बाबा ने महसूस ही नहीं होने दिया। बाबा पांडव भवन से गुरुशिखर (पीस पार्क) तक पैदल लेकर जाते, युवावस्था में दादियां पहाड़ियां चढ़-चढ़ कर जाती और चेरी व कैरी खाकर खुश होकर लौटती, बाबा साथ थे तो बेगरी लाईफ होते भी खुश रहती। एक बार दादी व तीन अन्य बहनों को डायरिया हुआ, दादा विश्वकिशोर जी को पता चला, पर उनके पास सिर्फ एक आना ही बचा था, तो एक गोली लाये, बाबा ने उसके चार टुकड़े कर, चारों को पानी के साथ पिला दिया। सबके निश्चय का कमाल! डायरिया एकदम ठीक हो गया। ऐसे ही एक बार बाबा पांडव भवन से पैदल ही आबू रोड (शांतिवन) ले आये व रात्रि को एक स्कूल में सभी ने रेस्ट किया। सवेरे जागे तो बाबा बोले, 'सिर पर बड़े-बड़े पेठे लेकर, चलो आबू, कोई गिरा तो फेल! तो सभी सिर पर पेठा ले, ऊपर (आबू) पहुंचे, तब मम्मा ने बस स्टैंड पर आकर गुलाब जल डाल, स्वागत कर उत्साहवर्धन किया। बाबा-मम्मा संग बीते अतीद्रिंय सुख भरे दिन याद आते ही दादी फूले न समाती। वे भावविभोर हो दिल से गाने लगती, 'वो दिन भी कितने प्यारे थे, जब बाबा साथ हमारे थे।

ज्ञान-सागर को हप करने वाली ज्ञान-बुलबुल

चतुरसुजान बाबा ने दादियों को सेवार्थ भेजा, जिससे बाबा की मुरली के मस्ताने बच्चे ज्ञान में आने लगे। तब बाबा दादी को कहते, 'अन्य काम छोड़ो, 11 बजे तक मुरली लिखकर तुम्हें ही तैयार करनी है। तब दादी यह नहीं सोचती कि मैं कैसे कर पाऊंगी? बाबा लिखवा रहे हैं, इसी नशे व खुशी में, मुरली का एक अक्षर भी मिस न करते हुए, चार-चार पेज की मुरली लिखती, कॉपियाँ बनाती व समय पर मुरली पोस्ट करती। शुरू-शुरू में अव्यक्त बापदादा की पधरामणी में भी वे रात-रात भर जागकर मुरलियां लिखती थी। सचमुच ईशु दादी तो ज्ञान-सागर को हप करने वाली वो ज्ञान-बुलबुल थी, जिनकी करिश्माई कलम से लिखी मुरलियों की तान गोप-गोपियों को रिझाती रही, रिझा रही है।

बाबा की पर्सनल सेक्रेटरी

सेवाएं परवान चढ़ने लगी, तो बाबा पत्रों से मार्गदर्शन कर सभी में उमंग भरते। बाबा के हस्तों से सिंधी में लिखे पत्रों पर दादी हिंदी में एवं जो सिंधी पढ़ते, उनके पत्रों पर वे साफ सिंधी में लिखती। बाबा को कभी बांधेली गोपिकाओं के प्यार-पुकार के पत्र, कभी जीवन-कहानियों के खत या व्यक्तिगत

पुरुषार्थ के चार्ट, तो कभी सेवाक्षेत्र की समस्याओं के पत्र आते। उन सारे पत्रों को दादी पढ़ती, पत्रों से गोपनीय बातें व कर्मों का लेखा-जोखा जान, चित्रगुप्त बन दर्ज करती व बाबा को सुनाती, पर उनके मानस-पटल पर अंशमात्र भी छपता नहीं। जैसे गंगा सागर में अपना सब उड़ेल कर स्वच्छ हो जाती है, ऐसे ही दादी भी सारा समाचार शिवसागर में समा देती व निर्मल गंगा बन जाती। बाबा के लिखे जवाबी पत्रों पर हूबहू सिंधी या हिंदी लिखते हुए कभी-कभी उन्होंने एक घण्टे में 16-16 पत्र भी लिखे। बाबा जहां जाते, वहां उन्हें ले जाते व दादी को प्राईवेट या पर्सनल सेक्रेटरी कहते।

सादगी का सैम्पल

बाबा के अव्यक्त होने के बाद ईशु दादी, दीदी मनमोहिनी व दादी प्रकाशमणि के संग राइट हैंड रही। दीदी मनमोहिनी अपनी साड़ी प्रेस के लिये न देकर, उसे लपेट कर कुर्सी पर रखती और उस पर बैठ जाती, तो साड़ी प्रेस हो जाती। ऐसे ही क्वीन मदर (दीदी की लौकिक माँ) अमीर घर की होते भी पाई-पाई का हिसाब लिखती। क्वीन मदर व दीदी के संग में ईशु दादी इकोनॉमी करना सीखी। दीदी उन्हें सेवा पर साथ ले जाती, पहले दीदी बोलती फिर उन्हें बोलने का अवसर देती। प्रकाशमणि दादी से वे गंभीर रहना सीखी। बाबा कहते, सब कुछ अपने हाथ से करना है, किसी को आधार नहीं बनाना है अत: एक बाबा को आधार बनाकर वे सदा साधन-सुविधा से दूर रह, सादगी का सैम्पल बनी और साक्षीद्रष्टा बन, एकरस स्थिति से अचल-अडोल रहने की प्रेरणा देती रही।

सहनशक्ति की मूर्ति

बाबा-मम्मा, दीदी-दादी व मोहिनी दीदी-मुन्नी दीदी के संग ईशु दादी ऐसे रही जैसे जिस पात्र में पानी डालो, वह वैसा ही रूप धारण कर समा जाता है। परिस्थिति के अनुरूप ढलने वाली, 'मोल्ड सो रियल गोल्ड दादी 'सहनशक्ति की मूर्ति बन, संगठन में सर्व का साथ निभाती रही। वे हर संस्कार की आत्मा के साथ घुलमिल जाती व बातों को सागर सम विशाल हृदय में समाकर, व्यर्थ को सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगा देती। दादी तो परमात्म ज्ञान-भण्डार की संवर्धक व यज्ञ-भण्डारी की रक्षक थी। मधुबन में आते ही दादी के पास भंडारी देकर सभी निश्चिंत हो जाते। अंतिम दिनों से पूर्व वे बालसुमनों समान खिलखिलाकर हंसती-हंसाती व प्रसन्नता के पुष्प बिखेर देती। धीर-गंभीर होते भी रमणीकता व अंतर्मुखता का अद्भुत संतुलन साध अंतत: वे आध्यात्मिक साधना की पराकाष्ठा को छू गई। बाबा-मम्मा व दीदी-दादी की आज्ञाकारी ईशु दादी जी गंभीरता की प्रतिमूर्ति व ईमानदारी-वफादारी की साक्षात् देवी थी। ऐसी एकनामी-इकोनॉमी की अवतार, शांति की आदर्श मिसाल इशू दादी जी, सत्गुरुवार 6 मई, 2021 को बापदादा की गोद में समा गई व अग्रीम विश्व सेवा हेतु एडवांस पार्टी में चली गई, उन्हें हमारा शत् शत् नमन!



साकार बाबा सदा ही दादी की नज़रों में समाए रहते थे



बी.के. आनंद
ब्रह्माकुमारीज़, मनमोहिनीवन

जो संकल्प, ख्वाब में भी नहीं था परंतु ड्रामा की भावी! आख़िर बुला ही लिया अपनी परम प्यारी ईशु दादी जी को बाबा ने। जब समाचार मिला 6 मई, 2021 को तब मैं सोलार में था, मन द्रवित हो उठा, जैसे कि कुछ पल के लिए अशरीरी हो गया, सन्नाटा सा छा गया। बैठ गया बाबा के कमरे में। जानकी दादी, गुलजार दादी ने आखिर बुला ही लिया अपनी सखी ईशु दादी को भी। वर्तमान व नए विश्व की तैयारी में जरूरत होगी। वैराग्य के बादल छाने लगे। अव्यक्त होने के पहले, 11 अप्रैल को दादी जी ट्रोमा हॉस्पिटल से अहमदाबाद स्टर्लिंग हॉस्पिटल जा रहे थे किन्तु पता नहीं था कि यह आखिरी साकार मिलन है। तब अमृत भाई, वल्लभ भाई और हम थे। दादी को देख कर हम और हमें देख कर दादी जी रोमांचित हो उठे। हाथों से भाकी पहन रहे थे। दादी का वो अपनापन, कैसे बयां करें शब्दों में, दिल को पिघला देता है। नाक पर ऑक्सिजन लगाया हुआ था लेकिन आंखें, हाथ बहुत कुछ कह रहे थे। हमने तो उस मिलन में बहुत कुछ ले लिया। लास्ट तक एम्बुलेन्स के कोच को एक टिक निहारता रहा। दादी की ममतामई, करुणामई ऊर्जा ने पल भर वहाँ से नहीं हिलने दिया। असीम प्यार, शन्ति का मन में संचार हुआ। विदाई दी लेकिन पता नहीं था यह विदाई साकार में सदाकाल की होगी। साकार बाबा सदा ही दादी की नजरों में समाए रहता था। मुख से यही निकलता रहता था, बाबा ने ऐसे किया, ऐसे कहा। दादी जी से मिलना सहज और सरल था। दादी कॉटेज में कभी-कभी दादी को भोजन खिलाने का अवसर मिलता रहता था। एक ही सिम्पल डाइट रही। दादी जी का मेरा भाई कहना, हाथों से भाकी पहनना, हाथों को लहराना, सभी के दिलों को छू लेता था। दादी के साथ अहमदाबाद हॉस्पिटल जाने का चांस मिला। सेवा तो नाम मात्र रही। दादी जी के साथ के पल अविस्मरणिय रहे। साकार बाबा को नहीं देखा लेकिन इन आदिरत्नों का सानिध्य मिला। बड़ा ही सौभाग्यशाली हूँ। अव्यक्त हो यज्ञ को वाइब्रेशन दे अपनी उपस्थिति का एहसास करा रहे हो। धरती जैसा तेरा आंचल, तेरी ममता नील गगन, तेरी दुआ फल-फूल रही, आज भी खुशहाल चमन, तेरी यादों में दादी, आँखें नम हो जाती हैं। तुमको शत् शत् नमन दादी, तुमको शत् शत् नमन।।

दादी की स्नेहमयी दृष्टि, करुणामयी वृत्ति ने पल भर वहाँ से हिलने नहीं दिया



दादी जी की छवि एक अविस्मरणीय छवि है



बी.के. पूनम मोहनानी
नंदुरा (एमएस)

मैं ने पहली बार ईशु दादी जी को सन् 2007 में देखा था। दादी डायमंड हॉल के बाबा के कमरे के पास से गुजर रहे थे। मैं वहां खड़ी थी। दादी जी की नजर मेरी तरफ और मेरी तीन साल की बच्ची की तरफ गई। दादी जी करीब आए, दृष्टि दी, बच्ची को प्यार किया और चली गई। बाबा ने मुरली में बताया था कि यह दादी गुप्त पुरुषार्थी हैं। मैंने भी दादी जी के इस गुण को स्वयं में धारण करने का संकल्प किया। एक बार मधुबन में दादी जी के कॉटेज में, दादी जी के साथ मुझे जन्मदिन मनाने का भाग्य मिला। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानती हूं, वह दिन मेरे लिए बहुत बड़ा सरप्राइज था। आज भी दिल से निकलता है, शुक्रिया बाबा, शुक्रिया दादी जी, शुक्रिया कविता दीदी। उस जन्मदिन का सबसे बड़ा अनुभव यह रहा कि उस दिन के बाद जब भी मेरा जन्मदिन आया तो कभी किसी के प्रति यह चाहना नहीं रही कि कोई मुझे जन्मदिन की मुबारक दे। ऐसे बाबा ने मुझे भरपूर कर दिया क्योंकि जब परमात्मा जन्मदिन मनाता है तो उसमें सब आ जाता है। दादी ने जब मुझे यज्ञ का बैज पहनाया तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि दादी जी मुझे हीरा दे रही हैं। दादी जी ने कोरोना काल में भी हम बच्चों को अपनी प्यार भरी दृष्टि से भरपूर किया। ऐसी ममतामयी, करुणामयी प्यारी सी दादी जी को शत् शत् नमन और भावपूर्ण श्रद्धांजलि। दादी जी की अविस्मरणीय छवि को स्मरण करते हुए दिल से यही गीत निकलता है –

भोली सी सूरत, आंखें रूहानी।
दूर खड़ी मुस्कुराए, बाबा की झलक दिखाए।
कभी ब्रह्माबाबा सी बन जाए।
मेरी नजर से देखो, बापदादा सी नजर आए।

ईश्वर ने भी अपना बनाकर ईशु नाम दिया।
अपना राइट हैंड बनाकर जिम्मेवारी का ताज दिया।
उसकी वफ़ा से, उसके ईमान से,
बाबा भी कुर्बान जाए।

बाबा ने मुरलियों में कहा है - दादी जी एक गुप्त पुरुषार्थी हैं



दादी जी की प्यार भरी दृष्टि और टोली



बी.के. अरूणा
इस्लामपुर, महाराष्ट्र

सन् 1996 में ईशु दादी जी, बड़ी दादी के साथ कोल्हापुर सेवाकेंद्र की रजत जयन्ती समारोह में आये थे। उस समारोह में दादी जी सहित वरिष्ठ भाई-बहनों ने अपने वरदानी बोलों से भरपूर किया लेकिन ईशु दादी कुछ बोले नहीं तो मैंने हमारी दीदी से पूछा कि सभी ने अपने वरदानी बोलों से हमें भरपूर किया फिर ईशु दादी जी कुछ बोले क्यों नहीं! तो दीदी ने कहा कि वो बहुत शांत हैं, ज्यादा बोलते नहीं हैं। फिर मैं यज्ञ में समर्पित हुई और खुद जिम्मेवारी लेकर बाबा मिलन के लिए पार्टी लेकर आने लगी तो सेवार्थ दादी जी से मिलना होता था। उस वक्त दादी का प्यार से बोलना, दृष्टि देना, अपने हस्तों से वरदान और टोली देना, दिल को बहुत भा गया। तब से लेकर जब भी मधुबन आना हुआ तो सेवा अर्थ दादी के पास आते थे, दादी के सानिध्य में रूहानी प्यार, अपनापन, बाबा के साथ का अनुभव करते थे। एक बार की बात है, मैं और मेरे साथ वाली बहन दादी से मिलने गये। तब दादी जी यज्ञ के कारोबार से फ्री होकर बैठे थे। दादी जी के पास समय होने के कारण दादी जी ने व्यक्तिगत रूप से मुझे बहुत प्यार किया, अपनी गोद में लिया, अपने हाथों से टोली और प्यार भरी दृष्टि दी। साथ में फोटो भी खिंचवाई। दादी जी जब भी डायमंड डॉल या कॉन्फ्रेंस हॉल की स्टेज पर आते तो वातावरण में खुशी की लहर फैलती थी। उनकी मधुर वाणी से दिल में उमंग-उत्साह भर जाता था।

दादी जी के प्रति दिल के उद्गार -

भंडारी संभालने के लिए बाबा ने बनाया आपको अधिकारी।
ऐसी सेवा के लिए आप रहे सदैव ईमानदार और निरहंकारी।
बाबा और मुरली से आपका प्यार था बेमिसाल।
सादगी, सरलता, नम्रता के थे आप सुंदर मिसाल।
बाबा से थे आप पूरे वफादार। दृष्टि से लुटाते थे सब पर प्यार बेशुमार।
बाबा के वचनों को लिखने का किया आपने जतन।
आज भी हम सब करते हैं उनका श्रवण।।

दादी जी के डायमंड हॉल, कॉन्फ्रेंस हॉल में आने से वातावरण में खुशी की लहर फैलती थी



निर्माणचित्त और रमणीक मेरी दादी जी



बी.के. भूवी
गॉडली स्टूडेंट, मधुबन

मैं 10 वर्षीय, भूवी बहन, देहरादून से हूँ। मेरा बाबा से पहला पहला मिलन, 12 फरवरी 2018 को शिवजयन्ती के दिन हुआ और दूसरा बाबा मिलन 15 नवंबर 2018 को हुआ। इसी दिन मेरी दादी ईशु जी से पहली मुलाकात हुई। उस दिन जब मैं विश्व कल्याणी भवन से गुजर रही थी, तो एक भाई ने अंदर बुलाया कि आओ दादी जी से मिल लो तो मैं अंदर दादी जी से मिलने गई, फिर उस दिन मुझे आश्चर्य लगा कि इस यज्ञ में एक दादी ईशु जी भी हैं। नहीं तो मुझे लगता था कि यहाँ दादी जानकी जी, दादी रतनमोहिनी जी, यही दादियां है लेकिन उस दिन मुझे पता चला कि इस यज्ञ में दादी ईशु जी भी हैं उसके बाद मैं दादी का हाथ पकड़कर के दादी जी को उनके रूम तक ले जा रही थी तो चलते-चलते दादी थोड़ी देर विश्व कल्याणी भवन के बाबा रूम के पास रुकीं और दादी जी कह रहे थे, 'मेरा बाबा, मीठा बाबा, तुम कितने प्यारे हो 'फिर दादी ने मेरी ओर देखकर कहा, 'बाबा मैं भी ऐसे छोटी सी थी ना, जब तुम्हारे पास आई थी, देखो! आज यह भी आई है तुम्हारे पास। 'बाबा रूम में खड़े होकर उन्होंने ये कहा और उसके बाद मैं उनको रूम तक लेकर आई, फिर दादी जी ने मुझे अपने हाथों से पेठे की मिठाई खिलाई, उन्होंने देखा मेरे आगे के दोनों दांत टूटे थे, क्योंकि मैं 6 साल की थी, तो रमणीक दादी जी ने कहा, 'इनका दांत टूटा हुआ है, चलो! आ जाएगा अपने समय पर' फिर पेठा खाते हुए मैं आ गई और मैं बहुत खुश थी, दादी ईशु जी से मिलकर।

'यह तो मेरी सखी है। हम हैं बाबा के बच्चे।'

–दादी ईशु जी



फिर दूसरी मुलाकात हमारी दादी जी से लॉक डाउन के समय 14 जनवरी 2021 के दिन, मनमोहिनी वन के ग्लोबल ऑडिटोरियम में हुई। उस दिन मुझे दादी ईशु जी को गुलदस्ता देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ क्योंकि जब भी मैं दादियों का वीडियो देखती थी तो मैं देखती थी कि सभी बच्चे दादियों को गुलदस्ता देते हैं, तो मेरी भी दिल होती थी, कि मैं भी किन्ही दादी जी को गुलदस्ता दूँ। तो बाबा ने मेरी ये आश भी पूरी की। उस समय यहाँ पर 12 और 13 जनवरी को योग भट्टी हुई थी, तो मुरली क्लास के बाद देव भाईजी ने दादी जी को बताया कि यहां पर 2 दिन योग भट्टी हुई है तो दादी जी ने कहा कि जो भी योग भट्टी का अनुभव सुनाना चाहते हैं वह सुनाओ। तो मैंने सबसे पहले ऊँचा हाथ खड़ा किया कविता दीदी जी ने कहा, 'दादी यह है यह नीचे बैठी है, तो दादी जी ने ऐसे इशारा किया, 'आओ ऊपर आओ'। स्टेज पर आकर मैने अपना अनुभव सुनाया। दादी जी इतनी निर्माणचित्त थीं कि दादी जी ने मेरी महिमा कर दी कि, 'भले है छोटी! परंतु मेरे से भी बड़ी है, बहुत बहुत अच्छी, इतनी छोटी! मैं तो इतनी बड़ी हूँ, पर मेरे से भी अच्छा। 'उस दिन मुझे बहुत ही अच्छा लगा। दूसरी बार जब दादी जी मनमोहिनी वन में आने वाले थे, तो उस समय हमने दादी जी को देने वाला गुलदस्ता भी बनाया था। इस बार भी दादी जी को गुलदस्ता देने का अवसर मुझे ही मिला और गुलदस्ते में गुलाब के फूल और बुगंबेलिया के फूल थे। फिर उस समय मैं बैकस्टेज में दादी जी का इंतजार कर रही थी और जैसे ही दादी जी आए दादी जी ने मुझे प्यार किया और कहा, 'यह तो मेरी सखी है, हम हैं बाबा के बच्चे।'

उसके बाद दादी जी के अव्यक्त होने के बाद रक्षाबंधन का हमारा अनोखा अनुभव है। 22 अगस्त 2021 के दिन हमने मुरली क्लास के बाद प्रातः 8:00 बजे, गॉडली गिफ्ट से किताबें ली और 10:00 बजे से 12:00 बजे तक के प्रोग्राम में भी हम किताबों को साथ में लेकर गए। फिर प्रोग्राम के बाद, हम ब्रह्मा भोजन करने गए और बुक्स डायमंड हॉल में छूट गई। फिर ब्रह्मा भोजन के बाद हम बुक्स लेने वापिस डायमंड हॉल गए, तो वहां एक भाई ने कहा, टोली पैकिंग की सेवा करने कॉन्फ्रेंस हॉल के पीछे आ जाओ। हम वहाँ गए तो पुणे की एक बहन मिली। उससे हमने बात की। उसके बाद 25 अगस्त 2021 दादी प्रकाशमणि जी की, चौदवीं पुण्यतिथि के दिन, उसी बहन का फोन आया, कि आपको एक सेवा आई है, मीडिया से आप आ जाओ। हम गए तो हमने सुना कि दादी ईशु जी की फिल्म 'विजय माला' में दादी ईशु जी का रोल करना है। तो मैं बहुत खुश हुई और मुझे ऐसे अनुभव हुआ कि जैसे वतन से बड़ी दादी (दादी प्रकाशमणि जी) और दादी ईशु जी, मुझे देख कर खुश हैं। उसके बाद सितंबर के महीने में हम 'विजय माला' बायोपिक की शूटिंग करने हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में गए और वहां साकार

पालना लिए हुए शीला दीदी जी थे। उन्होंने हमें बहुत ही अच्छे से रखा और वहां की बहने भी बहुत अच्छी थी। उस फिल्म में एक सीन था, जिसमें ब्रह्मा बाबा ने कहा कि, 'हम सभी यहां तपस्या करने आए हैं और हमारी योग, तपस्या में यह कीमती वस्तुएं बाधा ना बने, इसलिए इन कीमती वस्तुओं को यज्ञ में स्वाहा कर दो। 'तो सभी ने अपनी अपनी कीमती वस्तुएं वहां स्वाहा अर्थात बाबा के आगे रख दी। तो बाबा ने एक घड़ी सभी को दिखाते हुए कहा कि 'यह घड़ी मैं ईशु बच्ची को देता हूं। मैं ईशु बच्ची से कभी भी टाइम पूछ लूंगा। तो उस दिन मुझे दादी ईशु जी की पहनी हुई घड़ी पहनने को भी मिली और जैसे ही मैंने घड़ी पहनी मुझे करंट सा लगा, जैसे जब साकार बाबा ने दादी को घड़ी पहनाई होगी तो वही वाइब्रेशंन मुझे भी फील हुए। फिर 31 दिसंबर को डायमंड हॉल में बाबा मिलन के दिन दादी रतन मोहिनी जी के द्वारा, दादी ईशु जी की फिल्म रिलीज हुई और मुझे उस स्टेज पर जहाँ हजारों बार स्वयं भगवान निराकार शिव का अवतरण हुआ है, वहां खड़े होने का शुभ अवसर मिला। उसी हॉल में 1 जनवरी 2022 नव वर्ष के दिन, दादी जी की फिल्म बड़ी स्क्रीन पर दिखाई गई और मैंने भी डायमंड हॉल में बैठकर अन्य वरिष्ठ भाई बहनों के साथ 'विजय माला' देखी और मैं इतनी खुश हुई, इतनी खुश हुई की बात मत पूछो। मैंने मन में सोचा कि, गुप्तरतन दादी ईशु जी को प्रत्यक्ष करने में मैंने भी सहयोग की ऊंगली लगा दी। वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! वाह दादी ईशु जी वाह! और एक बात, आप ड्रामा की रील देखो 1 जनवरी 2022 के दिन हिमाचल प्रदेश से सभी बहने आई थी और देहरादून जहां से हमने ज्ञान लिया, वहां से भी बड़ी बहने आई थीं।

1 मार्च 2022 शिवरात्रि के दिन मैं मंडी की बहनों के साथ अव्यक्त फ़रिश्ता दादी जी से मिलने गई तो दादी जी ने कविता दीदी द्वारा मुझे अंगूठी पहनाई और टोली दिलखुश मिठाई खिलाई। ऐसे हर रोज हर एक आत्मा को उनकी अंगूठी और टोली मिलती है ।

5 मार्च 2022 के दिन मैं फिर से दादी जी से मिलने विश्व कल्याणी भवन गई तो दादी जी ने कविता दीदी के द्वारा मुझे दिलखुश मिठाई खिलाई और बैज भी पहनाया और उसी दिन मुझे दादी ईशु जी की किताब में अपना अनुभव लिखने का शुभ अवसर मिला। इस सेवा के लिए मैं बाबा को और दादी जी को बहुत-बहुत थैंक्स देती हूं। 6 मार्च को दादी जी के निमित्त भोग भी मुझे मिला।

दादी ईशु ज़ी का मनपसंद गीत



कराची में ॐ मंडली के समय का एक गीत जो दादी ईशु जी का मनपसंद गीत हुआ करता था ....

नवल नवेली न्यारी, हम कंवारी ब्रह्मचारी
बचपन अलबेली न्यारी, हम कंवारी ब्रह्मचारी ।।
काम नहीं, कोई क्रोध नहीं, हम सरल-सहज मतवारी
लोभ नहीं, कोई मोह नहीं, हम सो, सो हम गतवारी ।।
ब्रह्मा-ज्ञान की नित्त ही बोली बोलें
विज्ञानी बन, ज्ञान अविनाशी खोलें ।।
हम गोकुल की अनुसुइया, अम्मी तुम पिंजरे की मैना
हम मधुबन की गोपियां,फंसी तुम भूषण और गहना।।
गहना, गहना, गहना।।
तुम पिंजरे की मैना ॥

दादी जी के संग विभिन्न त्यौहार मनाने का उमंग



राखी

राखी पर्व का दिन आते ही दादी जी में खूब उमंग-उत्साह देखने को मिलता था। विभिन्न जगहों से बड़ी दीदियां, छोटी बहनें दादी जी को विभिन्न तरह की राखियां बांधने बहुत स्नेह से आती थी। दादी जी बहुत खुशी से राखियां बंधवाते थे। दादी जी के दोनों हाथ सुंदर-सुंदर राखियों से सज जाते थे। फिर दादी जी भी उन्हें बहुत खुशी-प्यार से दृष्टि देते हुए राखी बांधते थे जिससे उन्हें भी बाबा के प्यार की अनुभूति होती थी। मीठी टोली के साथ वरदानी कार्ड भी देते थे और पक्का कराते थे कि हमेशा बाबा जो कहे, हमें समर्पित बुद्धि बन उनकी श्रीमत पर चलना है।



श्री कृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी आते ही दादी जी को बहुत उमंग-उत्साह, खुशी की खुमारी छा जाती थी और दादी साकार के समय की मनमोहक यादों में खो जाते थे। जब हम पूछते थे, दादी जी, आप कहां खो गए हो, तो दादी जी कहती कि हमारा बाबा मिचनू कृष्ण के रूप में फिर से आएगा, फिर हम सब गोपियां श्री कृष्ण के साथ रास करेंगे। जब दादी जी ऐसी रमणीक बातें बताते थे तो हमें संकल्प आता था कि दादी जी के आगे बाबा थे लेकिन हमारे आगे स्वयं दादी जी हैं तो क्यों ना दादी जी का हम श्री कृष्ण के स्वरूप का श्रृंगार करें। हर वर्ष हम दादी जी को जन्माष्टमी के दिन नुमाशाम को श्री कृष्ण के स्वरूप में श्रृंगार करते थे। दादी जी के आगे सभी भाई-बहनें रास करते थे। दादी जी भी इस रमणीक दृश्य का आनंद लेते थे। फिर दादी जी अपने वरदानी हाथों से वैरायटी टोली के साथ विशेष माखन-सेव भी खिलाते थे।

दीपावली

दीपावली का पावन पर्व हमें यज्ञ का इतिहास याद दिलाता है। हमारी सर्व दादियों के अलौकिक जन्मदिन का उत्सव मनाया जाता है। दीपावली के उत्सव में हम सभी दादियों का बड़े ही प्यार से महालक्ष्मी के रूप में आह्वान करते हैं क्योंकि आज हम सभी ब्राह्मण बच्चों को सारी सुख-सुविधाएं इन सभी दादियों के त्याग-तपस्या के कारण ही प्राप्त हैं। तो दीपावली के पावन पर्व पर हम हमारी प्राण प्यारी दादी का महालक्ष्मी के रूप में श्रृंगार करते थे, फिर सभी उनका दीदार करते थे। दादी जी भी उमंग-उत्साह से हम सभी को वरदानी दृष्टि से सुखी व संपन्न बनाते थे। भविष्य आने वाली दुनिया का साक्षात्कार, देव रूप का साक्षात्कार अनेकानेक आत्माएं करती थी और अतींद्रिय सुख की अनुभूति करते थे। ईशु दादी जी यज्ञ की महालक्ष्मी थी। ऐसी दादी जी के कर-कमल और चरण-कमल के शुभचिन्ह लेने का शुभ अवसर दीवाली के दिन प्राप्त हुआ।







क्रिसमस

क्रिसमस का त्योहार सुंदर यादगार है सांताक्लॉज (ब्रह्माबाबा) का जो आते ही हर एक की शुभ भावनाओं को पूर्ण करते हैं। दादी जी को भी हम सांताक्लॉज के रूप में तैयार करते थे और दादी जी के वरदानी हाथों से सबको चॉकलेट व बधाई दिलवाते थे। दादी जी सबकी शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण करते थे, साथ में नववर्ष की बधाईयां भी देते थे।



ईशु दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा के वरदानी महावाक्य

(ब्रह्माबाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् वतन का सन्देश (1969)

शिवबाबा और अपना ब्रह्माबाबा दोनों आपस में बैठे थे और सामने जैसे एक छोटी पहाड़ी बनी हुई थी। वह किसकी थी ? क्या देखा कि ढेर के ढेर पत्र थे। इतने पत्र थे, इतने पत्र थे, जैसे कि पहाड़ियां बन गई थी। जैसे ही हम पहुंची तो ब्रह्माबाबा ने हमको देखा और कहा कि ईशु कहाँ है। इतने पत्र हो गये हैं। मैंने कहा, बाबा, मैं आई हूँ। कहा, ईशु बच्ची को भी साथ लाई हो ना! देखना, ईशु बच्ची, मैं दो मिनट में इतने सारे पत्र पूरे कर देता हूँ। शिव बाबा तो साक्षी होकर मुस्कुरा रहे थे। इतने में देखा कि ईशु बहन भी वहाँ इमर्ज हो गई। ईशु का चेहरा बिल्कुल ही शान्त था। बाबा ने कहा, बच्ची क्या सोच रही हो ? आज तो पत्र का जवाब देना है। उसी समय जैसे साकार वतन का संस्कार पूर्ण रीति इमर्ज था। मम्मा खड़ी होकर देख रही थी।

अच्छा, पोस्ट वाली ईशु कहाँ है ? इसके पास पोस्ट आती है। तो एक मास के बाद कोई ऐसी झमेले की पोस्ट नहीं आनी चाहिये। अगर आवे तो आप बापदादा को बताना। ठीक है ना। पक्का काम करना चाहिये। इनको पहचानते हो ना। इससे सबका काम पड़ता है। भविष्य बनाने के निमित्त तो रखा हुआ है ना! सभी जमा यहीं आ करके करते हैं।

(ईशु बहन से 7-11-95)

इसने आदि से अब तक बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। और आपकी (दादी की) तो विशेष सहयोगी है। कोई भी बात में सुनने-सुनाने वाली बहुत अच्छी है क्योंकि गम्भीर रहती है। ये गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। कोई भी बात बोल दी ना, समझो अच्छा किया और बोल दिया तो आधा खत्म हो जाता है, आधा फल खत्म हो गया, आधा जमा हो गया। और जो गम्भीर होता है उसका फुल जमा होता है। कहते हैं ना-देखो जगदम्बा गम्भीर रही, चाहे सेवा स्थूल में आप लोगों से कम की, आप लोग ज्यादा कर रहे हो लेकिन ये गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। कट नहीं हुआ है।

कई करते बहुत हैं लेकिन आधा, पौना कट हो जाता है। करते हैं, कोई बात हुई तो पूरा कट हो जाता है या थोड़ी बात भी हुई तो पौना कट हो जाता है। ऐसे ही अपना वर्णन किया तो आधा कट हो जाता है। बाकी बचा क्या? तो जब जगदम्बा की विशेषता जमा का खाता ज्यादा है। गम्भीरता की देवी है। ऐसे और सभी को गम्भीर होना चाहिए, चाहे मधुबन में रहते हैं, चाहे सेवाकेन्द्र में रहते हैं लेकिन बापदादा सभी को कहते हैं कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती हैं। चाहे अच्छा वर्णन करते हो, चाहे बुरा। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है। तो हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है। अभी बोलने की आदत बहुत हो गई है क्योंकि भाषण करते हैं ना तो जो भी आयेगा वो बोल देंगे। लेकिन प्रभाव जितना गम्भीरता का पड़ता है इतना वाणी का नहीं पड़ता। दादी ने सन्देश भेजा कि अभी सभी सेन्टर्स निर्विघ्न हो जाएं उसकी रेसपॉन्सिबुल टीचर्स हैं। अभी तक टीचर्स की कम्पलेन्स आती हैं। दादियों के पास वह फाइल है ना। ऑफिस वाली ईशु कहती है, सेन्टर्स से इतने फालतू लेटर्स आते हैं जो किचड़े का डिब्बा भर जाता है। ऐसे है ना? यह पढ़ने में भी टाइम लगता, फिर फाड़ने में भी टाइम लगता, फिर बाक्स में डालने में भी टाइम लगता, तो यह मेहनत फालतू हो गई ना इसलिए बापदादा की शुभ भावना है कि सभी टीचर्स बाप के राइट हैण्ड्स हैं, लेफ्ट हैण्ड नहीं हैं, राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्ड्स के स्थान से, सेन्टर्स से ऐसे समाचार आवें जो वेस्ट बॉक्स ही भर जावे - तो ऐसा अच्छा है? बोलो हाँ या ना? जो समझते हैं इस वर्ष हम हर एक तीन सर्टीफिकेट लेंगे - स्व विघ्न-विनाशक, सेन्टर विघ्न-विनाशक और साथी विघ्न-विनाशक, वह हाथ उठायें।

तो अभी वेस्ट पेपर बाक्स खाली रहेंगे। पढ़ना नहीं पड़ेगा। यह (ईशु) कहती है, लेटर्स खोल-खोल कर हाथ थक जाता है, इसीलिए चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे विदेश में सुन रहे हैं, चाहे देश में सुन रहे हैं, चाहे मुरली सुनेंगे। लेकिन बापदादा की सारे विश्व की निमित्त टीचर्स के प्रति यह शुभ भावना है कि यह वर्ष कोई कम्पलेन्ट नहीं आनी चाहिए। कम्पलेन्ट के फाइल खत्म हो जाएं। बापदादा के पास भी बहुत फाइल हैं। तो इस वर्ष कम्पलेन की फाइल खत्म। सब फाइन बन जाएं। फाइन से भी रिफाइन। पसन्द है ना?

ईशु दादी 18-1-2003:-

इसने भी हिसाब चुक्तू कर लिया। कोई बात नहीं। इसका सहज पुरुषार्थ, सहज हिसाब चुक्तू। सहज ही हो गया, सोते-सोते। आराम मिला विष्णु के मुआफिक। अच्छा। फिर भी साकार से अभी तक यज्ञरक्षक बने हैं। तो यज्ञरक्षक बनने की दुआयें बहुत होती हैं।

सभी दादियां बापदादा के बहुत-बहुत समीप हैं। समीप रत्न हैं और सबको दादियों का मूल्य है। संगठन भी अच्छा है। आप दादियों के संगठन ने इतने वर्ष यज्ञ की रक्षा की है और करते रहेंगे। यह एकता सभी सफलता का आधार है। (बाबा बीच में है) बाप को बीच में रखा है, यह अटेन्शन बहुत

अच्छा दिया है। अच्छा। सभी ठीक हैं।
(ईशु दादी से) यह गुप्त रहती है लेकिन वायब्रेशन अच्छा बनाती है।
(ईशु दादी से) साथ निभाने में नम्बरवन हैं।

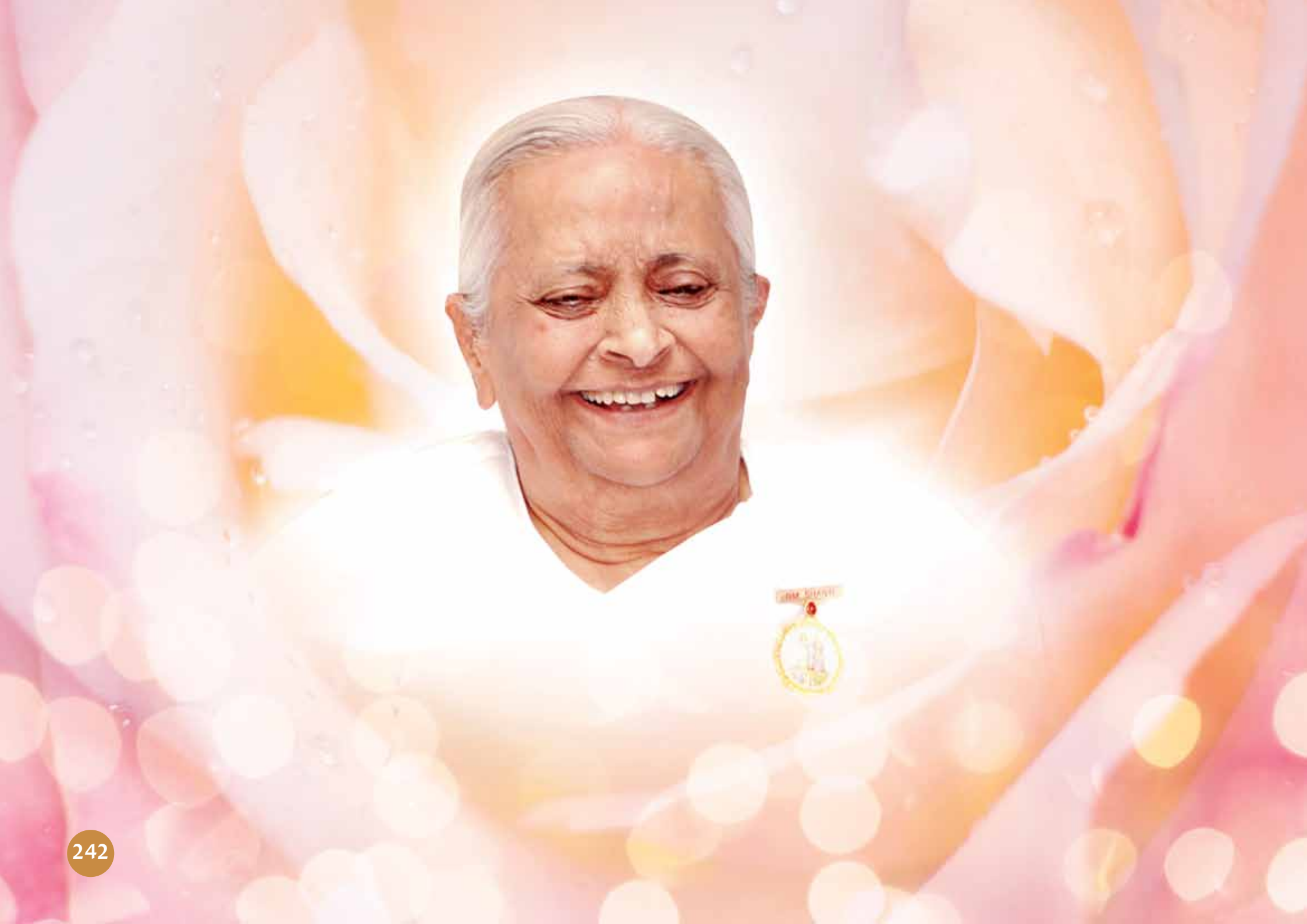
ईशु दादी से 3-3-07 :

(बापदादा को दादी की तबियत का समाचार सुनाया)
अभी वहाँ (हॉस्पिटल में भी) प्रोग्राम बनाना, जो भी कमरे में बैठो या बाहर भी बैठो वहाँ और कोई बात नहीं। ऐसा वायुमण्डल बनाना जैसे वह लोग साधनों द्वारा कमरे का वायुमण्डल बनाते हैं ना, तो वहाँ बिल्कुल ऐसा शक्तिशाली वायुमण्डल हो, जो आवे वह सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव करे। इससे यह दवाई शक्तिशाली है (कुछ दिन तबियत ठीक रहती है, फिर कुछ न कुछ नीचे ऊपर हो जाता है)। अभी तो खेल चल रहा है ना, अभी यह वायुमण्डल, दवाई और दुआ दोनों साथ-साथ हो (चारों ओर सेन्टरों में भी योग चल रहा है)। सब तरफ विशेष योग में बैठें या बिजी भी हों लेकिन लक्ष्य वह हो। समझें हमको यह सेवा करनी है। प्यार का रिटर्न तो यही है। ईशु दादी से – यह ठीक है! मौज में उड़ रही है। ईशु दादी से – यह भी साथी है।

ईशु दादी से :- 3-4-11

आप तो शुरू से बाप के राज़ों को जानने वाली साकार बाबा के साथ में रह समझ गई हो लेकिन गुप्त रहती हो। गुप्त रहना भी ठीक है लेकिन कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप में भी आओ। अच्छा। (ईशु दादी से)
यह तो गुप्त यज्ञरक्षक है। लेकिन बहुत अच्छा राजयुक्त होके जो भी कार्य कर रही हो, बापदादा खुश है। अच्छा है।

ईशु दादी से 12-2-16 :- (तबियत ठीक नहीं है) घबराना नहीं, घबराने से और ही हो जाता है।
जिसके लिए सोचते हैं वह ज्यादा हो जाता है, इसलिए यही सोचो जैसे दवाई हो गई है। बाबा को याद किया, बीमारी की गोली एक बारी ले ली बस। भले जो दवाई है ना, उसको जिस समय लो उस समय समझो यह दवाई हमारे काम में आई। भले धीरे-धीरे आयेगी लेकिन आपको फर्क महसूस होगा, बस। और सभी को पता है कि इनकी तबियत खराब है तो सभी का ध्यान आप में जायेगा।
ईशु दादी की याद दी, वह अभी अहमदाबाद में चेकिंग के लिए गई हैं:-**(7-3-16)**
बीच-बीच में इसको थोड़ा होता है, लम्बा नहीं चलता है। ठीक हो जाता है।



न्यूयॉर्क में मोहिनी दीदी जी द्वारा ईशु दादी जी के प्रति लगाया गया भोग का दिव्य संदेश

07-05-2021

बाबा के पास ईशु दादी के अर्थ वतन में भोग लेकर गई तो दादी जी बहुत विश्राम में थी। मैंने कहा, सारे परिवार ने यादप्यार और भोग भेजा है। तो बाबा ने खुद भी भोग स्वीकार किया और दादी जी को भी स्वीकार कराया। बाबा ने कहा, अभी दादी जी बहुत गहरे विश्राम में, साइलेन्स में हैं क्योंकि अभी नये पार्ट की तैयारी कर रही हैं। यज्ञ में इनका शुरू से लेकर बहुत महत्वपूर्ण पार्ट था। अब यज्ञ की समाप्ति होनी है तो उनका पार्ट भी पूरा हुआ। बाबा ने कहा, यह तो स्नेह की मूर्ति थी, साथ ही सबको सम्मान बहुत देती थी और उनके दिल में बाबा के प्रति, सभी के प्रति न केवल धन्यवाद की भावना थी, सबके लिए सम्मान भी था।

08-05-2021

बाबा के सामने भोग रखा और बाबा को कहा, ईशु दादी के प्रति परिवार की तरफ से भोग लाये हैं। मैंने कविता बहन और सभी की याद दी तो बाबा मुस्कुराने लगे। ईशु दादी तो बाबा की बहुत प्रिय समीप रत्न थी। बाबा ने दादी जी को कहा, आपके लिए याद-प्यार और भोग आया है। बाबा ने दादी जी को भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने दादी के साथ तथा परिवार के साथ दृष्टि की लेन-देन की। फिर बाबा ने कहा, अब आप सबको फरिश्ते की ड्रेस पहननी पड़ेगी क्योंकि अभी सभी में भय है, चिन्ता है, वह आप सब पर प्रभाव नहीं डाले, इसके लिए यह ड्रेस पहनकर ही हरेक की बात सुनो। इससे आप सभी सेफ रहेंगे और औरों को भी बचा सकेंगे। ऑक्सीजन तो मनमनाभव की है, इससे आपको खुद भी ऑक्सीजन मिलेगी, इससे श्वासों-श्वास की स्मृति से अपने में और औरों में भी शक्ति भरो। बाबा ने कहा, बच्ची में बहुत विशेषतायें थी लेकिन बच्ची को किसी भी बात का अहंकार नहीं था। बाबा ने उनकी हर विशेषता को बेहद में यूज़ किया। वह जब से बाबा की बनी तब से, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक परिवार में, उनका बुद्धियोग किसी भी मनुष्यात्मा के प्रति नहीं गया। बुद्धि फ्री थी, बुद्धियोग केवल बाबा के प्रति था। बाबा जिसकी विशेषता प्रयोग करते हैं वो औरों को प्रेरणा भी देते हैं और खुद भी बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्नचित्त रहते हैं। दादी एक उदाहरण थी - प्रसन्नचित्त और सन्तुष्टता की। बाबा ने दादी से कहा, किसी को कुछ कहना है। तो दादी ने कहा, मेरे को यज्ञ से, बेहद के

परिवार से बहुत स्नेह मिला है। मैंने कहा अपने साथियों को कुछ कहना है। तो दादी ने कहा कि उनको कहना, आप लोगों ने मेरे जीवन से जैसे देखा, मैं सदा सन्तुष्ट रहती थी, हर्षित रहती थी, आप सभी भी वही करो, मुझ आत्मा को याद नहीं करो, एक बाबा को याद करो। जो आप लोगों ने अपनी आंखों से देखा उसे जीवन में धारण करो। ऐसे कहते हुए बाबा ने सभी को याद दी और मैं नीचे आ गई।

09-05-2021

सबका यादप्यार और भोग लेकर वतन में गये। बाबा ने सबको स्नेह भरी दृष्टि दी। आज मदर डे है तो बाबा हम सबकी माँ है। बाबा को भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा, ईशु दादी जी के लिए भोग है तो बाबा ने ईशु दादी को भी भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने कहा, देखो, जितना ही दादी जी में हल्कापन था उतनी ही गम्भीरता भी थी क्योंकि ऐसे गुण जिस आत्मा में होते हैं, तो अनेकों को प्रेरणा मिलती है। बाबा ने ईशु दादी को स्नेह भरी दृष्टि दी और दादी जी ने भी सभी को दृष्टि से याद-प्यार दिया।

10-05-2021

सभी की याद-प्यार लेते भोग लगाने के निमित्त जब वतन में पहुंचे तो बाबा ने दृष्टि से मुलाकात की। फिर मैंने कहा, ईशु दादी, आपके लिए भोग लाये हैं। बाबा ने ईशु दादी को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा, संगमयुग पर भोग लगाते हैं, उसकी यादगार भक्तिमार्ग में भी चलती है। जो परिवार के पूर्वज हैं, उनको तो भोग लगाना ही है, उनसे भक्तिमार्ग में मनोकामना भी रखते हैं। यहाँ तो बच्चे कोई कामना नहीं रखते। एक-एक बच्चे को बाबा ने मूर्ति बनाया है। सभी भिन्न हैं परन्तु अगर यह ख्याल हो कि भगवान ने हमें बनाया है, तो उस विशेषता के आधार पर फिर महिमा योग्य भी बनते और पूज्यनीय भी बनते हैं। ईशु दादी बहुत विश्वासपात्र थी। भगवान का खजाना संभालना, उसमें उनकी 100 प्रतिशत ईमानदारी में कमी नहीं थी। ईमानदारी में अगर मैं और मेरा भी आ जाता है, तो वो 100 प्रतिशत नहीं है। भगवान ने खुद मूर्ति बनाई, भगवान का खजाना सम्भालने के लिए, तो वो पूरे परिवार की विश्वासपात्र थी। वो सम्बन्ध-सम्पर्क में भी बहुत ईमानदार थी। तो आप सभी भी अपनी विशेषताओं को देखो कि जो बाबा ने गिफ्ट दी है उसे मुझे यज्ञ में सफल करना है। यह अटेन्शन रखने से स्वमान भी बढ़ेगा और सम्मान भी मिलेगा। सभी एक दूसरे को भी इसी दृष्टि से देखो, एक-एक को ईश्वरीय कार्य अर्थ बाबा ने बनाया है और बना रहा है। ईशु दादी तो सुन करके बहुत मुस्कुरा रही थी। बाबा ने सभी के लिए बहुत याद-प्यार दी, जो भी भोग बनाते हैं, लगाते हैं, सभी को बहुत-बहुत याद दी।

11-05-2021

बाबा की याद में भोग लगाने के लिए बाबा के पास पहुंची। बाबा ने बहुत दिल से दृष्टि द्वारा स्वागत किया। मैंने कहा, ईशु दादी के निमित्त भोग लाये हैं। तो बाबा ने भोग स्वीकार किया, ईशु दादी को भी भोग स्वीकार

कराया। बाबा ने ईशु दादी को कहा, आपने सबके दिल को जीता हुआ है, सभी आपको दिल से प्यार करते हैं। दादी जी मुस्कुरा रही थी। फिर बाबा ने कहा, देखो, बाबा ज्ञान देते हैं, ज्ञान समझ है परन्तु योग तो आप लोगों को ही करना होगा। जितना ज्ञान की समझ से कदम उठायेंगे, उतना बाबा की तरफ से आप सबको शक्ति मिलती रहेगी। बाबा ने कहा, देखो, जितना अच्छा योग होता है, उतना हल्कापन रहता है। बाबा ने कहा, देखो, ईशु दादी पवित्र थी, कन्या थी, बहुत पवित्र जीवन रही लेकिन पवित्रता के साथ-साथ उनमें बहुत ज्यादा दिल की सच्चाई और सफाई थी। हरेक के प्रति उनमें बहुत प्रेम था। बाबा के भण्डारे में कोई कम-ज्यादा देता है तो उसे देखकर उनकी भावना में परिवर्तन कभी नहीं देखा। ईशु दादी सच्चे दिल से सबको प्यार करती थी। कभी भी किसी भी कारण से दादी जी ने अपनी सच्चाई नहीं छोड़ी। योगयुक्त तो थी पर साथ में युक्तियुक्त भी थी। बाबा ने ईशु दादी को कहा, आपको कुछ कहना है। तो दादी कहती है, आपने सब कुछ कह दिया। फिर दादी ने कहा, मेरे सेवासाथियों को कहना, आप सब निश्चिन्त रहो, समय होता है, पार्ट पूरा होता है, तो आत्मा को अपना पार्ट बजाने जाना होता है। खुद को ईश्वरीय सेवा में बिजी रखो। ऐसे कहते दादी ने याद-प्यार दिया।

12-05-2021

बाबा के पास भोग लगाने के लिए पहुंची, बाबा ने दृष्टि द्वारा स्वागत भी किया और मुलाकात भी की। मैंने कहा, आपके लिए और दादी जी के लिए भोग लाई हूँ। बाबा ने भोग स्वीकार किया और दादी को भी भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा, आज जगदीश भाई का भी दिन है, तो बाबा ने जगदीश भाई को इमर्ज करके याद-प्यार और भोग स्वीकार कराया। फिर सभी आपस में नयन मुलाकात कर रहे थे।

बाबा ने कहा, देखो, संगमयुग में आपको हरेक प्रकार की समझ है, आप समझ के आधार पर जो चाहे कर सकते हो। आत्मा में किसी भी प्रकार की खाद है, तो योगाग्नि को सदा प्रज्वलित रखो। ऐसा तो नहीं होता है कि अग्नि जलायेंगे, फिर-फिर बुझायेंगे, फिर जलायेंगे। जिनको यह याद रहता है कि अग्नि प्रज्वलित है वो समय प्रति समय अग्नि से खाद मिटाते हैं। बाबा ने कहा, यह यज्ञ रचा है, यह भी एक अग्नि है, वो किसलिए है? इसमें जो भी स्वाहा करना है, जो सफल करना है, वो भी यज्ञ के द्वारा ही होता है। अगर आत्मा की खाद मिटती जाये और सबकुछ सफल होता जाये, तो आत्मा तीव्रता से सम्पूर्णता की तरफ बढ़ सकती है।

बाबा ने कहा, ईशु दादी की एक विशेषता थी कि वह निरन्तर एकरस रही, अखण्ड निश्चय रहा। बाबा से प्यार एकदम अखण्ड रहा। कभी भी, कहीं भी, किसी प्रकार से खण्डित नहीं हुआ। हर चीज अखण्ड थी। इसी से दादी जी को लम्बा पार्ट बजाने को मिला। अब जो पार्ट है वो अलग तरह से चलेगा। बाबा ने कुछ बोला नहीं, बस कहा, अलग पार्ट चलेगा। उसके बाद बाबा ने कहा, हर मिनट जो भी सीन आती है, ड्रामा में परिस्थिति आती है परन्तु अगर बाबा की याद में होंगे, तो ड्रामा

की हर बात में कल्याण के अनुभवी बनेंगे। जितना अनुभवी बनेंगे, हर सीन को पास कर पास विद आनर बनेंगे तो सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त करते जायेंगे। ड्रामा को सदा कल्याणकारी समझो। कल्याणकारी युग में कल्याण-कल्याण करते आपका भी कल्याण होगा और आप दूसरों के लिए भी कल्याणकारी बनेंगे। ऐसे कहते बाबा ने बहुत-बहुत यादप्यार दी।

13-05-2021

बाबा को भोग स्वीकार कराया, बाबा ने सभी को दृष्टि दी। बाबा ने कहा, इस समय हरेक भगवान से शक्ति, स्वास्थ्य मांग रहे हैं। बाबा ने कहा, अपने निश्चयबुद्धि के बल से और दूसरा मन को शान्त रखने से स्वयं की आन्तरिक शक्ति और बाबा की मदद से परिस्थितयों को पार कर लेंगे। हरेक को इस समय घर और मंजिल का ठिकाना बताना बहुत जरूरी है। आत्मा ने कैसे शरीर छोड़ा, यह नहीं सोचना है लेकिन जब आत्मा एक शरीर छोड़ती है तो उसके श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ गुणों के आधार पर परिवार का प्यार अनुभव होता है। ईशु दादी के लिए बाबा ने कहा, उनका मन बहुत स्थिर था, इससे सदा ही बाबा से शक्ति लेती रही। बाबा ने सभी सेवाधारियों को याद-प्यार दी।

14-05-2021

बाबा के सामने पहुंची, नयन मुलाकात करते हुए सबकी यादप्यार दी। बाबा ने कहा, हर बच्चे को फरिश्ता बनना है लेकिन अगर किसी प्रकार का लगाव-झुकाव होगा तो संस्कार नीचे लेकर आयेगा। जितना-जितना देही अभिमानी स्थिति का अभ्यास करेंगे, उतना फरिश्ता स्थिति का अनुभव होगा। मैंने कहा, आपकी मदद से बनेंगे ना! तो बाबा ने कहा, स्थिति के अनुसार मदद मिलती है। जितना आप अभ्यास करके स्थिति बनायेंगे, उतना आपको बाबा लिफ्ट देगा।
मैंने कहा, ईशु दादी के प्रति भोग लाई हूँ। बाबा ने ईशु दादी को इमर्ज करके कहा, आपके प्रति भोग आया है। दादी जी बहुत ही सन्तुष्ट थी। बाबा ने कहा, देखो, कई साल की तपस्या के बाद आत्मा हर बात से उपराम हो जाती है। ईशु दादी जी शरीर से पार्ट बजा रही थी यज्ञ के प्रति, बाकी उपराम थी। आप सबको भी उपराम रहकर पार्ट बजाना है। ऐसे कहते हुए बाबा ने सबके लिए याद-प्यार दी और मुझे नीचे भेज दिया।

15-05-2021

बाबा को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने दृष्टि दी और कहा कि मेरा हरेक बच्चा स्पेशल है, जब से बाबा का बना तब से बाबा हरेक बच्चे की विशेषता को जानते हैं पर बच्चे अपनी विशेषताओं को जानने में समय लगा देते हैं और फिर उसी अनुसार पार्ट बजाते हैं। इसमें हरेक नम्बरवार होते हैं। बाबा के प्यारे और समीप वही रहते हैं जो अपनी विशेषताओं को पहचानते हैं। मैं बाबा की बांहें हूँ, मैं यह सेवा कर सकता हूँ, यह भी पहचान चाहिए। ईशु दादी ने अपनी विशेषताओं को

पहचान लिया था। अनेक तरह की परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपना पार्ट नहीं छोड़ा। मुरली नोट करना, यज्ञ का भण्डारा, पत्र-व्यवहार, जो भी जिम्मेवारी मिली वो उन्होंने अच्छी तरह से अथक होकर सम्भाली। जो अथक होकर सेवा करते हैं तो बाबा भी उनको मदद करते हैं।

16-05-2021

बाबा ने कहा, स्वयं के लिए और दूसरों के लिए सबसे बड़ा गुण स्नेह ही है। वर्तमान समय ईश्वरीय स्नेह, आत्मिक स्नेह में बहुत शक्ति है। वे स्वयं को भी शक्तिशाली रखते हैं और जिससे स्नेह होता है उसको भी शक्ति का अनुभव होता है इसलिए बच्चों को इस समय अपनी दृष्टि-वृत्ति और कर्म, स्नेह से भरपूर रखना है। स्नेह के साथ फीलिंग बहुत पवित्र रखो। जब प्रेम और पवित्रता दोनों गुण होते हैं तो हर प्रकार से पुरुषार्थ निर्विघ्न होता जाता है। यही भावना निरन्तर रखो। मैंने कहा, ईशु दादी के प्रति भोग है। तो बाबा ने कहा, देखो, इस आत्मा के दिल में बाबा के लिए निरन्तर प्यार था। जिसके दिल में बाबा के लिए प्रेम होता है, उससे दूसरों को भी प्रेम अनुभव होता है। वर्तमान समय बापदादा के साथ पूर्वज आत्माओं के प्रति भी दिल का सम्बन्ध हो, तो इससे भी बहुत दुआयें मिलेंगी।

17-05-2021

आज ऐसे लगा जैसे बाबा ही बुला रहे हैं। मैंने कहा, बाबा भोग लेके आई हूँ। बाबा ने सभी को बहुत प्रेम से दृष्टि दी। बाबा ने ईशु दादी को भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा, कभी-कभी ऐसे लगता है कि आप बुला लेते हैं, सहज लगता है। बाबा ने कहा, बाबा तो हमेशा आह्वान करते हैं, जितना-जितना आप लोग आत्मिक स्थिति में रहेंगे तो आपको एकदम खींच होंगी, बाबा वतन में बुला लेगा। बाबा हमेशा मदद देता है लेकिन आप लोग कभी-कभी मदद ले पाते हो। ऐसा समय आयेगा जो आप लोगों को इस साकार दुनिया में रहते अनुभव करना होगा कि हम यहाँ नहीं हैं। इसके लिए बहुत न्यारी स्थिति चाहिए, कहीं भी बुद्धि फंसी हुई न हो, यह कर्मबन्धन है। सेवा अर्थ बार-बार संकल्प आना, यह बन्धन बन जाता है। आप लोग कर्मयोगी हैं परन्तु बाबा की सेवा है, बाबा का यज्ञ है, बाबा ही करवा रहा है। अगर अन्दर यह स्मृति बन जायेगी तो हर कर्म न केवल श्रेष्ठ होगा बल्कि अनेकों को सुख देने वाला होगा और बन्धन भी नहीं बनेगा, भाग्य बनता रहेगा। ईशु दादी में न्यारापन बहुत था। सभी से न्यारी होने के कारण बाबा के समीप, यज्ञ के समीप और दादियों के साथ समीपता का सम्बन्ध रहा। फिर बाबा ने सभी के लिए यादप्यार दी।



18-5-21

सभी की यादप्यार लेते हुए बाबा के पास भोग लगाने के निमित्त पहुंची। सभी की बहुत-बहुत यादप्यार बाबा को दी। मैंने कहा, कोई आपसे शक्ति लेना चाहते हैं, कोई आशीर्वाद लेना चाहते हैं। मैंने कहा, ईशु दादी के लिए और अन्य आत्माओं के लिए भी भोग है। बाबा ने सभी को फरिश्ते रूप में भोग स्वीकार कराया। बाबा सभी को दृष्टि दे रहे थे। बाबा ने कहा, देखो, बाबा तो हाज़िर ही है, बाबा की मदद भी है लेकिन समय ऐसा आयेगा जो अपना जितना जमा किया होगा वो ही काम आयेगा। जब पार्ट बदलता है तो आपका जमा किया हुआ खजाना, शक्तियां, श्रेष्ठ कर्म, वही काम आते हैं। अभी समय एक तरफ तो बहुत नाजुक है पर महत्वपूर्ण भी है आप सब मन की शक्ति से, तन से श्रेष्ठ कर्म, धन से भी जो कुछ कर सकते हो वो करके जमा कर लो इसलिए नि:स्वार्थ भाव से, दया भाव से, सेवा भाव से हरेक चीज़ को सफल करते जमा करते जाओ।

इसके बाद बाबा ने कहा, देखो, ईशु दादी बचपन में जब से आई, बापदादा के साथ ही रही। संग में रहने से जो धारणायें हैं, गुण हैं वो तो बाप समान होते ही हैं। संग का रंग तो होता ही है। वो बहुत ही गुप्त थी लेकिन स्वयं में बापदादा के सभी गुण और शक्तियां भर ली थी। इस समय ईशु दादी का जाना, यह एक चैप्टर पूरा होता है लेकिन दूसरा खुलता है। सभी सोच रहे हैं कि बहुत बड़ा चैप्टर बंद हो रहा है। बाबा ने कहा, वो तो हो ही रहा है लेकिन दूसरा खुल रहा है। उस चैप्टर में आप सभी का पार्ट है इसलिए आप सभी किसी भी बात में निराश न होना, कभी भी ऐसे न सोचना कि अब क्या होगा। ड्रामा अनुसार जो हो रहा है, वो ठीक है लेकिन अब आप लोगों का पार्ट है ना। सभी बेहद में रह, बेहद का दिल, विशाल दिल रखो। यज्ञ के प्रति बहुत स्नेह की भावना रखो क्योंकि अब आप सबको मिलके यज्ञ को संभालना है, हर प्रकार के सहयोग से। परिवर्तन तो बड़ा है लेकिन उस बड़े परिवर्तन के बाद भी जो कुछ ड्रामा अनुसार होगा वो भी बहुत महत्वपूर्ण है, उसमें आप हरेक का पार्ट है। इसमें हरेक समझे, हरेक को यज्ञ की जिम्मेवारी लेनी है। हर प्रकार से बेहद की सेवा में तत्पर रह करके, न केवल अपना भाग्य बनाना है, परन्तु अच्छी तरह से सहयोगी रहना है। ईशु दादी गुप्त थी पर उनकी जो ड्यूटी थी, वो बहुत बड़ी ड्यूटी थी। शुरू से लेकर अभी तक यज्ञ की भण्डारी उनके हाथ में ही जाती थी। यह भी पार्ट पूरा हुआ। उसमें गुण भी थे, सच्चाई-सफाई भी थी। जब भावना होती है तो भावना अनुसार जब कोई निमित्त बनता है तो बरक्कत बहुत होती है। बाबा ईशु दादी को दृष्टि दे रहे थे। जो भी सेवासाथी थे, बाबा ने सबको बहुत याद दी।

ऐसी थी अपनी ईशु दादी

- बी.के. सत्यनारायण
ज्ञान सरोवर

खुश रहती थी, खुशी-खुशी से दान खुशी का करती थी।
मेरा भाई-बहन सदा कहकर सम्बोधन करती थी।
सिर पर हाथ सभी के रखकर भाकी भी पहनाती थी।
ऐसी मीठी न्यारी-प्यारी अपनी ईशु दादी थी।।

राइटहैंड रही बाबा की, निर्भय-निडर विचरती थी।
बात समाती अपने अन्दर, इधर-उधर नहीं करती थी।
आज्ञाकारी आप बाप को साथी सदा बनाती थी।
ऐसी मीठी न्यारी-प्यारी अपनी ईशु दादी थी।।

घड़ी मिली उपहार बाप से सबको आप दिखाती थी।
घड़ी किसी को मैं न देती, ये कहकर इठलाती थी।
सदा बाप की श्रीमत पर अपना हर कदम उठाती थी।
ऐसी मीठी न्यारी-प्यारी अपनी ईशु दादी थी।।

जिगरी प्यार रहा बाबा से, मधुबन में आवास रहा।
मधुबन में ऑफिस बाबा के कमरे के ही पास रहा।
जब भी करे इशारा बाबा, आप दौड़कर आती थी।
ऐसी मीठी न्यारी-प्यारी अपनी ईशु दादी थी।।

अधिक बोलना, समय गंवाना, दादी की पहचान नहीं।
मौन, स्मृति का लक्षण, ये दादी जी की शान रही।
परखशक्ति-एकाग्रता की धनी आप कहलाती थी।
ऐसी मीठी न्यारी-प्यारी अपनी ईशु दादी थी।।



ईश्वर की समीप साथी!!

बी.के. सतीश
मुख्यालय संयोजक ब्रह्माकुमारीज,
कला एवं संस्कृति प्रभाग, माउंट आबू

ओ प्यारी ईशु दादी
तेरी याद बहुत ही आती
ओ हमारी ईशु दादी
ओ प्यारी ईशु दादी....

ईमानदार कोई तुमसा
हमने कहीं न देखा
सच्चाई के साथ लिखा
सबके कर्मों का लेखा
तुमने लिखी ब्रह्मा संग में
सबके किस्मत की पाती
ओ प्यारी ईशु दादी
तेरी याद बहुत ही आती

तुम्हें मनी प्लांट थे कहते
वित्तीय व्यवस्था संभाली
चुप रही भले हो हलचल
सागर की तरह समा ली
तुम कितनी गुणी थी दादी
ये जुबां भी कह ना पाती
ओ प्यारी ईशु दादी
तेरी याद बहुत ही आती

तन से जाओ भले ही
यादों से ना जाओगी
ओ आदि रतन बाबा संग
हमको तुम याद आओगी
दोनों बाहें फैलाकर
अपनी खुशी दिखलाती
ओ प्यारी ईशु दादी
तेरी याद बहुत ही आती








" हमारे जैसा खुशनसीब
दुनिया में कोई नहीं, बाबा
मिला सब कुछ मिला"

